ॐ

छटा अध्याय

|| ॐ || दादा भगवान के श्री मुख से संक्षेप में

छटा अध्याय — हर एक अपना उद्धार अपने आप करे। वैराग्य से मन वश हो जाता है। वासुदेव सर्व है। हर चीज में भगवान देखो। योग भ्रष्ट जो ज्ञान सुनते हुए मर जाते हैं उनको दूसरे जन्म में योग युक्त होने का ज्ञान मिलता है।

|| ॐ ||

श्लोक सूची आत्म संयम योग

(कर्म योग और योगारूढ पुरुष लक्षण)

1) अग्नि का त्याग — संन्यास नहीं
2) संकल्प का त्याग = संन्यास
3). निष्काम कर्म से योगारूढ से सं० का अभाव
4). जब विषय भोग और कर्म में अनासक्त — तब सं० त्यागी योगारूढ

(आत्म उद्धार की प्रेरणा और भगवत्प्राप्त के लक्षण)

5). अपने से उद्धार, अपना मित्र अपना शत्रु
6). मन इंद्रिय, शरीर जीता हुआ — मित्र
" " " नहि जीता — शत्रु
7) सर्दी, गर्मी, दुःख सुख, मान अपमान में शान्त आत्मा में स्थित.
8) ज्ञान विज्ञान तृप्त — मट्टी सोना पत्थर बराबर.
9). सुहृद और पापियो में समान.
10). मन इंद्रिय वश, संग्रह रहित, एकान्त — परमात्मा में.

(विस्तार से ध्यान योग)

11). कुशा, मृगछाला, न ऊँचा न नीचा आसन
12). आसन बैठ — इंद्रियां वश — मन एकाग्र — अभ्यास
13). काया, सिर, सीधा, अचल, इधर उधर न देखे
14). ब्रह्मचारी, भय रहित, शान्त, सावधान, मेरे परायण
15). ऐसा योगी पराकाष्ठा रूप शान्ति प्राप्त.
16). न बहुत खाना - सोना, न कम — ऐसा सिद्ध होता

209

17) यथायोग्य आहार विहार, कर्म-चेष्टा, सोना-जागना = सिद्ध
18). अत्यन्त वश, प० मे स्थित, स्पृहा रहित = योग युक्त
19) वायु रहित स्थान में दीपक = परमात्मा ध्यान में योगी
20). योग अभ्यास - निरुद्ध चित्त - उपराम - प. का ध्यान - संतुष्ट
21) इं से अतीत - सूक्ष्म बुद्धि - अनन्त आनन्द - विचलित नहीं
22) प. लाभ प्राप्त - दूसरा लाभ नहीं - भारी दुःख से चलायमान नहीं
23) दुःख रूप संयोग रहित = योग
बिना उकताए, धैर्य, उत्साह, निश्चयपूर्वक
24) सं० का निःशेष त्याग, मन के द्वारा इ: को रोक.
25) क्रम² अभ्यास - उपरति - धैर्य से प० के सिवा कुछ चिन्तन नहीं
26). चंचल मन जिस² विषय मे विचरता - रोक कर बार² प. में लगा
27) मन शान्त, पाप रहित, रजो गु. शान्त - ऐसे ब्रह्म के साथ
योगी को आनन्द प्राप्त
28). पाप रहित योगी आ० को प० मे लगा परब्रह्म आनन्द प्राप्त
29). आ. को सब भूतों में और सब भूतों को आ. में कल्पित = समदर्शन
30) उसके लिए मैं अदृश्य नहीं और मेरे लिए वह अदृश्य नहीं
31) जो सब भूतों में मुझे भजता वह मुझ मे बरतता
32) अपनी भाँति सम, सुख दुःख सम - परम श्रेष्ठ.

(ध्यान योग (Cont.) / ध्यान योग निराकार)

33). चंचल मन - सम भाव की कैसे नित्य स्थिति ?
34). यह मन चंचल दृढ़, बलवान, वायु के जैसा अत्यन्त दुष्कर

(प्रश्न)

35) बेशक मन चंचल, कठिनता से वश - अभ्यास वैराग्य से वश.
36) मन वश नहीं योग नहीं
मन वश प्रयत्न शील - साधन सहज.

(उत्तर — मन वश)

37) योग में श्रद्धा, संयमी नहीं, इसलिए अंतकाल विचलित – कौन सी गति

38). छिन्न - भिन्न बादल जैसे दोनों ओर से नष्ट ?

39) आपके सिवा दूसरा संशय छेदन नहीं कर सकता।

40). नाश नहीं – भगवत प्राप्ति मार्ग में कोई दुर्गति को प्राप्त नहीं

41) योगभ्रष्ट पुण्यवान श्रीमानों के यहाँ जन्म

42) वैराग्य वाला ज्ञानवानों के यहाँ जन्म
यह जन्म अत्यन्त दुर्लभ

43) संस्कार से वह फिर प. प्राप्ति के लिए बढ़ कर यतन

44) पुण्यवान भी भ. की ओर आकर्षित — फलों का उल्लंघन

45) परन्तु प्रयत्न पूर्वक अभ्यास कई जन्म के संस्कार
इसी जन्म में सिद्ध - पाप रहित - परम गति

46). तपस्वियों से, शास्त्रज्ञों से, पुण्यवानो से — श्रेष्ठ योगी

47) श्रद्धावान योगी – मुझे भजता – वह परम श्रेष्ठ मान्य।

(37–47: योग भ्रष्ट पुरुष की गति और ध्यान योग की महिमा)

२११

अध्याय 6 / 1, 2

1 श्लोक श्री भगवान बोले, जो कर्म फल का आश्रय न लेकर करने योग्य कर्म करता है, वह संन्यासी तथा योगी है और केवल अग्नि का त्याग करने वाला संन्यासी नहीं है तथा केवल क्रियाओं का त्याग करने वाला योगी नहीं है।

2 श्लोक – हे अर्जुन, लोग जिसको संन्यास कहते हैं, उसी को तुम योग समझो, क्योंकि संकल्पों का त्याग किए बिना मनुष्य कोई सा भी योगी नहीं हो सकता।

भगवान – यह जो कहते हैं संकल्प को त्यागने वाला – तो तुम्हारे में कौन सा संकल्प है उसमें सारा ज्ञान है। तुम बाहर से भले अग्नि नहीं जलाओ, खाना नहीं खाओ, संसार त्याग करो, कर्म त्याग करो पर कर्म के फल की इच्छा न त्याग किया, अहंकार न त्याग किया तो सं. वि. तुम्हारे शान्त नहीं है। बात करो तो मालूम पड़ जाएगा तुम्हारे अंदर क्या बात है। सं. होता है द्वैत का द्वेष का, बाकी भले कोई भी ख्याल आए तो कोई बीमारी थोड़ी है। प्यार का संकल्प, सेवा का सं. उठे ना। पर जब तक द्वैत मन में पड़ा है और सर्वज्ञ आत्म देव को नहीं जानते हैं तो संकल्प भी नहीं जाते हैं। कभी² दूसरे (शरीर के) लिए सं. आता था तो हम बोलते थे गुरु बैठा है तो मैं क्यों कुछ भी करूँ। ऐसे अपने ही संकल्प को शान्त कर देते थे। फिर एक दिन दादा ने खुद ही बोला अच्छा कोई संकल्प आए किसी को उठाने के लिए, भलाई के लिए तो तुम बता देना। तो हम देखें दादा का और मेरा संकल्प same है। क्योंकि अपनी मन-बुद्धि, अपनी सूक्ष्म बुद्धि, अपना अहंकार छोड़ दिया। अपना भगत, अपना शिष्य भी रुकावट करता है। उसको भी बोलते हैं, दूर हटो, मेरे से बात नहीं करो। जब हम और हमारा गुरु है तो तीसरे का मतलब नहीं। हमको हमारी भक्ति, ज्ञान और संकल्प पूरा करना है।

राधा श्याम हो गई, श्याम हो गया राधा। वृन्दावन में राधे² करते हैं। हमने पूछा भ. को भूलकर राधे² क्यों करते हैं? बोला, राधा को कहेगा तो श्याम पकड़ाएगा। पूना से एक लड़की ने फोन किया कि तुम आ जाओ। तुम आएंगे तो वो पक्का आएगा। वो आएंगे तो तुम पक्का आओगे

212

हम दो नाम क्यों दें। हम दो नाम भी क्यों डालें बस come immediately और कोई नाम रूप नहीं। क्यों बोलते थे राधा को याद करेंगे तो श्याम पक्का आएगा। श्याम को याद करेंगे तो राधा नहीं आएगी ? ये भी राधा की मगरूरी थी ना जो नहीं आती थी। पर वो कृष्ण ने ही उसको अहंकार दिया था कि अभी मेरा नाम इतना नहीं चलेगा जितना तेरा चलेगा। और कृष्ण भी राधे २ करते थे तो राधा हो गई श्याम। ये है प्रेम का नेम जहां कोई भी law टूट जाता है। तुम बोलेगा कृष्ण ने ही तो राधा को ज्ञान दिया। तो राधा ने कुछ नहीं किया क्या, जो कृष्ण से हो गई २ सारी लोक लज्जा छोड़ी होगी। इतनी अपनी निन्दा कराई होगी तभी तो उसके साथ बैठी। दोनों बिना न काम चले। दोनों की जरूरत होती है। अर्जुन है तो कृष्ण है, कृष्ण है तो अर्जुन है नहीं तो गीता कैसे बनेगी। और जिन्हें शौक है तो जैसे अर्जुन ने कृष्ण से ज्ञान निकाला तो ऐसा तुममें से कौन बैठा है जो मेरे से ज्ञान निकाले? लगता नहीं है। तुमको श्रद्धा है कि हम उत्तर प्रश्न कैसे करें ? यह law है। जब तक अर्जुन की तरह तुम उत्तर प्रश्न नहीं करेगा तो तुम को ज्ञान कभी नहीं होगा।

प्रेमी - भ० यहाँ पर करने योग्य को खोलिए।

भगवान - करने योग्य माना जो सामने कर्म आए वो करें पर फल की इच्छा नहीं रखें - result नहीं रखें अन्दर में। चाहे wrong निकले या right वह बच्चे की तरह कर लेगा

प्रेमी - भ० मायावी कर्म होवे या जो भी सामने आवे।

भगवान - मायावी कर्म कोई है ही नहीं। यह तो तुमने कलर दिया है। फल की इच्छा खराब है। तुमने किसका कर्म दिल से किया किसका नहीं किया तो तुमको मालूम नहीं पड़ता ? तुम्हारी भावना जुदा २ है तभी तुम्हारी फल की इच्छा है और तभी उसको कर्म कहा जाता है। हमारी सब क्रिया होती है। हमारी भावना एक ही है। Motive कुछ भी नहीं है। मैं हमेशा खाली हूँ। न अपना है न पराया, न हम न तुम।

(A) अध्याय 6.

3 श्लोक – योग में आरूढ़ होने की इच्छा वाले मननशील मनुष्य के लिए योग की प्राप्ति में निष्काम भाव से कर्म करना ही हेतु कहा जाता है और योगारूढ़ हो जाने पर उस योगारूढ़ पुरुष का जो सर्व संकल्पों का अभाव है, वही परमात्म प्राप्ति मे कारण है।

भगवान – योग में पक्का, निश्चय मे पक्का, भावना मे पक्का, निष्काम कर्म में भी बहुत पक्का। निष्काम कर्म आता ही है जो सच्चा है। निष्काम कर्म से सबका मालूम पड़ता है कि दिल में क्या है। जब कृष्ण ज्ञान देता था तो गोपी को प्यार करता था। कृष्ण sexless था। आज कोई भी आदमी sexless हो जाए तो कइयों का जीवन बना देगा। नहीं तो अपने ही रोग भोग में, ऐशा में मरा गया रहता है। बोलता है मेरे से वासना छूटती नहीं। वासना कैसे छूटेगी? बोलता है – 'रब नू की पांवा, इधर छूटे उधर लांवा'। एक जगह से निकाल कर वृत्ति तू दूसरी जगह रखेगा तो तू विशालता में आ जाएगा। विशालता में आएगा तो तू सर्वज्ञ हो जाएगा। घर में अपने वालों से प्यार करने से तू सर्वज्ञ नहीं होगा, न ही किसी की दिल जानेगा या दुःख पहचानेगा। सृष्टि में एक आना सेवा लेनी है सोलह आना करनी है। उससे सृष्टि हरी भरी हो जाएगी। दुःख आता है जब कोई यह ज्ञान ले कर औरों की सेवा नहीं करता। यह ज्ञान ले कर कोई भी तुमको मिले तुम उसको प्यार कर सकते हैं, सेवा कर सकते हैं आधार दे सकते हैं – थोड़ा टाइम आधार देओ।

परमात्मा दुःख देता ही नहीं है। तुम्हारी प्रकृति से तुम्हारी प्रकृति को दुःख लगता है। हमेशा के लिए सुजाग हो जाओ कि फिर हमको माया मे फंसने का नहीं है। बेटा बेटी में, इसमें उसमें वृत्ति फंसी पड़ी है। ये संसार का वृक्ष वासनामय है। वासना जाती है ब्रह्मज्ञान से। तू ब्रह्म है और सब ब्रह्म है, तो जो प्यार करने का है ऐसे दुःखी को उठाने के लिए। रोते हुए को तुमको हंसाना।

214

नहीं आया तो तुम्हारा जीवन बेकार है। तुम लोग पहले गरीब को मदद करते थे पर इश्वर गरीब वो है जिसे आत्मा का ज्ञान नहीं है। ये धन देने वाला मुफ्त में देगा, लेने वाला मुफ्त में लेगा तो उसका जीवन बन जाएगा। पैसे के दान से सब भिखारी हो गए, बीमार हो गए। पर ज्ञान धन से प्रेम में सब सुजाग हो जाएगा। थोड़ी help सब को करो फिर आगे आपे चलेगा। मन की engine weak हो गई है क्यों कि पहले ही जानने का था मैं आत्मा, परमात्मा हूँ — बाल बच्चा कहाँ से आया। एक² अपने को single समझे, मैं भगवान हूँ। बच्चे भ० के हैं या तुम्हारे हैं? मेरे² से weak हो जाते हैं। एक भी सुई हमारी होगी तो हम weak हैं। खाने पीने की भी उतनी जरूरत नहीं है जितनी आत्म ज्ञान की है। आत्म ज्ञान के सिवा बुद्धि खुलती नहीं है। बुद्धि माया में मलीन है। हैं मैं का रोग मैं हूँ² करता है। है इश्वर भ० पर तुम मेरा बेटा² करता है। तुम्हारा बेटा जो मर जाता है उससे भ० पूछेगा — के लोग रोते क्यों हैं? तू गया अकेला, आया अकेला तो तू इनको बन्धन में डाल कर आया? राम तीर्थ की रानी ने कहा तू खाली sign कर मैं तेरा हूँ। बोला यह पाप मुझसे कभी नहीं होगा। तू तू है, मैं मैं हूँ — तू आत्मा, मैं आत्मा। अज्ञानी को दिल होती है कि कोई मेरे को अपनाए। अपनाएगा तो दुःख शुरू हो गया। अपनाए अपने भगवान को। पर तुम अपनाता है — यह मेरी बहन यह साली — कोई तुम्हारा नहीं है। आत्मा माना single. एक ही ब्रेड के स्लाइस अनेक पर है ब्रेड। एक ही परमात्मा पर अनेक रूप रंग है। पर है ना-रंगी। इतना रूप रंग बनाया है मौज के लिए। जब सम्बन्ध टूट जाएगा तो प्रेम ऐसे अन्दर आएगा जैसे हवा। चाहे वो लोग तुम को देखें पर तुम बोलो सम्बन्ध रखना माना पाप है। आज अपना आधार दियो, कल तू ही मर जाएगा। हर एक को भ० का आधार देना, ज्ञान का आधार देना। उसको बोलना

(C) 6/3 Cont.

तू भी प्यार का सागर है। तेरी भी बूँद का कोई प्यासा निकलेगा। यह ज्ञान ऐसा है, अगर तुम सच्चे हो तो जो बाजू में बैठेगा उसको भी current लग जाएगा। पर जभी तू अन्दर में clean होगा। वैरागी — माना राग नहीं। कुछ त्याग नहीं करना है। हमारा कुछ है नहीं तो त्याग क्या करें। सब भ० की अमानत है। अमानत में हम खयानत करते हैं कि तू मेरा है। जैसे कोई औरत दूसरे आदमी पर नज़र रखे तो उसके आदमी को गुस्सा आएगा, ऐसे ही परमात्मा के ये सब बच्चे हैं। तुम मन रखेगा तो व्यभिचार हो गया, पाप होगा। मन होना चाहिए मधुसूदन में, एक-रस आत्मा में। सब से मन निकाल कर अपनी आत्मा को प्यार करो। इतने दिन धक्का खाया — सब के पीछे गया आज तू भ० हो जाओ तो तेरे पीछे सब आएगा।

तेरे को किसी में इच्छा है तो तू पहाड़ खा कर मरेगा। मौत क्यों आती है? क्यों कि जीता है तो मरेगा, पर जो है ही अमर आत्मा तो न जीता है न मरता है। जीने मरने को जवाब है।

अपने² कर्म से तू दुखी, या सुखी है, अपने ज्ञान से तू ऊपर उठेगा। दूसरे की मदद के लिए बैठेगा तो मुफ्त में मर जाएगा।

न तू जन्मा है न तूने किसी को जन्म दिया है। यह सब भ० का नाटक है, खेल है। भ० स्वयंभु है। वह एक से अनेक रूप धारण करता है, भ० का स्वरूप बढ़ गया पर तुम बोलता है मेरा² तो दुख शुरू होता है। पर भ० के राज में दुःख का जन्म भी नहीं है। तुम आज कौन सा निश्चय करते हैं, कौन सा खाना ले रहे हैं, कौन सा विचार कर रहे हैं? चाहे तेरे घर में आग लगे पर तू आत्म विचार में कितना हैं? आत्मा की हानि शरीर छोड़ने के टाइम कितनी होगी? तुम्हारी झलक फलक होनी चाहिए। तुम बोलते हैं जो तू है सो मैं हूँ, मेरा कुछ भी नहीं है। फिर बोलते हैं भ० करेगा। अरे है ही नहीं तो करेगा क्या? तुम एक² को आत्मा में टिकाओ — पता नहीं यह पहाड़ी का सांस हो जाए। तुम ऐसे तख्त पर खड़े हैं जो उल्टा हुआ तो तुम मर जाएगा। आत्म विचार के सिवाए सब झूठ ही झूठ है।

श्री

6 अध्याय 4, 5

= 4 श्लोक – जिस समय न इन्द्रियों के भोगों में और न कर्मों में ही आसक्त है, उस समय वह सर्व संकल्पों का त्यागी मनुष्य योगारूढ़ कहा जाता है।

= 5 श्लोक – अपने द्वारा अपना उद्धार करे, अपना पतन न करे, क्योंकि आप ही अपना मित्र है और आप ही शत्रु है।

= प्रेमी – भगवान लगता है कि निष्काम कर्म के भाव में आसक्ति है।

= भगवान – निष्काम कर्म में भी आसक्ति न रहे तो योग होगा। मगज़ अकेले में ठीक रहता है, शोर शोर में नहीं। तब योगारूढ़ हो सकता है।

आप गुण कर्म में है इसलिए आपसे भूल होती है। अच्छे हो तो किसी का गुण कर्म देखते हो। गुण कर्म में बुद्धि होशियार होती है और ज्ञान, बुद्धि वालों के लिए नहीं है। आप change हो जाएंगे तब अपने को मोड़ेंगे, सामने वाला भी मुड़ेगा। हम दूसरे को क्यों मोड़ें और जोड़ें। तुम कर्म का मर्म नहीं देखते इसलिए जल्दी में judge करते हैं।

तुम अभी तक फर्ज duty में हो, कुछ करने में पड़े हो। इसका मतलब लोगों का डर भी है। दूसरी बात अपनी गद्दी किसी को नहीं देते। Manager भी बोलेगा दो तो सारी गद्दी दो।

मन है तो गुरु की बात समझेगा नहीं। हमारा मन फिर behind में गुरु की निन्दा बताएगा। अपने को be nothing समझो और जानो मैं कुछ हूं ही नहीं। हमारे मन में कितनी भी होशियारी होवे पर हम over rule नहीं करें। गुरु में श्रद्धा रखनी चाहिए पहले दिन जैसी। (यह है अपना मित्र बनना) कभी ego नहीं आए – I know something. भले कितना भी भरपूर हो जाओ पर अपनी पहचान dress नहीं भूलना। गुरु को ठगेगा

217

6/4,5, (B) Cont

माना तुमने अपने को ठगा (अपना ही दुश्मन बनना)। माया से दिमाग खाली करेगा तो तुमको ... प्रेरणा आएगी। मेरे को घर में तुम्हारी T.V. पहुँच जाती है कि यह मायावी कहाँ भूल कर रही है। भगवान न सम्भाले तो तुम माया में चले जाएंगे।

जब तक निर्लेप नारायण नहीं हुए तब तक गुरु से शान निकालना है। तब तक रोज़ बन्धन काटो। तन से नहीं पर मन के बन्धन। तन से यतन करने से भी खुद नहीं छूटेगा। किसी को युक्ति दो तो पूछो तेरा मन क्या बोलता है। हे अर्जुन मन बुद्धि मेरे को अर्पण करो। चोरी ठगी करेंगे तो मन भारी हो जाएगा। एक भी काम छिप कर मत करो। सच्चा बताने में क्या होगा? इस पर विचार करो कि मन तुम को पकड़ कर बैठा है या तुम मन को पकड़ कर बैठा है।

कीर्ति कलंक है, बड़ी माया है - accept ही न करो। अगर कोई कीर्ति करे तो दर्द से बोलो - जब तक भ० बैठे हैं तो मेरी बात न करो।

घर में सब की महिमा करो तो छूट जाएगा। जो दूसरे को लटकाएगा वह खुद ही लटकेगा। नि० सब हिसाब लेगा कोई भी नि० को छोड़ कर लिमिट में आ कर क्यों attachment रखता है? दिल पर पत्थर रख कर मोह खतम करना है।

ऐसा कोई शब्द न दें जो दूसरे को चोट लगे द्वेष होवे। ऐसा कोई शब्द न दे जो दूसरा मेरे मे अटक जाए। राग द्वेष दोनों से अपर।

सब कामनाओं का नाश। तुम सब जो माया मे बैठे हैं तो गन्द में बैठे हैं। माया से कब थकोगे। बाकी शास्त्र से सब गांठें बनती हैं। गुरु attack करें तो टूटे। तो ही निराकार में आएगा। अगर तुम भ० का फोटो रखेगा या कोई भी आकार तो तुम निराकार को कभी नहीं पहचानेगा। गुरु से मेरा प्यार है तो गुरु जैसा मैं बनेगा। बाकी उसके नाम रूप को नहीं रखेगा दिल में।

6 अध्याय

6 श्लोक - जिस जीवात्मा द्वारा मन और इंद्रियों सहित शरीर जीता हुआ है, उस जीवात्मा का तो वह आप ही मित्र है और जिसके द्वारा मन तथा इंद्रियों सहित शरीर नहीं जीता गया है, उसके लिए वह आप ही शत्रु की तरह शत्रुता में बर्तता है।

भगवान - जीवात्मा है तो मन इन्द्रीय वश करना पड़ेगा। जो मन इन्द्रीय नहीं वश करता है तो वो अज्ञानी है। अपना ही मित्र अपना ही शत्रु, माना दुश्मन है। नहीं कि बाहर कोई दुश्मन है तुम्हारा। न माया, न स्त्री, न पदार्थ दुश्मन है - पर दुश्मन माना दुष्ट मन। और तुम बाहर दुश्मन ढूंढता है कि ये खराब है - पैसा, स्त्री खराब है। कोई खराब नहीं है। तू अपना ही मित्र है, अपना ही शत्रु है जो है आत्मा से दूर। तुम अपने आत्मा को मित्र बनाओ, अपने मन को ही शत्रु बनाओ - फिर मन को डसो आत्मा से। जैसे नेवला साँप को डस लेता है। साँप में जहर है, नेवले में नहीं है पर नेवला चंदन के वृक्ष से सुगन्धी ले कर आता है फिर साँप से लड़ाई कर के जीतता है। ऐसे ही माया है साँप - और गुरु है माया पति तो जो जिज्ञासु गुरु से प्रेम करके, भक्ति प्यार कर के, गुरु से शक्ति ले कर माया में जाएगा तो माया उसको पाण सुजागी देगी - पर खराब काम नहीं कराएगी नहीं तो तुम्हारे से माया खराब काम कराती है। माना तुम मायापति बनेगा जब जीव आत्मा को जानेगा। जीवआत्मा बद कर्म कराती है आत्मा नहीं। क्यों कि जीव का पर्दा आत्मा के ऊपर आ गया तो जैसे इतने सूरज को कैसे ढक लेता है बादल ? सूरज इतने चमकदार को बादल ढक लेता है तो जीवात्मा को देहध्यास ढक लेता है। आज निश्चय करो कि द्वैत को छोड़ कर तुम अपनी आत्मा में आजाओ और मित्र, शत्रु को जानों। तुम्हारा मन ही मित्र है, शत्रु है क्यों कि आत्मा को नहीं जानते।

2.3.1

6 अध्याय

(A) 7 श्लोक – जिसने अपने आप पर अपनी विजय कर ली है – उस सर्दी-गर्मी (अनुकूलता - प्रतिकूलता), सुख दुःख, तथा मान-अपमान में प्रशान्त – निर्विकारी मनुष्य को परमात्मा नित्य प्राप्त है अर्थात उसके लिए परमात्मा के सिवा अन्य कुछ है ही नहीं।

भगवान – जब समान दृष्टि, सात धानी में आता है तो उसका ज्ञान प्रकट होता है पर जो मन माया के आधीन है तो ज्ञान ढका है। तू मैं का भेद पड़ा है तो आत्म जाग्रति कैसे होगी? गुरु के ज्ञान के आधार में कैसे चलता है? एक २ आता भी है, मन भी देता है तो भी अपने को नहीं जानता है। एक २ point पर मर के जियो तो एक रस होगा। कर्म भक्ति में देरी है पर ज्ञान में देरी नहीं है। ज्ञान माना तू स्वयं ज्योति है – अपना आप ही है। अपने आप के लिए कौन सा आईना चाहिए? खाली गुरु चाहिए। आइना भी होवे, नेत्र भी होवे तो जल्दी face दिखेगा। अब आज ही समझो मैं मुक्त हूँ। मेरी मुक्ति में कोई शक ही नहीं है। ये लोग संत के पास आना जाना करते हैं – पर संत की foundation देखो – कैसे वो सन्त बना? सो साधु जो मन परखोवे, राम नाम अन्तः में सोवे। मन परखोवे, न कि घर त्यागे, बच्चे त्यागे। तुम्हारी चीज़ कौन सी है जो तुम त्याग करेगा? मन से त्याग ग्रहण छोड़ दो। जो नित्य आत्मा है वो हमको प्रतीत होना चाहिए। अंदर बाहर अगर भ० नहीं है तो किधर है मंजो तू देखेगा? वो तो ज्योति स्वरूप है सब को light देने वाला है, लेने वाला नहीं है। वो तो साक्षी मात्र है। सब के भीतर है पर नज़र नहीं आता है क्यों कि देह में रस है – मनोरंजन अच्छा लगता है। जिसको मोक्ष की इच्छा है तो तुम सब विकारों से एक मिनिट में दूर हो जाएगा। विकार होता है देह के अहंकारों से। अहंकार नहीं तो विकार कहाँ से आएगा? अहंकार का जो शीश है वो गुरु को देना पड़ेगा। शीश दे तो ईश पाए। शीश अपना काट के देना है गुरु को कि गुरु आज मेरा शीश निकाल के तुम्हारा शीश आ जाए। तो आपस में हमारा तुम्हारा

220

सौदा हो जाएगा। मेरा नाम तेरे ऊपर पड़े कि इधर शुरू हो जाता है। तुम पहले गुरु2 करो फिर निराकार को भी जानेगा।

मनुष्य माना मन का ईश्वर। मनजीते जगजीत। शास्त्र भी बोलता है तुम संयम में रहता है? बस क्रोध आया क्रोध किया, शराब आया पिया। मन को जीता तो सारी दुनिया पे राज करेगा। गुरु मन जीत के देता है। इतना गुरु को जानो कि मुख कान सब गुरु का है तो इंद्रिय भी गलत काम नहीं करेगी। तुम मेरे को जानेगा तो तुम्हारे मुख से भी मेरे ज्ञान की बात निकलेगी। मन मत त्याग .... । भ० से तू मैं का भेद चला गया तो सर्व में देखे भ०। इंद्रिय आपे ही काम करती है पर तू कर्ता न बन। आज छोटी i मेरे को देकर बड़ी I ले कर जाओ। आत्मा सत्ता मात्र है, सब में सामान्य सत्ता है। निम्बू में खटास उसका है। केले में मिठास उसका है। भ० कितना करामात का धनी है।

गर्मी सर्दी सब को ज्ञानी अज्ञानी को लगता है। अज्ञानी को धीरज नहीं है। गर्मी से गर्म, सर्दी से सर्द होना है। सहन-शक्ति रखो। पहाड़ जैसा दुःख आए, शक्ल से न लगे। हमने सुना धीरज रखने वाला धीरज सिखाता है। चेहरा तुम्हारा आइना है। सब चेहरे से मालूम पड़ेगा। धीरज नहीं रखते हैं अंतःकरण में अशान्ति होती है। वे चेहरे पर लकीर आती है पर तुम शान्त करो। — ऐसा भी होता है, मेरे से कोई नई बात नहीं हुई। ज्ञानी चित्त में अडोल रहता है। जैसे तिनका तूफान में ऐसा 2 होता है, थोड़ा दिल को हिलाओ, पूरा हिलेगा। स्थिरता होवे, मान अपमान क्यों लगे? स्थिरता नहीं होगी ज्ञान चला जाएगा। दुनिया में सब जोड़े 2 हैं केवल आत्मा अकेला है — मौन शान्त गम्भीर। हालत किस पर आती है? देह पर। तुम भ० को प्रार्थना करते हैं माफ़ करना। क्यों न सज़ा मिले — इसी जन्म में खात्मा हो जाए।

तुम एक संकल्प के लिए भी भ० को प्रार्थना करेगा। भ० वैदा नहीं है जो तुमको ही दुख भेजेगा। जो तुम्हारा विकार है उस पर दुख करेगा। भ० से कोई हालत आती है, पहले ही prepare हो जाओ। कोई भी हालत आए हम ready हैं। अन्दर में हर हाल में बताओ मैं आत्मा हूँ। परमात्मा से कोई हालत आए मीठा है खट्टा नहीं है। कोई हालत ही नहीं है। मनुष्य का हक है आनन्द और शान्ति में रहना। अन्दर² बात को खत्म करो, ज्ञान है, विचार है। अज्ञान में भी कितनी घर की बातें घर में खतम करते हैं। जो भ० से हालत आए fit हो जाऊँ किसी को मालूम हो न पड़े। जब हालत आई ठहरो नहीं है पर जब आई अधीरज रखा। तुमको weakness आई कहाँ से? सब सम्बन्धी बोलेंगे मर गया पर प्रेमी बोलेगा ज्योत में ज्योत समा गया। देहअध्यासी- बोझ देगा नहीं, शान्ति गंवाएगा। एक आधार देगा, 10 निकालेगा। आत्माकार एक दूसरे को उठाता है अज्ञानी नीचे गिराने के सिवा रहेगा नहीं। तू दीन बन कर जा वो और दीन बनाएगा। मेरी सृष्टि अनाथ नहीं है। सबको अन्दर² देता है पर मनुष्य को प्रतीत नहीं। दिल की ताकत नहीं कि भ० साथ है, गम काहे का? सच्चो मदद करने वाला एक सांई है। सांई में विश्वास करेगा, चढ़ेगा। तभी भ० बोलता है सर्दी गर्मी, मान अपमान सहन करो। नि० का नाम होवे, तेरा नाम क्यों होवे? वो हर रूप में है। हर रूप में मदद करेगा। तुम्हारे लिए जगत मिथ्या है? कौन मदद करेगा? स्वार्थ, मोह, काम में ज्ञान अन्दर नहीं ठहरता है। ज्ञानी को किसकी परवाह नहीं है, वो शहनशाह है। जीते जी सब मरे हैं - मैं आत्मा हूँ। सब देहध्यास में हैं, दिया बुझा है। जिसके अन्दर आत्म जागृति नहीं है मुर्दे के समान हैं। हर एक मनुष्य के हृदय में मैं राज्य करूँ। हर एक मनुष्य खुद परमात्मा है। किसके आधार की ज़रूरत है? दुनिया दीन समझती है तभी मदद करती है। तुम शहनशाह समझो, तुम बिन कौड़ी बादशाह है। इच्छा नहीं है तुम राजाओं का राजा है। बिना संतोष नहीं कोई राजा। जब

6/1 Cont. (D)

आवे संतोष धन सब धान धूरि समान। आज तक कोई साहुकार नहीं मिला है। दिल गरीब है। अब तक मांगता रहता है। फायदा हो फायदा चाहिए। अब तक इच्छा है। चाहिए तो साहुकार कैसे हुआ?

8 श्लोक – जिसका अंतःकरण ज्ञान विज्ञान से तृप्त है, जो कूट की तरह निर्विकार है, जिसकी इंद्रियाँ अच्छी तरह जीती हुई हैं, और जिसके लिए मिट्टी, पत्थर, सोना समान है, ऐसा योगी युक्त, अर्थात् भगवत्प्राप्त कहा जाता है।

भगवान – संस्कृत में लिखा है "ज्ञान विज्ञान तृप्तात्मा" माना आत्मा में तृप्त। अंतःकरण का शब्द कहीं नहीं दिया है। ये सुजागी भ० से मिली

जिसकी वृत्ति विकार रहित है – माना तृप्त है अपने आप में। अपनी आत्मा में संतुष्ट है। उसके लिए न सोना है, न मिट्टी, न पत्थर, सब ब्रह्म है। सोना है नहीं, माना लोभ नहीं है। मिट्टी से धिक्कार नहीं है। Oneness की दृष्टि में रहे। हमारी तृप्ति आत्मा में है। खुशी आत्मा की है। दुनिया की खुशी temporary है। तभी face change होता है। ज्ञानी को एक रस रहना है।

जिसका अंतःकरण ज्ञान विज्ञान से तृप्त है माना जब तक मनुष्य में अन्तःकरण है तब तक ज्ञान विज्ञान नहीं रहेगा। अंतःकरण माना मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार। ये आत्मा से खलास है। आत्मा है तो अंतःकरण खलास है। उसके ऊपर naturally ज्ञान विज्ञान अनुभव होगा। you are not, तू नहीं है भ० है। ज्ञान विज्ञान उसको लगेगा जो अपनी बुद्धि नाश करेगा। अब भ० बोलता है मन बुद्धि मेरे को अर्पण कर क्योंकि मेरे बीच में मन बुद्धि रुकावट है। मेरा तेरे पर नाम है फिर भी क्या राज है? तू और है मैं और हूँ ये ही राज है – मन बीच में खड़ा है जो चतुराई, चालाकी करता है। देह की बुद्धि है कुत्ते की बुद्धि पर निश्चयात्मक बुद्धि होनी चाहिए। निश्चय है कि मैं already God हूँ।

6 अध्याय

9 श्लोक - सुहृद (जो स्वार्थ रहित सब का हित करने वाला है), मित्र, वैरी, उदासीन (जो पक्षपात रहित है), मध्यस्थ (जो दोनो ओर की भलाई चाहने वाला है), द्वेष्य और सम्बन्धियों में, धर्मात्माओ और पापियों में भी समान भाव रखने वाला अत्यन्त श्रेष्ठ है।.

भगवान — स्वार्थ रहित सब का हित करने वाला, मित्र दुश्मन दोनों की भलाई चाहने वाला और सब में मैं ही तो हूँ। दूसरा है ही नहीं। ऐसा जानने वाला अत्यंत श्रेष्ठ है।

225

6 अध्याय

(A) 10 श्लोक – मन और इन्द्रियों सहित शरीर को वश में रखने वाला आशा रहित और संग्रह रहित योगी अकेला ही एकान्त स्थान में स्थित होकर आत्मा को निरन्तर परमात्मा में लगावे।

प्रेमी – एकान्त के अर्थ बोलिए। क्या अकेला रहना एकान्त है?

भगवान – जो योगी होता है उसको एकान्त पसन्द आती है। उसको शोर पसन्द नहीं आता है। जिसने मन इंद्रिया वश किया है अंतःकरण वश किया है उसको शोर पसन्द नहीं आएगा। As the company so the colour. फिर २ थोड़ा बाहर निकल कर कछुए की तरह इंद्रियों को समेट लेता है। कछुआ देखा है ना? इंद्रियां निकालता है टाइम पर अपना कार्य कर के फिर समेट लेता है। यानी इंद्रियों से काम लेकर फिर अपने को समेट लेता है। मेरे को एक पर भी विश्वास नहीं है जो समय पर सेवा कर के फिर पत्थर की शिला की तरह हो जाए। सब free हो कर चलते हैं। हम सत्संग भी करते हैं तो देखो टाइम से आते हैं तो मैं भी free तू भी free. फिर अपने साथ भी बैठ सकते हैं। सारे दिन कोई आता जाता हो तो तंदरुस्ती भी ठीक नहीं होगी क्योंकि कायदा नहीं तो फायदा नहीं। पूरी प्रकृति देखो सुबह से रात तक कैसे नियम में चलती है। तुमने मेरे को देखा है मैं regular हूँ या नहीं? तुम्हारे से हम कितना fit है? हम घर में जाते हैं हरि ओम शान्ति। मैंने एक को भी नहीं देखा है कि free हो कर नहीं चलता है। मैं free नहीं हूँ। जैसे नियम में प्रकृति वैसे हमारी प्रकृति है।

Cont.

226

6/10(B) एकान्त अन्दर की होवे। फिर दूसरी एकान्त है one without a second. जहां दूसरा ही नहीं है। तुम अपनी रहनी बताओ ऐसी है जैसी हम बोलते हैं? नियम तुम्हारे में नहीं है। किस से पूछा, किससे खाया फिर तुम्हारी वृत्ति कैसे ब्रह्माकार होगी। वृत्ति को बाहर रखना है।

अपने से ज्यादा हमको दूसरे की आजादी अच्छी लगती है। हम किसके पास wrong time में नहीं जाएंगे। आज भी मैं देखते हैं मेरा गुरु बैठा हुआ है - visible नहीं है तो invisible तो है ही। मेरे को हाज़िर नाज़िर गुरु दिखता है। जो कदम उठाते हैं तो गुरु ही है। उनकी शिक्षा हर समय सामने है। एक भी शिक्षा उनकी miss नहीं होती है।

तीसरी एकान्त है कम से कम शब्द बोलना। आगे वाला भले सौ शब्द बोले - हमारा 2 शब्द में काम चलता है तो तीसरा नहीं बोलेंगे।।

227

6 अध्याय 11, 12, 13, 14, 15

(A) 11 श्लोक - शुद्ध भूमि पर, जिस पर क्रमशः कुशा, मृग छाला और वस्त्र बिछे हैं, जो न बहुत ऊँचा है और न बहुत नीचा, ऐसे अपने आसन को स्थिर स्थापन करके —

12 श्लोक - उस आसन पर बैठ कर चित्त और इंद्रियों की क्रियाओं को वश में रखते हुए मन को एकाग्र करके अंतःकरण की शुद्धि के लिए योग का अभ्यास करे।

13 श्लोक - काया सिर और गले को सीधे अचल धारण करके और दिशाओं को न देख कर केवल अपनी नासिका के अग्र भाग को देखते हुए स्थिर हो कर बैठे।

14 श्लोक - जिसका अंतःकरण शान्त है, जो भय रहित है और जो ब्रह्मचारी व्रत में स्थित है, ऐसा सावधान योगी मन का संयम करके मेरे मे चित्त लगाता हुआ मेरे परायण हो कर बैठे।

15 श्लोक - वश में किए हुए मन वाला योगी इस प्रकार आत्मा को निरंतर मुझ परमेश्वर के स्वरूप में लगाता हुआ मुझ में रहने वाली परमानन्द की पराकाष्ठा रूप शान्ति को प्राप्त होता है।

भगवान - हम लोगों के लिए ये (हठ योग की) बात नहीं लिखी है। सन्यासी को कोई काम काज नहीं है तो सारा दिन क्या करे? मन को कैसे स्थिर करे? तभी बोलते हैं प्राणों को स्थापन करो एकाग्र करो। हमारे पास भी कोई नया आता है तो पहले स्थिरता से नहीं बैठ सकता है। पर जब ज्ञान सुनता है तो ज्ञान से ध्यान natural हो जाता है। हमारे लिए उठते बैठते खाते, प्राण मस्तिष्क में स्थापन होते रहते हैं। मेरा ज्ञान ऐसा

Cont.

6/11-15 Cont (3)

सच्चा है तुम एक बार सुन कर भुला के तो दिखाओ। ज्ञान सुन कर फिर ध्यान धारणा नहीं करेंगे तो वो ज्ञान ज़हर का डंक लगाएगा। मन तुमको कोसेगा कि तुमने क्या सुना। मेरा वचन निष्काम है। तुम को तंग करेगा – चैन से सोने नहीं देगा, कि गुरु से भी ठगी करते हैं अपने से भी ठगी करते हैं। समझो इनको प्रेरणा भी आती है पर ये अपना उद्धार नहीं सोचते हैं।

सच्चा जिज्ञासु जल्दी में चुप नहीं करता है। गुरु से लेन देन करके फिर चुप करता है। तुम कुछ भी बोलेंगे तो गुरु को मालूम पड़ेगा – तुम्हारे consciousness को समझ के dose देंगे। गुरु को और खुद को जान कर फिर कोई भी बात करके हल्का होना है। गुरु से हल्का नहीं हुआ तो ज़रूर वृत्ति बाहर आएगी। मन भी तुमको कोसता है या स्वभाव से मजबूर हो कर कुछ उसको कहा कहा के कर जाते हैं। स्वभाव को हर टाइम change करना है जैसे तुम्हारे को रोज़ कोई देखे कि ये चढ़ रहे हैं। स्वभाव को वश करने के लिए २० अंगुलिये का ज़ोर लगाना है। जैसे तुम्हारे आंखों में भी कोई देखे कि ये कितनी improvement कर रहे हैं। ऐसा नहीं कि ये नीचे आ रहे हैं। कई लोग सत्संग में आ कर पण खराब होते हैं। दूसरे में मन रख कर down होते हैं। समझते हैं इधर भी रस मिलता है उधर भी रस मिलता है तो गुरु के पास जा कर क्या करेंगे। तुम बताओ गुरु के सिवाए कोई तुमको गाली देगा? बेशरम हैं जो तुम मीठी मीठी बात सुनते हैं। जो गुरु दर्द से गाली देता है और कोई गाली देने को पैदा हुआ है? इसमें ज्ञान न

229 Cont.

6/11-15(c) न तुमको होगा न सामने वाले को। दोनों का बेड़ा गर्क है — तो कितना पाप किया। मेरा कौन सा काम होवे — गुरु में अटकाना या अपने में अटकाना। दृष्टांत - एक शिष्य गुरु के पास गया। गुरु ने कहा शराब में रुमाल डुबा के आओ। शिष्य को अच्छा नहीं लगा तो गुरु ने कहा मेरे बड़े गुरु के पास जाओ। उसने कहा वैश्या के पास जाओ। जब गुरु का कहना मान कर वैश्या के पास गया तो उसको खोई हुई बेटी मिल गई। तभी गुरु में विश्वास हो गया।

गुरु में विश्वास आया तो बेअन्त का अन्त मिल गया।

230

अध्याय 6/14,15

14 श्लोक - जिसका अंतःकरण शान्त है, जो भय रहित है और जो ब्रह्मचारी व्रत में स्थित है, ऐसा सावधान योगी मन का संयम करके मेरे में चित्त लगाता हुआ, मेरे परायण होकर बैठे।

15 श्लोक - वश में किए हुए मन वाला योगी इस प्रकार आत्मा को निरन्तर मेरे में एक करके, मुझमें रहने वाली जो परम निर्वाण शान्ति है, उसको प्राप्त होता है। (पराकाष्ठा रूप शान्ति को प्राप्त होता है।)

भगवान - पक्की शान्ति कैसे मिलती है? ब्रह्मचर्य का पालन नहीं करेगा तो इधर आने का मतलब नहीं है। जहाँ वो है, शहर है। ब्रह्मचर्य माना भ० को ढूँढना। सहज ब्रह्मचर्य होगा। सब भ० है, तू भी भगवान है। देखेगा क्या? फिर अपनी शान्ति है। जब कोई भी व्रत पालन करेगा, ज़रूर शान्ति आएगी। सब इंद्रिय का ब्रह्मचर्य— उन्हें भ० के काम में लगा दो। कोई कार्य करे तो भी भ० को अर्पण करें। तू चला रहा है, ले रहा है, सब तेरे हाथ में है, सब ईश्वर की ताकत से हो रहा है। आत्माकार के पास संकल्प निमित्तमात्र चल रहा है। ये नहीं लगता मैंने ये भी किया था। करने का भान बन्द करो। तू अकेला आया है एकान्त में बैठ। आत्माकार को भगवान भी नहीं जीत सकता। जिसने अपने को वस किया है तो भ० क्या करेगा। जो दुनिया में कष्ट लेकर शान्ति हासिल करते हैं, केवल साधना करेगा - मरेगा। इधर साधना खतम है। ज्ञानी सहज शान्ति पाता है। ज्ञान भया तो कर्म ही नाश। आत्मा साधन नहीं सिद्ध है। प्राप्त की प्राप्ति है। गुरु तुम्हारे लिए मेहनत करके short cut रास्ता बताएगा।

पराकाष्ठा माने परमानन्द, temporary आनन्द नहीं। क्षणिक सुख में जो नहीं रहता है और आत्मा को निरंतर परमात्मा में लगाता हुआ - यानी पर की आत्मा सब से अपने को एक करता

231

है ज्ञानी। गीता में जो शुद्ध भूमि में लिखा है, उसका अर्थ है एकान्त।
सत्संग में पहले ज्ञान मिलता है, उसके उपरान्त तुम कितना समय
एकान्त में अपने साथ बैठते हैं? तुम खाली बाहर से बोलते हैं
मैं आत्मा हूँ पर आत्मा का लक्षण कौन सा है? इधर कुछ बनने
का नहीं है जो२ अपना मौत करे और गुरु की श्रद्धा में रहे
उसके लिए ज्ञान सहज है जो गुरु से संकल्प जोड़ता है।
अंतर आत्मा जो मिले . . .

9.3.81

अध्याय 6/16,17.

16 श्लोक – हे अर्जुन, यह योग न तो अधिक खाने वाले का और न बिल्कुल न खाने वाले का, तथा न अधिक सोने वाले का और न बिल्कुल न सोने वाले का ही सिद्ध होता है।

17 श्लोक – दुःखों का नाश करने वाला योग तो यथायोग्य आहार-विहार करने वाले का, कर्मों में यथायोग्य चेष्टा करने वाले का और यथायोग्य सोने तथा जागने वाले का ही सिद्ध होता है।

भगवान – कई लोग सारी रात जागते हैं, भ० को रिझाते हैं। भ० को action नहीं चाहिए। मेरे मंदिर को कष्ट नहीं देना। आत्मा पहले सिद्ध है, प्राप्त की प्राप्ति है। अप्राप्त नहीं है जिसके लिए तू बहुत साधना करता है। अप्राप्त होवे तो गुरु भी प्राप्त नहीं करा सके। गुरु जगत मिथ्या कराता है जो पहले ही मिथ्या है। तुमने सब को सत्ता दिया है – इधर की हवा अच्छी है, इधर के आदमी अच्छे नहीं हैं, दूसरे शहर के भी अच्छे नहीं हैं। तुम्हारे धीरज में सब कुछ है। धीरज के जहाज पर बैठो। Wait and see. तुम्हारी life में उतार चढ़ाव होगा। धीरज होगा तो – pass away. मनुष्य भी नहीं हुआ जो अधीरज किया। क्या नहीं मिला है तेरे को? मेरे से लियो! सब मिला भी है तो भी चेहरा इतना खुश नहीं है। मिलने पर नहीं है, संतोष पर है। संतोष धन सब से प्राप्त होता है। थोड़ा धीरज करेगा, भ० की मदद मिलेगी। सारी उम्र हाय2 में चले या वाह2 में चले! हर time भगवान है, तुमको मदद करता है। तुम जानता नहीं है।

233

6 अध्याय

18 -श्लोक – अत्यन्त वश में किया हुआ चित्त जिस काल में परमात्मा में ही भलीभाँति स्थित हो जाता है, उस काल में सम्पूर्ण भोगों से स्पृहा रहित पुरुष योग युक्त है, ऐसा कहा जाता है।

भगवान – श्लोक भी इसी प्रकार है कि भय रहित हो के मेरे परायण स्थित होवे। काल माना time. जिस time तुम्हारा चित्त स्थिर है, इंद्रियां अपने वश में है, चित्त भी अपने वश में है तो तू ज़रूर अपने आप को जानेगा। जभी हिलता है तो अपना face आइने में देखो कि चित्त कितना स्थिर होना चाहिए। अन्दर संकल्प, फुर्णा कुछ भी न होवे – न past, न future. यानी present में रहता है। वो समझता है present में कुछ भी हो सकता है। परमात्मा की डोरी में सब बंधे हैं, कोई भ० के हुकुम के सिवाए free नहीं है। तू अपनी चलाता है तो कर्म बन्धन में आएगा। Be nothing, do nothing. मैं कुछ भी करने वाला नहीं हूँ। मैं नहीं हूँ पर जो है सो है जो है सो है, जो है सो है जो तीन काल में सत है। तो चित्त की स्थिरता कैसे आएगी? अन्दर कुछ भी स्फुरन नहीं है – मेरी चीज़ नहीं है, मेरा कोई order नहीं है मैंने किसी को खरीद नहीं किया है। हम खाली देखने वाला है, न बिक्री, न खरीद। किसी बात में doer नहीं बनना पर भ० का हुकुम देखना। हुकमे अन्दर हर कोई ..... । तुम सब हों मैं के रोग में पड़े हैं। भ० कहता है माम एकम् शरणं व्रज। Capital I देखो, सब के हृदय में मैं बैठा हूँ। One without a second. दूसरा है ही नहीं। तुम्हारा मेरा आत्मा एक है, ऐसा देखो।

234

6 अध्याय 19,20

19, श्लोक – जिस प्रकार वायु रहित स्थान में स्थित दीपक चलायमान नहीं होता, वैसी ही उपमा परमात्मा के ध्यान में लगे हुए योगी के जीते हुए चित्त की कही गई है।

20 श्लोक – योग के अभ्यास से निरुद्ध चित्त जिस अवस्था में उपराम हो जाता है और जिस अवस्था में परमात्मा के ध्यान से शुद्ध हुई सूक्ष्म बुद्धि द्वारा परमात्मा को साक्षात् करता हुआ आत्मा में ही संतुष्ट रहता है।

भगवान – चित्त की स्थिरता है जनक महल में बैठा है, विक्षेप नहीं पर हवा में दिया रखा है – बुझेगा। दिया फानूस में रखते है तू अपने को बाहर माया में ले जाता है। ज्ञानी बात नहीं करता, बिल्कुल अन्तरमुख रहता है। कोई रस आ कर निकाले ऐसी जगह जाना भी अच्छा नहीं लगता। द्रष्टा बन कर देखो, किससे बात करता है, क्या व्यवहार है। तुम किधर भी उठेगा, बैठेगा बात करेगा, ऐसा नहीं। केवल वाणी होवे और आदर्श न होवे तो कोई कुछ भी न सीखे। सत्संग में इधर मर के गिरना पड़ेगा। मनुष्य अपनी weakness नहीं देखता – गुरु ने मेरे को निकाल दिया है। गुरु को देह समझ कर शान उठाते हैं जब एक ही निराकार ज्योति है। मैं निराकार में, तू देह में तभी गलती होती है। सब गलत व्यवहार करते हैं। जिस समय विक्षेप आए, निराकार में टिक के दिखाओ। एक दफा कहना न माना तो न समझना कि निराकार के will पर चलता हूँ। एक दफ़ा भी No किया तो हम राज़ी नहीं हैं। तुमको आना नहीं चाहिए हमारे सत्संग में। इधर आओ तो मर के गिरना पड़ेगा।

235

6 अध्याय -

२१ श्लोक - इंद्रियों से अतीत, केवल शुद्ध हुई सूक्ष्म बुद्धि द्वारा ग्रहण करने योग्य जो अनन्त आनन्द है; जिसको जिस अवस्था में अनुभव करता है और जिस अवस्था में स्थित योगी फिर कभी तत्व से विचलित नहीं होता है।

भगवान - इंद्रियों से ऊपर सूक्ष्म बुद्धि होती है, होनी चाहिए, जैसे हीरा परखने के लिए दुरबीन ऐसा नि० को सा० जानो। सुनना आसान है - कहीं तेरी बुद्धि खराब है देखो। इधर आते हैं बुद्धि ठीक करने या ज्ञान इकट्ठा करने? तुम्हारी बुद्धि मोह और काम के दल दल में पड़ी है। कभी ज्ञानी कभी अज्ञानी। भ० क्या बोलता है जानों। इंद्रिय का रस छोड़ एकान्त में बैठो। स्थूल बुद्धि से माया खरीद करेगा। हीरा परखने से भी अधिक सूक्ष्म बुद्धि चाहिए। जिससे भ० ही भ० देखेगा। एके की विद्या सीखते हैं मास्टर को कितना झुकते हैं। बच्चे कितने प्रेम से स्कूल जाते हैं। इधर तुम केवल बातें करते हैं या सुन कर चले जाते हैं। जो विचारवान होगा, शब्द में बताएगा। सब कुछ गुरु पर रखो। अपनी चलाएगा। कुछ नहीं होगा। स्थूल - मोटे बुद्धि से कुछ नहीं होगा। दृष्टांत - इंद्र, विरोचन का। ज्ञान सुन कर विरोचन ने देह को आत्मा समझकर सजाया, खिलाया, पिलाया। इन्द्र ने वैराग्य लिया सब विषयों से, अद्वैत में रहा, आनन्द में आया। विरोचन ने देह को आत्मा से अलग किया ही नहीं। वैरागी को, जिज्ञासु को कैसे रहना चाहिए? तुम साकार भक्ति वाले मूढ हैं। मेरा भ० है - देह अभिमान हुआ। अपने को भ० न माना गुरु को कैसे मानेगा? अद्वैत को जानेगा, हमेशा fresh रहेगा। गुरु को मानुष .... । इधर भ० माना है तो जानो भी। पहले अपनी आत्मा को पहचानो, फिर गुरु को, फिर सब में। पहले भ० या व्यवहार? सब आत्म पूजा है, सब से आत्म पूजा होती है तो व्यवहार कहाँ? दृष्टांत - एक घर में छ जेठानी अज्ञानी। सातवीं ज्ञानी आई, उसने रमज़ किया। घर की सेवा ही आत्म पूजा है।

236

6/21 Cont. (B).

तुम्हारा कर्म सेवा होना चाहिए, duty नहीं। Duty में beauty चली जाती है। सत्संग में आते हैं, duty करते हैं? मेरी duty नहीं, सेवा है।

6 अध्याय -

२२ श्लोक - जिस लाभ को प्राप्त होने पर उससे अधिक कोई दूसरा लाभ उसके मानने में भी नहीं आता और जिसमें स्थित होने पर वह बड़े भारी दुःख से भी विचलित नहीं किया जा सकता।.

भगवान - प्रिय से प्रिय चीज़ आत्मा है। उससे मिल कर एक हुआ तो कोई बात ही नहीं है। साकार ने भी freedom दिया है। कोई भी धर्म में जाओ, कोई भी स्त्री सन्यास ले सकती है - एक धर्म है जिसमें law नहीं है।. भ० के लिए सब law टूट जाते हैं, केवल तुम्हारे अन्दर full power होवे। भ० के प्राप्त होने के बाद प्रिय वस्तु प्राप्त करने की इच्छा नहीं होगी।.

* कर्मकांड का फल अगले जन्म में मिलेगा सत्संग का फल अभी के अभी। देखो बच्चा हिल नहीं रहा, उठ नहीं रहा, Face देखो, क्या Problem है, कपड़े क्या पहने हैं। चाल-चलन बोल-चाल।
* क्या देखते हो, क्या सुनते हो क्या सुना सकते हो क्या समझा सकते हो।
* क्यों चिपकाते हो, फिर रोते हो, गलत आदतें, रस खुद डाले फिर भगाते हो। बेकदरी कराते हो। खुद के ही रस है।
* खुद भी निकलना है, दूसरों को भी निकालना है, तभी गुरु मार देता है।

* बाहर की कोई चीज काम नहीं लगनी ज्ञान के सिवाय।
* पुण्य कर्म कमाओ ज्ञान पाने के लिये।
* संतों के मिलन के सिवाय सुख नहीं।
* गुरु की कृपा है सेवा मिली है। यह सेवा कर लो वरना अपने वाले सेवा लेंगे।
* दरिद्रता (गंदा, गंदे विचार) के समान दुःख

* खाना खा-2 के, बना-2 के ही मर जाओगे। अन्दर पूज के, बाहर सत्कीत का मजा भी लो।
* सद्गुरु (ब्रह्मज्ञानी) मिलता है सूक्ष्म दृष्टि मिलती है।
* मैं अपने level से नीचे नहीं उतरू।
* जो देखना था वो तो देखा नहीं और क्या देखोगे।
* सत्संग में आके भी निंदा कर रहे हो तो जानवर से भी गये गुजरे। जानवर कहाँ करते हैं।
* अपने वालों को देने के लिये सोचते हो? दूसरे के लिये सोचना पड़ता है, सेवा कीजिये
* रोल निभाने है।
* संसार का नहीं बल्कि भ० तेरे घर का कुत्ता ही बन जाऊँ।
* अपने वालों के लिये भ० को भी फैंक देंगे ऐसी गंदी बुद्धि है। कृतघ्न हैं।
* बिकी हो जाते हैं सब जवाब।
* जिसने अंदर की सुरती पहचान ली उसका बेड़ा पार हो गया है। (नानक)
* अगर अपने अन्दर आग लगी होगी जवाब भी वैसा निकलेगा

* वैराग्य नहीं आता, शर्म नहीं आती, इतनी ठोकरें खाते हो।
* मेरा कहाँ से आया, बाबा को दिखाओ। मेरा बेटा, मेरी बेटी, मेरा-मेरा ---
* रोज मेरा नया जन्म होता है।
* आपने मुझे पहचान लिया, दुनिया क्या पहचानेगी
* बा० अपने प्यारों को ही सत्संग देता है।
* सत्संग से कड़वा सत् है।
* कोई अपना नहीं है, ऊपर-२ से सब निभाते हैं। Fo8ing, How Guru open our eyes.
* प्यार वाला अकेला नहीं होता।
* As the Company So the Colour, पहले अपनी
* सब हालत, कर्म खाती Sign (ठप्पा) कराके मिले हैं मैं कुछ नहीं कर सकती।
* सत्संग में आते हैं स्वभाव change करने आदतें बदलने।
* धीरज और क्षमा से सब हालतें टल जाती हैं।
* अवतार :- पहले खुद फिर दूसरे को तार
* पैगम्बर :- जो अम्बर से पैगाम लेके आया है।

* कर्म वाले आयु के बंधन में नहीं बंधते और न ही किसी के अधीन होते हैं।
* प्यार की कमी है।
* खुशियाँ नहीं मिलती नाम नहीं होता माना पुण्य कर्म नहीं है किसी के आँसू नहीं पोंछे, किया क्या है? कितनों का उद्धार किया है, कितनी सोच है दूसरे के लिये
* अपना ही देखना, सोना, रहना, सत्संग भी आ जाना, पर आगे कैसे बढ़ेंगे।
* दूसरों के लिये कितना करना है।
* Competetion छोड़ दो अगर खुशी पानी है?
* तुम्हारी नस-२ में क्या है, जो दूसरों को आराम करो। प्यार, touch देना है,
* अपनी स्थिति से नहीं, दूसरे की स्थिति से बात करो।
* अपने पास दूसरों को पहचानने की नजर हो, क्या दुःख है, क्या जरूरत है।

6 अध्याय

23 श्लोक – जिसमें दुःखों के संयोग का ही वियोग, उसी को योग नाम से जानना चाहिए। (वह योग जिस ध्यान योग का लक्ष्य है,) उस ध्यान योग का अभ्यास न उकताए हुए चित्त से निश्चय पूर्वक करना चाहिए।.

भगवान – जिस योग के लिए आते हैं उसमें गुम रहना चाहिए। कितने भी कर्म काण्ड भक्ति करे, याद करो, भगवान देखा अन्दर में? उस कर्म में भ• भूल जाता है पर इस ज्ञान से प्रकट होता है। भ• को प्रकट कर के तुम शान्ति ले सकता है। आत्मा को जान कर तुम्हारा विकार जा सकता है। आत्मा सुनते हैं पर 24 घंटा भ• में तत्पर नहीं रहते। जब आत्मा में सुख है तो उसको छोड़ें क्यों? ऐसे साक्षी हो कर रहेगा तो किसके सपने में भी नहीं जाएगा। क्या देखना जब मैं ही मैं हूँ, अपना आप ही है। एक संत को शेर ने काटा और खा लिया – उसी टाइम मरते वक्त संत ने संकल्प किया इस शेर के रूप में मेरे को ही भूख लगी है। इसमें मजा है – मौज में हम free हैं। नाम देव को घंटी नहीं मिली तो जूता ले कर बजाने लगा। प्रेम में कोई law नहीं है बन्धन नहीं है। तुम लोग ज्ञान अज्ञान के झगड़े में पड़े हैं और प्रेम के झगड़े में सब law टूट जाते हैं। प्रेम में आदमी की सुध बुध खो जाती है। तुम को घर के बच्चे के लिए, आदमी के लिए प्यार है पर गुरु के लिए कोई प्रेम धारण तो करे, थोड़ा action तो करे। प्रेम के बिना कोई पार न पाए। प्रेम में गोपियों का देहध्यास टूट जाता था। हम सब धर्म को इज़्ज़त देते हैं कि जहाँ जो खड़ा है ठीक है। तुम सब को ऐसा free रखता है जो भी action करे मन न चले। तुम उसमें भी हमारी लीला समझो। भ• रूखा होता तो अनेक रूप धारण ही नहीं करता। अनेक रूप में कोई तो dance, कोई तो action करेगा? नहीं तो सब ऐसे ही चुप चाप चले जाएं। कभी तो प्रेम दिखाना भी पड़ता है। जभी भावना होवे और कर्म भी होवे तो दिखाई देगा कि सत के भाव से इतने कर्म हुए।

२५ श्लोक - संकल्प से उत्पन्न होने वाली सम्पूर्ण कामनाओं का सर्वथा त्याग करके और मन से ही इंद्रिय-समूह को सभी ओर से हटा कर।

२६ श्लोक - क्रम-क्रम से अभ्यास करता हुआ उपरति को प्राप्त हो तथा धैर्ययुक्त बुद्धि के द्वारा मन को परमात्मा में स्थित कर के परमात्मा के सिवा और कुछ भी चिन्तन न करे। .

भगवान - मतलब धीरे २ भले रस्ता पार होवे - धीरज से क्यों कि मन की आदत छुड़ाना कोई सरल बात नहीं है। अभ्यास से, वैराग्य से सत्संग से मन की रोज़ आसक्ति छुड़ाओ। तुम्हारी हिम्मत बढ़ेगी। कर्म नहीं पर आसक्ति - जिसमें तुम्हारी बहुत रुचि होवे वह कम छोड़ कर देखो। रोज नया nature बनाओ। पहले वाला स्वभाव छोड़ो। कोई बोले किसने तुमको change किया। आसक्ति छोड़ना ज्ञान है कर्म छोड़ना नहीं। आसक्ति छूटते २ कई विकर्म भी छूट जाएंगे। आपे साक्षी बन कर धीरज वान पुरुष ऐसे मन को, इंद्रिय को देख कर उसका गलत कर्म छुड़ाता है। २४ घंटा आत्मा में सुजाग हो कर देखो त्याग क्या होता है, कर्म क्या भक्ति क्या होता है। सब खिंच कर के level पर आओ, भले देर लगे पर काम पक्का होवे। ऊपर चढ़ें अपने वैराग्य से ऐसा नहीं कि गुरु के प्रेम में त्याग किया पर याद है। तुमको टाइम की है ना याद गिरी - आत्मा को टाइम होता है क्या? आत्मा में विस्मृति हो जाती है - timeless. thoughtless weightless, egoless. आत्म रस में, समानता योग में जो प्यार आएगा वह अलौकिक प्यार है। इधर कर्म भक्ति meaning के साथ होती है। अभी अन्दर में प्रेरणा आएगी, प्यार उठेगा, लगन लगेगी, तड़प होएगी फिर गुरु का कदर होता है। दृष्टांत - एक आदमी खुदकुशी करने जा रहा था। दरवेश ने बचाया, राजा से इनाम दिलवाया। आदमी दरवेश की ही झोंपड़ी में आग लगाता है क्यों कि उसे खुद importance चाहिए। बार बार सन्त उसे बचाता है फिर कहीं जा कर वह गुरु की कदर करता है। वह स्तुति करता है फिर स्थिति बनती है।

240

6/24,25 (B) Cont.

तो हमेशा मनुष्य के अन्दर पहले जो जीव भाव है तो गुरु के लिए भी पहले ज़हर निकलेगा। फिर आगे चल कर अमृत निकलेगा। गुरु फिर 2 रहम नज़र कर के सिखाता है। गुरु नम्रता करता है, शिष्य नहीं। गुरु को पहले झुकना है। पहले दाता गुरु भया जो दे तन मन धन। दुनिया के ठग गुरु सिखते हैं पहले दाता शिष्य भया दे तन मन धन।

2111

6 अध्याय

26 श्लोक – यह अस्थिर और चंचल मन जहाँ जहाँ विचरण करता है वहाँ 2 से हटा कर इसको एक परमात्मा में ही लगाए।

भगवान – मन की जो गलती है उसको ज्ञान से छुड़ाओ कि आज यह किया क्या तुम्हारा पेट भर गया? आज यह मिला, पेट भरा? शान्ति आई या विक्षेप आया? ऐसा सारा टाइम जो विचार होगा तो मन के चंगुल से तुम निकल आएगा पर विचार एक मिनट भी छोड़ा तो मन तुमको डस लेगा। या तू मन को डस या मन तेरे को डसे। मन है तुम्हारा दुश्मन। दुश्मन मारे खुशी भये। मन के कहने में कभी नहीं चलो। गुरु को मन दे दियो कि तुम जैसे चलाओ। हम तेरी मर्ज़ी से फिट हैं। अपनी मर्ज़ी से नहीं। देखो, उसको अपनी मर्ज़ी होगी तो मेरी मर्ज़ी से फिट होगा? पर जिसको अपनी मर्ज़ी है नहीं, वह मेरी मर्ज़ी से fit है।

242

6/26 (B) Cont.

भगवान - जहाँ२ मन जाता है वहाँ२ से फिर अपने में टिकाओ। तुम्हारा धंधा कौन सा है - सारे दिन में अभ्यास करें तो कौन सा? जो मन बोले वह करें क्या? अभी कोई गलत कर्म सामने आता है चोरी ठगी वो नहीं करते हैं बाकी जो मन बोलता है वह क्यों करें? उसको क्यों नहीं रोकें? पहले तो गलत कर्म मालूम नहीं था। तुम बोलते हैं सच बोलती हूँ पर तुम्हारे सच से आगे वाले को चिढ़ लगती थी। तो तुम्हारा क्या हक है सच बोलने का। अन्धे को बोलो सूरदास या सीधा अंधा बोलो तो फर्क है ना? ऐसा तो कोई कर्म न करें जो आगे वाले को hurt होवे। सब बात की सुजागी होवे। शब्द अच्छा बोलेंगे - ऐसा नहीं जो किसी के दिल को ठेस पहुँचे। कितनी मनुष्य को अपनी सम्भाल रखनी चाहिए। घर में कुत्ते की कितनी सम्भाल करते हैं बाकी मन कुत्ते के कहने में कितने गलत कर्म करते हैं। वो सावधानी है तुमको?

मन की कितनी सम्भाल करनी है कि किसी के प्यार में न अटक जाए। तुमको घर में किसी से राग द्वेष है तो क्यों? भाई बहन सास देवरानी से कर्म करते हैं फिर पछताते हैं तो वह मूर्ख है जो कर्म करके पछताता है।

हम मनुष्य हैं, देवता हैं, भगवान हैं तो हमारे से कौन सा कर्म होवे जो सृष्टि में आनन्द हो जाए। हमको दुनिया में आके एक भी दुश्मन बनाना ही नहीं है। कोई समझो शहर में रहता है और समझता है मैं change करूँ दूसरी जगह जा कर। वह इधर गंगा किनारे आके बैठता है तो उसके मन में शान्ति आएगी क्या? कितना भी वातावरण change करो, अगर मन से गलत कर्म करता है तो वह कोसता ही रहता है। इसलिए ज्ञान से अपने को गोली लगा कर सुजागी में रहो। फिर कहाँ भी रहेंगे तो बोलो मैंने हरा तुमने जीता। दूसरे को जिताओ। इतनी खून खराबी तुम्हारे शब्द से होती है। तुम्हारे शब्द को तो मैं नमस्कार करते हैं।

243

6/26 (C) Cont.

नौकर भी अगर सेठ को मारता है तो तुम्हारे शब्द से। क्यों दुनिया तुम्हारी शिकायत करती है कि इससे तो मैं गुज़र ही नहीं कर सकता। तुम्हारे लिए अगर कोई बोले कि मैं इनको नहीं रख सकता ये तो order करते हैं तो ये क्या बात है? जो मनुष्य2 की शिकायत करे। एक भी कोई शिकायत करे तो मैं धरती पर बोझ हूँ इसलिए ऐसी सावधानी रखो कि ऐसा शब्द न बोलें जो आदमी पागल हो जाए पर तुम्हारे शब्द से पागल भी सीधा हो जाए।

244

6 अध्याय

२७ श्लोक – जिसके सब पाप नष्ट हो गए हैं, जिसका रजोगुण तथा मन सर्वथा शान्त हो गया है, ऐसे इस ब्रह्म स्वरूप योगी को निश्चित ही उत्तम आनन्द प्राप्त होता है।.

भगवान – ज्ञान के लिए बोलता है जो इससे दिल रखता है सारी प्रकृति से तू ऊपर है। ब्रह्म के सिवाए कुछ बोलो नहीं, सुनो नहीं, देखो नहीं। ब्रह्म की, आत्मा की महिमा करता है – शास्त्र में थोड़ी मिक्स होता है। हमारे मुख से जो सुना उससे नई बात ही नहीं होगी। सब पैगम्बर से उत्तम बात तुम यहाँ सुनेगा क्योंकि मुँह से सुनते हैं। किसने कोई बात पूरी लिखी होगी कोई नहीं भी लिखी होगी। पर इधर आमने सामने तू पूरी समझता है। मेरे को जानो – तुम सब जान लेगा। सब essence इधर मिलता है।.

245

6 अध्याय -

28 श्लोक - इस प्रकार अपने आप को सदा परमात्मा में लगाता हुआ पापरहित योगी सुखपूर्वक ब्रह्म प्राप्ति रूप अत्यन्त आनन्द को प्राप्त करता है।

भगवान - पाप रहित कौन है ? पाप माना प आप जो अपनी आत्मा से दूर है वह पापी है। जो अपनी अपनी आत्मा में रहता है वह भूल करता ही नहीं है। यही अभूलता हमारे में है। हमको guarantee है मैंने कभी भूल नहीं किया। किससे भूल करें ? दूसरा है ही नहीं। जो भूल करता है उसका मन चलता है। अपने मन को समझाता है नींद खराब करता है। पर मैं आत्मा हूँ पहले ही पाप रहित। तुम देह में हैं तो हमेशा पापी हैं। पापी हैं जो भ० को भूलते हैं। ये देह है घोड़ा तू है सवार। तुम्हारा मन सारे दिन घोड़े में पड़ा है - ये खाया, पिया, घूमा। सवार की बात किसने किया - वो बताओ। तू आत्मा के निश्चय में है, कोई कहे तूने भूल किया, तू बोल समझ किससे बात करती है - भ० से बात करती है।

- तूने पाप समझा चींटी मकोड़ा मारना, मच्छ खाना। पर एक ही पाप है जो तुम आत्मा से दूर हैं। भ० को छक के तू खुद को मान कर बैठा है। आतम घाती जगत कसाई। भ० की बात करो - भ० ने ऐसा किया, भ० ने क्या नहीं किया। 24 घंटा इस सुख से भ० में चलेगा कितना fresh होगा। अन्दर कोई गंद जाएगा। ही नहीं। कौवा थूक खंगारा पीता है। कौवे से तुमको हंस रूप बनाएगे। बोलते हैं ये गाली देते हैं। तो गुरु को कुछ बोलना पड़ेगा ना - वाणी में treatment सब हो जाएगा। लायक यहाँ बैठेगा, नालायक चला जाएगा। तुम्हारे से को झगड़ा करे, दुःखी करे, मोचड़ा लगाए तब उसमें आत्मा देख के दिखाओ। तुम्हारा कुछ खा जाए, चोरी भी कर जाए तुम उसमें आत्मा देखो, भ० की इज्जत दे कर बैठाओ। तुम्हारी मेरी आत्मा जुड़ी पड़ी है। कभी टूटी नहीं है तार। हम ही समझते हैं टूटी है। जब link जुड़ जाती है आत्मा से तब एक

246

6/28 (B) Cont.

ही आत्मा दीखने में आती है। आत्मा परमात्मा एक ही बात है पर तुमको पति बेरा स्त्री दिखाई देती है तो तुमने कब जोड़ी? आज सितार होवे - तार टूटी होवे, स्वर निकलेगा? तुमने तार जोड़ी तो किससे जोड़ी। जब प० से जुड़ी पड़ी है तो दुनिया से टूटी पड़ी है। एक ही बात है। तो जोड़ने के लिए बोलता है ऐसा current आ जाए कोई विकार तुम कर ही नहीं सकते। ऐसे ही गीता में लिखा है कि यह धागा है - यही बच्चा है, यही जवान है, यही बूढ़ा है, यही शरीर शान्त है। वही आत्मा माला में धागे की तरह है, वह टूटता नहीं है। तो वह धागा एक ही है - प० में ऐसे तुम मिले पड़े हैं।

6/28 (B). Cont.

प्रेमी – प्र० पाप रहित योगी को खोलिए।

भगवान – योगी किसको बोलते हैं ? जो पाप रहित है। हम अपने से पूछें कि पाप रहित हैं ? कभी तुमने कोई पाप किया है? हमको तो सारी life में याद नहीं है कि कोई पाप किया होवे। ऐसी प्रकृति थी जिसमें पाप करने की ज़रूरत ही नहीं थी। बचपन से घर में सत्संग ही था – वातावरण ऐसा – सादगी, सफाई न पैसे का व्यवहार न तू मैं न जगत से नाता।

जो योगी है वह पाप रहित है। जो भोगी है, जिसको देह में वासना है वह पाप करता रहता है। अभी हमको फिर भी देह याद है कि इसको ठीक से रखना पड़ता है नहीं तो पहले कोई देह में वासना नहीं थी तो पाप रहित ही थे। देह बिल्कुल याद ही नहीं थी कि इसके ये चाहिए वो चाहिए। तो ऐसे ज्ञान लग गया कि समझ में आ गया ज्ञान क्या है। हमने शुरू से देखा जगत है ही नहीं – जगत मन की कल्पना है। मैं कल्पना में क्यों जाऊँ इस लिए हमें कुछ छोड़ना नहीं पड़ा। अन्दर की सच्चाई काम में आती है। अज्ञान से ही देह होते हैं ऐसे हमारी अज्ञान पर नज़र गई तो ज्ञान कठिन नहीं लगा – सहज भाव में हो गया। सहज ही improvement हो गई ये भूल गया कि ये कौन वो कौन। पहले ही तैय्यारी थी। कोई चीज का उधारा नहीं लेते थे। हम भले कुछ भी देवें पर लेवें नहीं। अन्दर में मालूम नहीं था कि मैं निष्काम हूँ या निरिच्छा हूँ। सब को अपने 2 में देखना चाहिए कि हम सब बात में कितना clean हैं। बाकी मेरे को कौन सी cleanness चाहिए।

248

29 श्लोक - सर्वव्यापी अपने स्वरूप को देखने वाला और ध्यान योग से युक्त अन्तःकरण वाला योगी अपने स्वरूप को सम्पूर्ण प्राणियों में स्थित देखता है और सम्पूर्ण प्राणियों को अपने आत्मा में देखता है।

भगवान - सरल बात है ना सर्वव्यापक परमात्मा को हम क्यों छोड़े? अपने में देखें - चाहें तुम सब में नहीं भी आओ - तोभी मेरे में सब पड़े हैं, मैं सब में पड़ा हूँ। एक ही धागे में सर्वव्यापक परमात्मा है। वो कैसे अनुभव करें? जैसे सपना देखते हैं तो बाहर का आदमी तो रात में नहीं आता तेरे पास - तू ही है, तो तेरे में इतनी सृष्टि कहाँ से आती है? तो तू कई सृष्टि देखता है संकल्प में फिर सुबह को उठता है बोलता है वो सपना था। सत्ता तो आत्मा की है मन कितना रूप लेता है। दिन को भी तेरा सपना है पर है अनन्त आत्मा, सर्वव्यापक परमात्मा। पर जब दिल में तू सर्वव्यापक आत्मा नहीं देखता तभी सपने में आता है राग द्वेष भी करता है। दिन में भी सपना, रात में भी सपना। तू जागा कब है? जागेगा तो अपना ही रूप देखेगा। सर्वव्यापी आत्मा कौन देखता है? कोई सन्त है तो दूसरे को असन्त देखेगा। मन खिट पिट करता है - यह ऐसा, यह वैसा, पर चिन्तन में जाता है। तेरा क्या? वो कुछ भी करे - free है। दूसरे की बात क्यों करता है, दूसरा देखता क्यो है - ये है तुम्हारी weakness दूसरे के धर्म में गया तो weak हो जाएगा। पर देखो - सब में हीतो हूँ, मेरी मौज है, मेरी लीला है - सर्वव्यापक देखो तो मौज आएगी पर एक जगह देखा भ०, एक जगह कुत्ता, एक जगह दोस्त, एकजगह दुश्मन तो तुम भूला पड़ा है। जब भूली तू आप को तब भासे संसार।

249

6/29 (B) Cont.

प्रेमी - योग से युक्त आत्मा वाला क्यों कहा है ?

भगवान - जो मैं योग युक्त हूँ तो मैं आत्मा में तुम्हारा सब रंग रूप कल्पित मानता हूँ। मैं अपने में तृप्त हूँ तो मेरे आत्मा में सब भूत कल्पित हैं। वैसे भी बोलते हैं सब ब्रह्म ही ब्रह्म है। मिट्टी भी ब्रह्म है। शंकराचार्य को नदी से ज्ञान आया। मिट्टी कहाँ से आई मिट्टी का कण भी कहाँ से आया ?

250

6 अध्याय

30 श्लोक – जो सब में आत्मरूप मुझ वासुदेव को ही देखता है और सब को मुझ वासुदेव के अन्तरगत देखता है, उसके लिए मैं और मेरे लिए वह अदृश्य नहीं होता।

भगवान – वासुदेव – हर चीज में वास आए देव का। ऐसे नहीं मनुष्य में है कुत्ते में गधे में नहीं। तू नहीं देखता कुत्ता चल रहा है – भगवान ही उसे चला रहा है। एक छोटी चींटी, इतना बड़ा हाथी, भ० ही चला रहा है। सब भ० की लीला है, उसकी मौज है तो हम उसमें दुखी क्यों होवें? तुम पहचानो कि automatically भ० चलाता है। तेरे आगे भ० लख ड्रामा करे, तुम पहचानो ये भ० है पति के, बेटे के, नौकर के रूप में। तुम ड्रामे में दुखी न हो जाओ। तुम जीव भाव में दुखी होते हैं – ये चला गया, ये मर गया, हाय2 में पड़े हैं पर यह लीला है भ० की मौज है सब करते हैं मन के कारण। मन उसे नचा रहा है, हम नाच देखते हैं। जा कर 2/- खर्च कर के picture देखें, तेरी picture देखते हैं – भई ये पागल है कैसे, बोलता है, कैसे चलता है कैसे खाता है। सब पागल ही तो हैं, गल पाया नहीं है। सब तेरे में तू सब में। खाली तुम उसको नहीं देखो पर वो भी तेरे को देखे कि ये भ० है। तुम्हारी वर्तनि ऐसी होए जो ये भ० दिखाई दे। बिल्कुल तेरे को भ० ही सब समझें। कोई आगे न आए कि ये मेरी औरत है, मेरी बेटी है मेरी माँ है इतना तुम्हारे में अपना power होना चाहिए कि मैं भ० हूँ, मैं नीचे आऊँ क्यों? तुम ऐसी practice करो। तुम देहध्यास में रहते हो, माँ को माँ, बेटे को बेटा समझते हैं। ऐसे तो अज्ञानी भी समझता है फिर ज्ञानी अज्ञानी में फर्क क्या हुआ? हम भ० के निश्चय में रहें। कैसे भी करके तुमको सर्वनासी बनने का है – सर्वनास – ये है सन्यास बाकी त्याग करना, यह तो weakness है भाग जाना।

251

6 अध्याय

(A) 31 श्लोक – मेरे में एकीभाव से स्थित हुआ सब भूतों में जो मुझ आत्मरूप को भजता है वह सब प्रकार से बर्तता हुआ भी मुझ में ही बर्तता है।

भगवान – उसके अनुभव में दूसरा है ही नहीं, चाहे वर्ते चाहे कर्म करे चाहे सोजाए। एक शान्त काय स्त्री है, चाहे गहना पहने चाहे बैंक में रखे उसको खातरी है मैं साहुकार हूँ। ऐसे ही ज्ञानी कर्म करे न करे, वह तो free will है क्यों कि आत्मा तो उसको याद है। कर्म अगर होएगा – अच्छा ही होगा जैसे अपने से मैं करूँ। अपने से बुराई थोड़ी करता हूँ? कर्म में बरतता हुआ भी नहीं बरतता है क्यों कि दूसरे से नहीं वर्तन करता है। जभी भी प्यार करता है, बात करता है, अपने से करता है। जैसे मैं अपने देह से बोलूँ उठो तो उठती है इधर खिलाऊँ उधर खिलाऊँ एक ही बात है। लोक दृष्टि से कर्म किया, क्रिया भी किया पर मैंने तो किया ही नहीं। तुम दूसरे को पानी पिलाता है तो याद आता है, दूसरे को मदद करता है तो याद आता है, द्वैत होता है। जभी अपने आप से करता है तो क्या याद होता है? इतनी age में शरीर को कितना लाख खिलाया होगा, सब चला गया याद नहीं है न? पर और को 5/- भी खिलाया तो वो भी याद है। जिसको तू देता भी है सब देहध्यासी है। ऐसे हम देहध्यासी से कर्म बिल्कुल नहीं करते वे जब से ज्ञान सुना पहले दिन से संग छोड़ दिया। चमार से कौन कर्म करेगा? अभी तो लगता ही नहीं कोई ज्ञानी है या अज्ञानी है। कि कोई तू भी है, मैं भी हूँ। अपना आप ही है। खेल खतम। क्यों कि वासुदेव सर्व। अज्ञानी भी मैं क्यों देखूँ? मैं तो अपने आप से प्रीत करता हूँ।

प्रेमी – समता के निश्चय में आत्मा में सच्चिदानन्द को ही भजता है, इसको खोलिए।

भगवान – उसमें वास देख कर पीछे भजता है। मतलब उसकी वृत्ति सद् चित आनन्द में है। वो पहले पहचानता है पीछे कर्म करता है। पीछे उसकी स्तुति करता है। अगर कृष्ण तुमने देखा नहीं तो स्तुति कैसे करती है। मैंने अपनी आँख से अपने अनुभव से

252

अपने विचार से देखा यह भ० है। पहले तुम भ० बकते थे, सुनी सुनाई बात करते थे - christ की, कृष्ण की, नानक की। अभी तुम सामने अनुभव करो। मेरे तेरे में फर्क क्या है? जभी पूरा² मेरे को जानेगा, अपने को भी जानेगा फिर कभी भूलेगा नहीं।

= मैं कुछ भी पाप पुण्य करूँ, तुम्हारा खून भी करूँ तो मेरे को पाप नहीं है - इतना तक मेरे को order है। ब्रह्मज्ञानी के लिए कहते हैं, वह कुछ भोग भी करे तो उसके लिए कुछ नहीं है।

प्रेमी - यह तो ब्र० ज्ञा० की स्थिति है पर हमारे लिए यह बात नहीं है।

भ० - तुम्हारे को तो नम्रता, प्रेम, सब कुछ सीखना है।

प्रेमी - भ० आप में कैसे वर्तें?

भगवान - जभी समान दृष्टि होवे, जभी सम्पूर्ण तू मैं का भेद खत्म हो जाए, कुछ भी न रहे तो मैं तेरे में तू मेरे में हो जाएगा।

प्रेमी - ब्र० ज्ञा० की और जिज्ञासु की स्थिति समझ में आई।

भगवान - मेरे को देखो कि चाहे सब freedom भी है तो भी किस से कर्म करूँ, किससे free चलूँ? ऐसा हमको नहीं मिला जो टोटल Oneness में होवे। पर केवल freedom यह देते हैं कि ब्र० ज्ञा० का कोई कर्म देखना तो दोष नहीं देखना।

प्रेमी - भ० डर लगता है ब्र० ज्ञा० की मत ब्र० ज्ञा० जाने।

भगवान - गत कहते हैं गत। गत है अन्दर, मत है बाहर। समर्थ को दोष नाहीं। मतलब कुछ भी देखो ब्र० ज्ञा० का तो बोलो इसमें कोई राज़ है। गुरु गुत्ते में गया होवे तो तुमको विश्वास होवे कि किसकी भलाई करने गया होगा।

कोई ब्र० ज्ञा० से रीस करता हुआ बोले कि मैं भी करता हुआ नहीं करता तो इसमें बान डालडा हो जाता है। वो योगी समझते हैं कि हमको रुपया, रुपया नहीं लगता, जबान को taste नहीं लगती? देखो कितनी सावधानी चाहिए। सावधानी नहीं रखते तो गिरते हैं। फिर ऐसा गिरेंगे जो हड्डी चूर² हो जाएगी। कितना डा० बुलाओ कुछ तकलीफ रह जाती है - सरल नहीं है।

6 अध्याय

32 श्लोक – हे अर्जुन ! जो योगी अपने शरीर की भाँति सब जगह अपने को समान देखता है और सुख अथवा दुःख को भी समान देखता है, वह परम योगी माना जाता है।

भगवान – हर हालत में सब में वो अपना रूप देखता है। दुःख आता है तो भी वो उसको मौज आती है। भई यह दुःख में ऐसा वैराग आया सुख में यह वैराग्य आया। हर हालत मौज देती है – समता भाव है। समता माना – दुःख सुख एक समान है। गरीबी साहूकारी है नहीं। वो तो देह से अलग है। तो देह की हालत में जाएगा भी क्यों ? तुम ही बोलते है अभी आत्मा है फिर तो दुःख नहीं है, फिर तो सुख भी नहीं है फिर ज्ञानी के लिए तो आनन्द ही है। ज्ञानी का कोई मरता नहीं, कोई मारता भी नहीं है। ज्ञानी के घर सदा आनन्द। ऐसी अन्दर तृप्ति है जो बाहर का उसको आधार ही नहीं चाहिए। बाहर का आधार लेगा तो दुःख मिलेगा। सुख जो देगा वो दुःख भी देगा। अपने निश्चय में रहता है। वह अपने प्रेम में रहता है। जो आप ही देखे उसके पास जगह ही नहीं है दुःख सुख आने की। एक सुई भी इधर नहीं जाएगी। अंदर तृप्ति है और भ० में निश्चय बुद्धि है तो बाहर की दुनिया में हम जाएंगे क्यों ? बाहर से मतलब भी क्या है? बाहर देखना ही पाप है। दूसरा है भी नहीं जो देखें। इस चम की आँखों से काम नहीं लेना। खाली गुरु का चश्मा पहन कर चलो। गुरु का चश्मा है आत्म दृष्टि का। किसी व्यक्ति को अन्दर याद करना माना क्षुद्र बनना। मेरे को मिलना है अपनी आत्मा से और दुनिया में किसी से नहीं मिलना है। क्यों कि नाम रूप अन्दर आता है।

पापी लोग आके मेरी class में बैठे हैं। चमार हैं। जो चमार हैं वो प्रारब्ध बोलते हैं। जो आत्म निवासी है वो प्रारब्ध बोले ? कोई ज्ञान की स्थिति में है जो मुझे बताए भ० अभी मैंने ऐसा निर्णय किया है, अभी इससे ऊपर हैं ? अगर तू झूठ में खड़ा होगा तो कभी नहीं आत्मा को जानेगा। अज्ञानी के लिए प्रारब्ध का पाठ है। संतन के संग मस्तक की रेखा मिटती है। मैं ऐसी healing करूंगा जो तुम्हारे दिमाग से दुःख, दर्द, फ़िक्र, गम, चिन्ता बीमारी का कीड़ा निकाल

254

दूँगा। पर अगर इतनी गुरु में अटूट श्रद्धा होगी तो।

भ• के आगे कोई दूसरा भगवान होता है क्या? वो भ• थोड़े होते हैं। वो एक ही ज्योति निराकार की है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि अपना अपने द्वारा अथाह समुद्र से उद्धार करे। अपने द्वारा आत्मा से आत्मा को जानना। दूसरा है ही नहीं तो शत्रु कहाँ से आएगा।

6 अध्याय 33, 34.

33 श्लोक – अर्जुन बोले, हे मधुसूदन! जो यह योग आपने समभाव से कहा है, मन के चंचल होने से मैं इसकी नित्य स्थिति को नहीं देखता हूँ।

34 श्लोक – क्योंकि हे कृष्ण! यह मन बड़ा चंचल, प्रमथन स्वभाव वाला, बड़ा दृढ़ और बलवान है। इसलिए उसको वश में करना मैं वायु को रोकने की तरह अत्यन्त दुष्कर मानता हूँ।

भगवान – मन को पकड़ कर बैठा है अर्जुन – देहध्यास है ना। वो बोलता है मेरा मन इधर उधर न जाए। अभी कहीं भी मन जाए उसको बोलो यह भी म० है। तुम डरते क्यों हैं? जितना मन को रोकेगा कमजोरी आएगी। आत्मा को पकड़ेगा तो मन चुप होजाएगा। मन देखेगा इसने अपनी गद्दी सम्भाल ली। एक चोर है तुम्हारे घर में, रोज़ तुम्हारी चोरी होवे। एक दिन सेठ को मालूम पड़े तो वो हमेशा के लिए सेठ का नौकर होजाएगा। बस इतनी देर तक मन हमारे पास चलेगा जितनी देर हम अपनी गद्दी पर नहीं बैठे हैं। कई आदमी मन को मारते हैं, वश करते हैं, dissolve करते हैं, मन को बोलते हैं ऐसा नहीं करना, वैसा नहीं करना, मन को पकड़ते हैं लेकिन आत्मा को छोड़ देते हैं। जहाँ मन है वहाँ आत्मा नहीं है जहाँ आत्मा है वहाँ मन नहीं है। तुम अभ्यास करके, realise करके देखो कि तुम आत्मा को पकड़ेगा कि मन को? हम जहाँ बैठा है, उठेगा तभी कोई बैठेगा न? ऐसे ही जहां आत्मा है वहाँ मन बिल्कुल नहीं है। तुम समझते हैं देखूँ तो सही मन क्या बोलता है? तो मन से तू सलाह लेता है। तुम्हारा दिवाला निकालेगा मन। और आत्मा बोलती है मेरा दिवाला कभी निकलेगा ही नहीं क्योंकि सारी सृष्टि हमारी है। तुम्हारा यह मरेगा, मेरे राज में मौत ही नहीं है। No sick, no sin, no death. मेरा कोई होगा तो मरेगा।

तो कृष्ण उसको बोलता है अभ्यास और वैराग्य से तेरा मन वश होगा लेकिन हम बोलते हैं श्रद्धा रखो म० में। म० के वचनों में अगर श्रद्धा आ गई तो श्रद्धावान लभते ज्ञानं। अगर तू

256.

अभ्यास करेगा तो उमर गुज़रजाएगी क्योंकि तेरे पास दुश्मन बैठा है। अगर कोई दुश्मन होवे हमारे घर में, हम उसके आगे क्या क्या कर सकेंगे, चुप करके बैठजाएंगे। ऐसे ही तुम्हारा मन दुश्मन बैठा है। उसके आगे तू क्या करेगा? तो गुरु आएगा जो तुम्हारे उस चोर को निकाल देगा। म० तेरे मन को झुकाएगा, उठाएगा नहीं। आत्मा को उठाएगा। गुरु का काम है, तेरा काम नहीं है मन को वश करना। अगर हमारा मन वश न होगा तो तेरा भी मन वश में न होगा। अगर हमारी गुरु में इतनी श्रद्धा न होगी तो तेरी भी न होगी। जितना मैं हूँ उतना मैं तुमको बनाऊंगा। जिस रास्ते से हम चला होगा उस रास्ते से हम तुमको चलाएगा। जो गुरु के वचन में श्रद्धा रखता है वह तो उसी समय पकि जाता है। गुरु के वचन पर No नहीं करता है। एक वचन में अपनी मिलावट नहीं करता। Living गुरु चाहिए, present में गुरु चाहिए जो आज की ताज़ा खबर तुमको आज fit लगे। यह आत्मा का खाना भी ऐसा है तुम खाली होएगा तो नाश्ता अच्छा करेगा। जिसने निश्चय किया एक-२ बात पर गुरु के सामने फिर ऊपर उठा, वापस एक बात पर फिर ऊपर उठा। निश्चय करते-२ तुम देखेगा तुम्हारा अज्ञान एक दिन होगा भी नहीं।

तू आत्मा होगा तो कहीं भी झुक सकेगा। तू मन होगा तू बोलेगा नहीं, I am right. पर आत्मा जो होगा वो मन को झुका कर चलेगा, बोलेगा - मर। तू मेरा नौकर है। तूने बहुत देर राज किया है। आज म० मिला है अभी तेरी एक भी न चलेगी। तो आत्मा को पकड़ेगा तभी हथियार तुमको मिलेगा। गुरु तुमको आत्मा का हथियार देता है जो मन से तुम्हारी लड़ाई पूरी होती है। तुम्हारी जीत है मन की हार है। आत्मा की जीत है; मन की हार है।

35 श्लोक - श्री भगवान बोले, हे महाबाहो! निःसंदेह मन चंचल और कठिनता से वश में होने वाला है; परन्तु हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! यह अभ्यास और वैराग्य से वश में होता है।

36 श्लोक - जिसका मन वश में किया हुआ नहीं है, उसके द्वारा योग प्राप्त होना कठिन है परन्तु साधन पूर्वक प्रयत्न करने वाले के लिए उस योग का प्राप्त होना सहज है, ऐसा मेरा मत है।

भगवान - कृष्ण मन वश करना कठिन क्यों बोलता है? अगर कठिन है तो इस रास्ते में क्यों आए, साधन तपस्या क्यों करे? वैराग्य भी क्यों लें, काम भी क्यों करें? जो आदमी मुश्किल बोलता है शान उसके लिए बड़ा कठिन है। जो बोलता है, अरे यह क्या है, जब सच्चा गुरु, सच्चा आनन्द, सच्ची वाणी मिलती है तो क्यों न विश्वास करे कि हो ही जाता है। जैसे लगातार कोई भी बात ध्यान करने से हो ही जाती है। ऐसे लगातार ब्रह्म में हमारी वासना है और ध्यान है तो क्यों न प्राप्त होगा। अपनी आत्मा है, प्राप्त की प्राप्ति है। तो यह कठिन नहीं है। और योग क्या है? आत्मा से योग है। योग कोई उठना बैठना करना है क्या? योग है आत्मा से connection. पहले देह से हमारा connection रात दिन था - मैं अच्छा हूँ, सुन्दर हूँ, होशियार हूँ, यह बेवकूफ है, मैं जानता हूँ, यह नहीं जानता है - पूरी देह की बात थी। आत्मा से योग एक second भी नहीं था। आज हमारा आत्मा से योग है, परमात्मा से connection हो गया, गुरु मेरा मिल गया तो काम क्या बाकी रहा? जैसे कोई कड़वी दवा होती है, कोई बोलता है अच्छा sweet देगा, तुम पियो तो सही। अरे पी गया - जी गया। तो पीते जाओ पीते जाओ। तो encourage और discourage भी शब्द होते हैं। तुम किसी को बोलेगा अरे तुम पीला पड़ गया। तो सुन कर वह पीला पड़ जाएगा और मर जाएगा। तुमने मौत किया उसका। अगर बोलेगा, अरे तुम दिन ब दिन चढ़ रहा है, बहुत अच्छे

स्थिति है तुम्हारी तो तुम्हारा क्या जाता है ? तो कठिन बात किसको बोलते हैं ? दुनिया में कोई impossible बात नहीं है। अगर तुमको कोई रास्ता चढ़ाने वाला चढ़ाए, दिखाने वाला दिखाए तो देखने में क्या तकलीफ़ है ? तो यह word हमको अच्छा नहीं लगता है कि यह मार्ग बहुत कठिन है। हम भी जब सत्संग में गए होंगे तो हमको भी किसी ने बोला होगा तू इसमें fit होजा। आज वो ही लोग देख के हैरान होते हैं यह पीछे तो आई नहीं। तो तुम भी अगर इस रास्ते में आए हैं तो आगे बढ़ा कदम, रुकना तेरा काम नहीं, चढ़ना तेरी शान। आगे २ बढ़ते जाओ, पीछे रखा भी क्या है ? पीछे भटक के आए, कितनी मिट्टी छानी, उससे क्या मिला ? पत्थर ठिकर मिला ना। आज किसको सोने की खान मिलेगी तो फिर जाएगा गोबर में ?

मनुष्य क्या नहीं कर सकता है, खुद ईश्वर है। आज ईश्वर अपनी प्राप्ति छोड़ देगा ? अभी जब संग मिला है तो कहीं भी हम पहुँच सकते हैं। पिंगला भी पर्वत चढ़ता है। गूँगा भी ईश्वर गीत बोलता है। तुम right रास्ते पर पहुँच गया है, पक्का करो ना।

= साधन है सत्संग ज्ञान। वैराग्य माना disinterest. मेरे में किसी चीज़ का interest नहीं। क्या चाहिए मेरे को ? सहज में खाना पीना मिलता है, किसी चीज़ में interest नहीं है पर सब से मेरा प्यार है। आपको देखना चाहिए मेरे को भ० की will से मिलता है या मैं चाहता हूँ। मैं चाहूँ, सोचूँ तो यह मेरी कमज़ोरी है। यह शरीर भ० की, घर वालों की अमानत है। कुछ भी चाहिए तो इच्छाओं की line बढ़ जाएगी। दृष्टांत - एक सन्त को किसी ने ज़री की जूती दी। आत्मा seer है, कुछ चाहता नहीं है। सोचता नहीं फिर भी तू अपनी will रख लेता है। इच्छा के पीछे अहंकार है। गुलाम हो जाएगा। ब्रह्मज्ञान में 5 रस छोड़ना पड़ेगा - शब्द रस स्पर्श, रूप गंध।

[illegible]

6 अध्याय · 37. 38

37 श्लोक - अर्जुन बोले - हे कृष्ण ! जिसकी साधना में श्रद्धा है, पर जिसका प्रयत्न शिथिल है, इस कारण जिसका मन अन्त काल में योग से विचलित हो गया है, ऐसा साधक योग सिद्धि को प्राप्त न करके किस गति को प्राप्त होता है ?

38 श्लोक - हे महाबाहो ! संसार के आश्रय से रहित और परमात्म प्राप्ति के मार्ग में मोहित अर्थात् विचलित, इस तरह दोनों ओर से भ्रष्ट हुआ साधक क्या छिन्न-भिन्न बादल की तरह नष्ट तो नहीं हो जाता ?

भगवान - इसको डर लगा कि मैं सत्कर्म भी छोडूं, भक्ति भी छोडूं और ज्ञान में भी पक्का न होऊँ और मैं रास्ते में ही मरजाऊँ तो मेरी गति कौन सी होएगी ? तो भगवान बोला अच्छे रास्ते में कोई नीचे थोडी गिरता है। ऐसा पुरुषार्थ तुमने कई जन्मों में किया है। जनक ने कई जन्म पुरुषार्थ किया तभी आज तरा। कई जन्मो के बाद कोई सिफत होता है। इसमें कोई बड़ी बात नहीं कि जनक मुक्त हो गया, अर्जुन मुक्त हो गया। पर तुम आलस करेगा, भ० के सामने weakness बोलेगा कि यह यत्न चला तो नहीं जाएगा, मैं मर तो नहीं जाऊँगा। तुम पहले ही आत्मा हैं तो पहले ही मुक्त हैं। तुमको यह बात सोचनी नहीं है। तुम चलते आओ, फल की इच्छा नहीं रखो। गुरु छिप के तुम्हारे अन्दर डालेगा। मटके में तुम पानी डालते हैं, मटका थोडी पूछता है आधा भरा, full भरा। शरीर को जड़ कर के इधर बैठ जाओ। बातें बन्द करो। गुरु को डालना नहीं आता है ? तुम सुनते हैं, सुनाते हैं बोलते हैं, तुम लेते हैं। कर्ता सो मरता। तुम खाली आ के बैठेगा तो भर जाएगा। काहे का सोच विचार ? श्रद्धा ही ज्ञान सुनती है तू नहीं सुनता। तू सुनेगा तो भूल जाएगा। श्रद्धा सुनेगी तो बढ़ती जाएगी। जितना भ० की महिमा जानेगा उतना तेरे अन्दर ज्ञान होगा।

260

6 अध्याय 39, 40, 41, 42. (A)

39 श्लोक - हे कृष्ण! मेरे इस संशय को सम्पूर्ण रूप से छेदन करने के लिए आप ही योग्य हैं, क्योंकि आपके सिवा दूसरा इस संशय का छेदन करने वाला मिलना सम्भव नहीं है।

40 श्लोक - श्री भगवान बोले - हे पार्थ उसका न तो इस लोक में और न ही परलोक में उसका नाश होता है। क्योंकि हे प्यारे, आत्मोद्धार के लिए कर्म करने वाला कोई भी मनुष्य दुर्गति को नहीं प्राप्त होता।

41 श्लोक - वह योगभ्रष्ट पुण्य कर्म करने वाले लोकों को प्राप्त होकर उनमें बहुत वर्षों तक निवास करके फिर शुद्ध आचरण वाले श्रीमानों के घर में जन्म लेता है।

42 श्लोक - अथवा वैराग्यवान योग भ्रष्ट उन लोकों में न जाकर ज्ञानवान योगियों के कुल में ही जन्म लेता है। इस प्रकार का जो यह जन्म है वह संसार में बहुत दुर्लभ है।

भ० - अत्यन्त दुर्लभ इसलिए बोलता है कि जो भ० की शरण में आया होगा - साकार भ० की, उसको यह योग भ्रष्ट जन्म मिलेगा। बाकी तो 84 लाख जूनी में जाना पड़ेगा। अगर जिज्ञासु होगा, मोक्ष की इच्छा है तो कृष्ण के पास आ गया, वह योग भ्रष्ट मुक्त भी है। बाकी जो आत्मा की गद्दी पर आया नहीं उसको मन अनेक कर्म करवाता है। अनेक भूतों में, बालों में, 84 के चक्कर में जाना पड़ेगा। तुम लोग बच गया जो इधर आ कर शरण ली। कई लोगों को तुम ज्ञान सुनाओ, कम से कम आत्मा तो सुनें। सब देह सुन के बैठे हैं कि मैं खाली देह हूँ। सब देहध्यास में रहते हैं, किसी ने तुम्हारे में आत्म दृष्टि रखी? तुमने किसी में आत्म दृष्टि रखी? आज तक भी तुमको सवार की बात करने में शर्म आती है। तुम ही judge करो कि मनुष्य जन्म ले कर कितना कर्म करता होगा? Unconscious में ज्ञानी भी भूल करता है क्योंकि उसको भी ज्ञान का अहंकार है। पर तत्त्वज्ञानी को नहीं है।

264

जो तत्त्व को जानता है, आत्मा को जानता है, आत्मा को सुनता है, आत्मा को देखता है उसमें अहंकार नहीं आता। पर ज्ञानी लोग से भ० भूल करवा के पाप करवाएगा। विषयों में जाएगा - बोलेगा खाते हुए खाता नहीं हूँ, पहनते हुए पहनता नहीं हूँ ऐसे ज्ञानी को भ० भुलाता है। ज्ञानी है तो अज्ञानी भी है। ज्ञानी बनना बड़ा पाप है। आत्मा को जानो, आत्मा को देखो। एक मिन्ट भी किसको अज्ञानी न देखना, जिज्ञासु न देखना, द्वैत न देखना। मेरा न दोस्त है न दुश्मन, न पराया न अपना। तुम सोना, मिट्टी देखेगा, अपना पराया देखेगा पर आत्मा देखेगा? द्वंद्व में पड़ा होगा तो कभी शान्ति नहीं आएगी। द्वंद्व से निकला कि सर्व मम रूप है। नाम रूप की बात नहीं करो कि इसका भजन अच्छा, इसका गीत अच्छा। किसी पर आशिक नहीं होना है - तुम्हारा भी turn है। इस रास्ते में हैं तो योग युक्त होगा, गुरु ने झूठ दिखाया है हम कैसे दूर हटेंगे? शरीर का ड्रामा जरूर चलेगा पर हम उसके धर्म में नहीं गए। चाहे शरीर ने कोई भी पाप पहले किया होवे - राजा से ले कर जमादारी, मैं उस पापी के धर्म में क्यों जाऊँ। आज तो मैं आत्मा हूँ। सुबह का भूला शाम को घर आए तो भूला-भूला के बैठेगा? घर तो आया न। शरीर की कितनी भी बात हो वो हमको याद नहीं करनी है। आज तो मैं आत्मा हूँ, भ० हूँ। बीती हुई बात से मेरा कौन सा मतलब। स्वर्ग नर्क है मन का सं. वि.। ख्याल ही स्वर्ग है, ख्याल ही नर्क है, ख्याल ही मुक्त है। अपना ख्याल हमको दुःखी न करे तो भ० को भी ताकत नहीं है हमको दुःखी करने की। तू मान न मान पर मैं हूँ भ०, यह निश्चय तुम्हें पक्का होना चाहिए। अर्जुन भले कितना भी बोले कि मैं जन्म लेगा तो उसको फिर-फिर बोले कि तू आत्मा है, अजर है अमर है। तू जो पहले ही आत्मा है तो अजर अमर है ना। देह की दृष्टि कृष्ण की अर्जुन पर एक मिन्ट भी क्यों गई?

262

6 अध्याय

43 श्लोक – वहाँ उस पहले शरीर में की हुई साधन-सम्पत्ति – समता बुद्धि योग के संस्कार उसको अनायास ही प्राप्त हो जाते हैं और हे कुरु-नन्दन ! उसके प्रभाव से वह फिर परमात्मा की प्राप्ति रूप सिद्धि के लिए पहले से भी बढ़ कर प्रयत्न करता है।

भगवान – योग भ्रष्ट की बात है न कि फिर आकर पुरुषार्थ करता है । हर जन्म में पुरुषार्थ करता है । पर यह नहीं रखना भाव मन में कि मैं योग भ्रष्ट हो जाऊँ । मैं पहले से ही आत्मा हूँ, यह निश्चय करना । योग भ्रष्ट की इच्छा क्यों करें ? फिर खुजली का मर्ज़, दूसरे जन्म में योगी कैसे मिले ? कैसे फिर शुरूआत होवे । बहुत मुश्किल पड़ेगा । इसी जन्म में ही हम ऐसे free हो जाए देह से, मन से, बुद्धि से free. सारे जगत से तू free है।

263

6 अध्याय

44 श्लोक - वह श्रीमानों के घर में जन्म लेने वाला योग भ्रष्ट मनुष्य भोगों के परवश हुआ भी पूर्व जन्म में किए हुए अभ्यास के कारण ही परमात्मा की तरफ़ खिंच जाता है क्यों कि समानता योग का जिज्ञासु भी वेदों में कहे हुए सकाम कर्मों के फल को उल्लंघन कर जाता है।

भगवान - सकाम कर्म हमको बन्धन में डालता है। जिस दिन हमको आत्म जाग्रति मिलती है उस दिन से सकाम कर्म बिल्कुल बन्द, व्यवहार बन्द stop. मैं आत्मा हूँ - सब को जवाब है। जो तुम्हारे आधार पर जीता है, वो तुम्हारे मरने से रोयगा पीटेगा - वो अभी रोए तो आगे चल कर वासना दुःखी नहीं करेगी। अगर तुम ऐसे ही मरेगा - means not Atma, अमर नहीं तो सब तुमको खींचेगा याद करेगा। तो जीते जी तुम सब को बोलो अभी stop. तुम्हारे में हिम्मत होती है, तुम बोलता है अर्जुन ने लड़ाई क्यों किया ? क्यों कि तुमको भी करनी है। कौन मेरा है ? मैं ही नहीं हूँ तो कौन मेरा हो सकता है। इसलिए भ० की शरण लेनी पड़ती है जो कोई मेरा न देखे। पौधे समान दृष्टि आएगी। एक तिनका भी मेरा है तो भी मैं नहीं बोलूंगा - मैं ही तो हूँ। मेरे शब्द तुम बोलेंगे, सब से चतुराई चालाकी करेंगे - मैं ही हूँ² पर heart से नहीं बोलेंगे। मैं को चाहिए ऐसी मौत तो तुम्हारी चीज़ कहाँ रहेगी ? मौत के समय क्या होगा ? ऐसे ही अभी हमारा मौत हो जाए। जैसे बीज डल कर फिर धरती से निकालो, बोलेगा वह तो गुम हो गया, अब वो कहाँ मिलेगा ? ऐसे हमारा जो जीव का बीज है वह "मैं हूँ" धरती में मिल जाए। मैं रहूँ ही नहीं, रहे ही भगवान। बीज से जाकर ज्ञान लियो कि बीज धरती का संग करता है, फिर मरता है। फिर जभी ऊपर आता है फिर धरती में जाता है। बीज ने ऊंचाई कुरबानी है। ऐसे ही ज्ञानी ने ऊंचाई कुरबानी है। जीना नहीं। जो मर गया उसको मौत ही नहीं है। जो जीते जी मर गया वो तर गया। ऐसे ही पुरुषार्थ करते² तुमको एक समय सपने से जाग्रता आ जाएगी।

263

6 अध्याय 45, 46, 47

45 श्लोक – परन्तु प्रयत्न पूर्वक अभ्यास करने वाला योगी तो पिछले अनेक जन्मों के संस्कार बल से इसी जन्म में संसिद्ध हो कर सम्पूर्ण पापों से रहित हो कर फिर तत्काल ही परमगति को प्राप्त हो जाता है।.

46 श्लोक – योगी तपस्वियों से श्रेष्ठ है, शास्त्र ज्ञानियों से भी श्रेष्ठ माना गया है और सकाम कर्म करनेवालों से भी योगी श्रेष्ठ है, इससे हे अर्जुन! तू योगी हो।.

47 श्लोक – सम्पूर्ण योगियों में जो श्रद्धावान योगी मुझ में लगे हुए अन्तरात्मा से मुझको निरन्तर भजता है, वह योगी मुझे परम श्रेष्ठ मान्य है।.

भगवान – योगी क्यों बोलता है? तपस्वी-जो तपस्या करता है, ऋषि, मुनि है पर योगी माना जो आत्मा से connection होवे। एक बार योग लगाए भ०से फिर यत्न करे। बोलता है इतना जल्दी पुरुषार्थ न भी होवे तो भी उसका योग तो परमात्मा से है ना। भले कितना भी कमज़ोर है पर आखिर वो सिद्धि को प्राप्त होएगा। पर जो strong है ऋषि,मुनि है बहुत शास्त्र पढ़ा है, argument lecture करता है, तू बोलेगा यह भी ज्ञानी है, हम उसको ज्ञानी नहीं बोलेगा। गुरु के मुख से जो एक बार catch करे वो हुआ ज्ञान। जो शास्त्र पढ़ा वो clever होगा। clever को अहंकार ज़रूर आएगा। पर ब्रह्म ज्ञान की महिमा है कि इतना ego खलास हो जाती है कि किसी को बोलेगा भी नहीं कि मैंने जाना। कोई भी अंदर में यह समझे कि मैंने पाया – तो "पाया कहे सो मस्करा, खोया कहे सो कूर, पाया खोया कुछ नहीं, ज्यों का त्यों भर पूर।" यह भी जैसे भरा हुआ मटका है, जो डोलाए मान न होता। जो आधा होगा वो छलकेगा अन्दर से। गिरेगा पानी, पर जो full है, भर पूर है। वो तृप्त है, शान्त है, गम्भीर है। उससे कोई आ के निकालता है तो निकाले, वह नहीं देता है। पहले कोई भी आता है उसको परीक्षा ज्ञान है कि भ० है पर देखना कुछ और है। जो देखता है उसका अनुभव है कि सब में एक परमात्मा है।.

265

6/47. B (Cont)

प्रेमी - जो मेरे परायण मेरे में ही लगे रहें इसको खोलिए -

भगवान - जो योगी मेरे मे ही लगे रहें मेरे ही परायण हैं मेरा ही handle हैं, केवल मेरी ही बात करते हैं और कोई जगत नाम रूप की बात नहीं करते वो मेरे भक्त मेरे को ही प्यारा है। मेरा ही ध्यान करता है। लोग ओम का चिन्तन करते हैं पर वो मेरे ही चिन्तन मनन में रहता है। जैसे राम का भक्त हनुमान केवल राम२ ही करता है ऐसे मेरा भक्त मेरे ही ध्यान में रहता है।

266

ॐ

सातवाँ अध्याय

|| ॐ || दादा भगवान के श्री मुख से संक्षेप में –

सातवाँ अध्याय – छुड़ाने मौत और दुखों से छूटने के लिए यह मेरा ज्ञान है। इसके बाद कुछ भी सीखने के लिए नहीं बचता। पहले ज्ञान, बाद में मैं हो तो हूँ। पर मैं क्या यह कोई नहीं जानता।

|| ॐ ||

श्लोक सूची ज्ञान विज्ञान योग

विज्ञान सहित ज्ञान

1) मुझ ऐश्वर्य, बल युक्त आत्म रूप को कैसे जानेगा – सुन.
2) ज्ञान विज्ञान सहित कहूँगा – फिर कुछ जानने योग्य शेष नहीं
3). हज़ारों में कोई यत्न करता – उनमें से कोई जानता
4) आठ प्रकार की अपरा – जड़ प्रकृति
5) जगत धारण करने वाली परा – चेतन प्रकृति
6) सब इन दो से पैदा; मैं प्रभव, प्रलय; मूल कारण हूँ
7) सूत्र में सूत्र की मणियों जैसा मुझमें गुंथा

मूल कारण में की व्यापकता

8) रस, प्रकाश, ओंकार, शब्द, पुरुषत्व.
9) पृथ्वी में गंध, तेज, जीवन, तप
10) सनातन बीज, बुद्धि, तेज
11) कामना रहित बल, धर्म अनुकूल काम.
12) सत् रज तम के भाव-सब मुझसे
पर मैं उनमें और वे मुझमें नहीं.

आसुरी स्वभाव [illegible] भक्त प्रशंसा

13). तीन गुण से संसार मोहित – इस लिए मुझे नहीं जानते
14) त्रिगुण मयी माया बड़ी दुस्तर
निरंतर भजने से उल्लंघन
15) माया द्वारा हरे गए – मुझे नहीं भजते
16) अर्थार्थी, आर्त, जिज्ञासु, ज्ञानी मुझे भजते.

268

17) नित्य एकीभाव अनन्य प्रेम भक्ति ज्ञानी अत्यन्त प्रिय
18) सब उदार पर ज्ञानी साक्षात् मेरा स्वरूप, मुझमें स्थित
19) बहुत जन्मों के अन्त - सब कुछ वासुदेव भजता - अति दुर्लभ

(भक्त प्रशंसा)

20) स्वभाव वश देवताओं को पूजते
21) भक्त की श्रद्धा को उसी देवता के प्रति स्थिर
22) इच्छित भोगों को निःसंदेह प्राप्त करता
23) अल्प बुद्धि - फल नाशवान
मेरे भक्त मुझको प्राप्त

(देवता पूजा)

24) बुद्धि हीन मुझ परमात्मा को मनुष्य मानते
25) अपनी योग माया से छिपा हूँ
इसलिए मुझे जन्मने मरने वाला समझते
* 27) इच्छा-द्वेष, सुख-दुःख से मोहित अज्ञान को प्राप्त
28) निष्काम कर्म, पाप नष्ट, राग-द्वेष द्वंद्व रहित
दृढ़ निश्चयी मुझे भजते
29) मेरे शरण हो यतन करते वे
ब्रह्म, आध्यात्म कर्म को जानते
30) जो अधिभूत, अधिदैव, अधियज्ञ मुझे जानते
वे अन्त काल मुझे प्राप्त
*26) पहले वाले, आज के और आगे के सब को
मैं जानता पर श्रद्धा रहित मुझे नहीं जानते

(भ० को न जानने वालों की निंदा / ,, ,, प्रशंसा)

269

भगवान — जीव माना चलने फिरने वाली चेतन (जीव) प्रकृति। आत्मा शान्त और शून्य है। आत्मा कार माना तुष्णी ,जो बोल न सके, गहरी मौन। जहाँ बात ही नहीं है, वहाँ चुप है, माया देखने मात्र है। इसका वर्णन कैसे करेंगे ? माया तो है नहीं जिसको जानें। है ही परमात्मा - उसको जानना है। मूल कारण को समझेगा तभी प्रकृति को समझेगा। मूल वतन में जैसे पहुँच गया। माँ की बला अन्दर में इतनी पड़ी है। चिमटा है, अंगार पकड़ा है तो हम चिमटा देखें क्या ? कोई इशारा करता है वृक्ष की ओर तो तुम उंगली दिखाते हैं। दिखाने वाला क्या भी दिखाए पर हम वो देखेंगे जो सब में बसा है। ज्ञानी माना जो चारों तरफ artist है।

जब मनुष्य योगी होता है उसमें आकर्षण होता है तो वो जिससे भी बात करे वह भी प्रेम मय हो जाता है। इस ज्ञान में प्रेम बहुत ज़रूरी है। अंदर ऐसा भीगा हुआ हो प्रभु प्रेम में मन जो ऐसी बूँदें टपकें जो अकेले में मन को वस करें। इतना art होना चाहिए जैसे गीले कपड़े में से पानी की बूँदें निकलती हैं, सूखे से थोड़ी निकलती हैं। रूखा ज्ञान बताएंगे तो कोई नहीं सुनेगा। ब्रह्म ज्ञान ऐसा बताना चाहिए जो आगे वाले को रुचि होनी चाहिए। मोटी बुद्धि लगी पड़ी है तो ब्र० ज्ञा० (आत्म०) कैसे समझेगा। रुचि दिलाओ तो उस में रस आ जाएगा। अभी मैं कुछ भी कहूँ पर कोई 2 आदमी दिल की जानता है। परमात्मा रूखा है नि० है, किसको कैसे दिखाएं। जो शरीर में रहते भी नि० आत्मा होकर रहे तो नि० की वाणी बोलेगा। हृदय में प्यार होवे। अन्दर भी निष्कामी होगा। उसके सामने ज्ञान ही आएगा। अन्दर बाहर आकाश है। मन माया में पड़ा होगा तो इन बोलों को समझेगा नहीं। जिज्ञासु निरंतर इसमें मन रखता है तो सब ठीक हो जाता है। लगातार ओम के सिवा दूसरी बात नहीं -- इसमें बनता जाएगा। सत तो एक आत्मा ही है जगत की प्रतीति सब मिथ्या है।

270

7 अध्याय 1, 2

1 श्लोक - श्री भगवान बोले - हे पार्थ ! अनन्य प्रेम से मुझमें आसक्ति चित्त तथा अनन्य भाव से मेरे परायण हो कर योग में लगा हुआ तू जिस प्रकार से (सम्पूर्ण विभूति, बल, ऐश्वर्य आदि गुणों से युक्त) सब के आत्म रूप मुझ को संशय रहित जानेगा, उसको सुन ।.

2 श्लोक - तेरे लिए मैं विज्ञान सहित तत्व ज्ञान सम्पूर्णता से कहूँगा जिसको जान कर फिर संसार में और कुछ भी जानने योग्य शेष नहीं रह जाता ।.

भगवान - इसका मतलब है एक² को तू भ० जानेगा । गुरु को भ० माना, कोई बड़ी बात नहीं की पर चोर चाण्डाल में भ० देखा ? जो बिल्कुल कुछ नहीं जानता उसको भ० जल्दी मिलता है । चतुराई से चतुर्भुज नहीं मिलता । खोज करता है - खोज किसकी करे ? तू ही तो आत्मा है । निराकार का स्वरूप नहीं, वो अरूप है, ज्योति है । अनन्य भाव और तत्व को जानने से भ० को जानेगा । बाकी ध्यान पूजा सब शरीर से है । आत्मा में बाहर के कर्म धर्म नहीं है ।.

271

7 अध्याय -

3 श्लोक - हज़ारों मनुष्यों में से कोई एक वास्तविक सिद्धि के लिए यत्न करता है और उन यत्न करने वाले योगियों में भी कोई एक ही मुझे तत्त्व से जानता है।

भगवान - योगियों में से भी कोई योग प्राप्त करेगा। जैसे गंगा जी में कोई कुछ करेगा कोई कुछ और कोई उसमें मिल जाएगा। सब को मारना पसन्द है मरना नहीं। दृष्टांत - अंगुलीमाल। आत्म ज्ञानी जोड़ता है तोड़ता नहीं है। वह सर्व में पेखे भ०। ब्रह्म ज्ञानी संवाद करता है। जो उससे ज्यादा बोलता है वो खुद ही मर जाता है। याज्ञवल्क ने शिष्य से कहा गाय ले जाओ। एक पंडित ने कहा तुम कैसे ब्रह्म ज्ञानी हैं। उसने समझाया, वह समझा नहीं। बाद में उसने कहा मुझे सूर्य का वर है और उस पंडित का सिर कट गया। ब्र० ज्ञानी का फैसला प्रकृति से होता है क्यों कि वह कुछ नहीं करता। जो भ० को डोरी दे देता है वह अपनी नहीं चलाता है। ऐसे जो नि० से दोस्ती रखता है वह अपनी will नहीं चलाता है। रहे ही नि०। पर तू अपनी will चलाता है। किसी को दान देता है किसी से कैसे चलता है किसी से कैसे। कर्म करना छोड़ दो। नैमतिक कर्म जैसे खाना पीना नहाना, इसमें कोई दोष नहीं। पर जो दूसरों से कर्म करता है उसमें कोई दोष नहीं। गीता में भ० बोलता है असंग रहो। असंगता में, आत्मा में रहने में सुख है। अकर्ता होजाओ। आखिर शान्ति भी किसमें है, करने में या न करने में? एक भी बद कर्म बहुत नुकसान वाला है। सौ दोस्त और एक दुश्मन - तो वो ही याद पड़ेगा। कर्म में ही दोष है (नैमतिक कर्म में नहीं)। गीता में बार बार बोलता है असंग रहो।

प्रेमी - भ० मेरे पर यश का अर्थ क्या है?

भगवान - निकलते तो सब इस रास्ते पर हैं भ० के लिए पर कोई कहाँ कोई कहाँ रुक जाते हैं। तो क्यों? मंज़िल पर नज़र रखें तो रुकें ही क्यों?

7/3 (B) Cont.

भगवान – कितने लोग भ० के पास आते हैं, ऐसे कौन हैं जो जिज्ञासु हैं उनको आत्म जानने की जिज्ञासा है या भ० से मिल कर एक होने की। टके २ की बात ले कर आते हैं। यह भ० के लिए पाप है। सुन २ कर जभी बहुत प्यार जागे तभी ले कर आना।

तुमने साकार भ० समझा है पर भ० को पेट में छिपा कर रखो – सस्ता भ० नहीं करो। करोड़ों में कोई एक है जो खुशी से करे ख्वाब। निरंजन कौन है? तुमने सत्संग क्या बनाया है? हमारे पास मौत है कथा नहीं।

27B

(A) अध्याय 7.

4, 5 श्लोक – पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश - ये पंच महाभूत और मन, बुद्धि, तथा अहंकार – यह आठ प्रकार के भेदों वाली मेरी 'अपरा' प्रकृति है। हे महाबाहो। इस अपरा प्रकृति से भिन्न मेरी जीव रूपा 'परा' प्रकृति को जान, जिसके द्वारा यह जगत धारण किया जाता है।

भगवान – तुम लोग आत्मा जानते हैं पर पुरुष और प्रकृति, दोनों को जानना पड़ता है। प्रकृति को तुम नहीं समझते क्योंकि नहीं जानते कि ये 5 तत्त्व अलग हैं। पर अहंकार, मन, बुद्धि भी जड़ है। उसको सत्ता तू देता है कि मेरे में अहंकार है। किसमें अहंकार है? कभी पुरुष में अहंकार होता है? मैं पुरुष हूँ, परमात्मा हूँ, मेरे में कौन सा अहंकार? पर तू बकते हैं – मेरे में अहंकार है, मन आता है, इच्छा होती है। प्रकृति को अलग कर दो पुरुष से। आठ किस्म की जड़ प्रकृति को टके की भी सत्ता नहीं है। तुम अज्ञान के कारण, बेसमझी में जड़ प्रकृति को सत्ता देते हैं।

और चेतन प्रकृति है कि एक आत्मा के ऊपर ये कवर है। एक अंश में सारी प्रकृति खड़ी है जैसे बीज में दरख्त। सूक्ष्म से सूक्ष्म आत्मा है पर देखने में नहीं आता। पर है जरूर, वो जरूर feel होता है। जैसे पानी में स्वाद, निम्बू में, केले में स्वाद। तू खाता है, feel होता है – खट्टा है, मीठा है। ये है ज्ञान इंद्रिया। इसको मालूम है। ऐसे परमात्मा है पर प्रकृति अलग है। प्रकृति का असर तेरे ऊपर नहीं हो सकता है। जे अहंकार प्रकृति है, जड़ है तो तुम उससे काम लियो पर ये न बोलो मेरे को अहंकार है। तू पुरुष है, आत्मा है तेरे को अहंकार नहीं है। जे ego नहीं होगा तो शरीर चलेगा कैसे। ये जड़ हो कर सो जाए। तो भगवान ने तुम्हारे में हल-चल पैदा किया है – जैसे खिलौने को चाभी दो वैसे प्राण रूपी चाभी देके तुम को चला दिया। तो प्राण चलता है पर तू बोलता है मैं चलता हूँ। आत्मा चलता नहीं, वह शान्त, मौन है। पर प्रकृति जो जड़ है उसको ड्राइवर चलाता है। मैं चलाने वाला हूँ पर चलता नहीं हूँ। जैसे दुकान

274

B) 7/4,5.

को, व्यर को, मशीन को चलाता है ऐसे तू शरीर को भी चलाता है। पर रात दिन तू बोलता है मैं सोता हूँ, खाता हूँ, पीता हूँ आता जाता हूँ। मैं करता है? एक single – capital I देखो – तू चलाता है इस मशीन को।

नहीं बोलो मैं आया, मैं गया। तुम्हारी बोली सच्ची नहीं है। मैं कौन है? तू तो है ही नहीं। तू तो आत्मा है। तू कहाँ भी है, मेरी याद में है तो मेरे पास ही है। आत्मा है ही है, वह move नहीं करती। शरीर move करता है। पर तू ऐसा नहीं देखता है कि मैं शान्त हूँ, दृष्टा हूँ Be still हूँ। अभी मैं शरीर को देखूँ कि कहाँ प्रकृति ले जाती है। पुरुष जो होता है वह भारी होता है। बहुत भारी – अजगर, सांप जैसा। वो एक ही जगह स्थित बैठा है। उस में हल चल नहीं है।

हम काश्मीर जाकर एक कमरे से वापस आ सकते हैं क्योंकि अंदर इच्छा नहीं है – सब देखा पड़ा है। तो कौन घूमने जाता है? तू तो आत्मा है – तू ने ही सृष्टि बनाई है। सब मैं ही बना हूँ तो देखने में क्या मज़ा है? जो हम feel करते हैं ये है – 'है'। है तो 5 तत्व तो क्या हुआ जो नहीं देखा? यह घूमने की इच्छा तेरी वासना है। ज्ञानी जभी घूमेगा तो परइच्छा से। तू ज़ोरों से Taxi motor ले कर आए बोलते हैं आप चलो नहीं तो हम नहीं जाएंगे तो तुम्हारे लिए निमित्त मात्र चलेंगे, पर मेरे अन्दर बिल्कुल शान्ति है। जैसे पुरुष परमात्मा चल-चल में नहीं है, उसके अन्दर सं॰ वि॰ नहीं है। प्रकृति जो है वो प्रकृति में घूमती है। मैं कुछ भी नहीं करता – घूमता नहीं, खाता-पीता नहीं बोलता नहीं। मैं stop हूँ, be still हूँ [illegible] शान्ति को प्राप्त करेगा। जैसे दही जमाते हैं तो 4 घंटा उसको हिलाते नहीं ऐसे तुम शान्त मौन रहो जो मन भी न रहे। थोड़ा time मन चलेगा पर जो मन को आदत डालेंगे उसमें आ जाएगा। पहले मन घूमता था। अभी control में be still करो। फिर तू क[illegible] मन को ले जाएगा। तू शान्त हो जाओ, be still हो जाओ। [illegible] दुनिया अपनी स्थिति पर देखता है क्योंकि मैं ही तो हूँ।

97

(C) 7/4,5 Cont.

5 तत्व से तन है, 5 तत्व से प्रकृति है और मन, बुद्धि, अहंकार है। प्राण जो है वो आत्मा नहीं है। प्राण तो निकलता, आता जाता है। जो चीज़ आती जाती है वो आत्मा नहीं है। मुर्दे से प्राण निकल गया, वासना निकल गई पर आत्मा नहीं निकली। आत्मा सत्ता मात्र है - है ही है - आकाश, ether है, वह कहाँ नहीं है? मुर्दा भी जहाँ है, वहाँ भी आत्मा है। आत्मा की सत्ता है जो मुर्दा भी प्रिय लगता है। मिट्टी भी काम आती है - दुनिया में हर चीज़ काम में आती है - जो प्रिय है वो आत्मा है।

ये भ० समझता है कि तू बराबर आत्मा है पर जो प्रकृति को नहीं जानेगा तो प्रकृति को कैसे चलाएगा। पहले अज्ञानी थे - मालूम नहीं था क्या करना चाहिए क्या नहीं। अर्जुन बोलता है मैं नहीं जानता हूँ धर्म क्या है अधर्म क्या है। तभी वो भ० की शरण ले कर पूरा आत्मा के धर्म में आ जाता है। अपने धर्म में स्वधर्म में आ जाता है। सच और झूठ का मालूम पड़ेगा जब गुरु मुख से वाणी सुनेगा। गुरु मुख नाम जपे एक बार। गुरु के मुख से मेरे को जानना पड़ेगा कि मैं क्या हूँ और मैं कौन हूँ। कृष्ण है bodyless और अर्जुन है आत्मा less - अर्जुन को तो आत्मा मालूम ही नहीं है पर कृष्ण को मालूम है कि मैं आत्मा हूँ। सृष्टि नहीं थी तभी भी भ० है। सृष्टि है तभी भी भ० है। सृष्टि की प्रलय हो जाए तब भी भ० है।

276

भगवान- दो प्रकृति है - एक जड़, एक चेतन। अहंकार से चलते हैं तो हम भी जड़ हो जाते हैं। 5 तत्व पृथ्वी जल, वायु आकाश अग्नि और 3 मन बुद्धि अहंकार यह मेरी प्रकृति है अपरा जड़। अब मन जो कहता है वो करते हैं। दूसरे को भी मन के कहने पर चलाया है। वह भी दुःखी है तू भी दुःखी है इसलिए शान्ति नहीं है - दोनों जड़ बुद्धि में है। आज तक कोई किसी के कहने पर नहीं चला है। माँ बाप दुःखी है बच्चा कहना नहीं मानता। गुरु भी किसको कुछ नहीं बोल सकता क्योंकि गुरु को भी No कर देंगे। उनको लगता है हमारी प्रकृति को हम जानते हैं गुरु क्या जानेगा। भ० तो संन्यासी है। तुमने अपने मन को नहीं जाना माया को क्या जानोगे? मन जड़ है तो कैसे किसको जानेगा? जड़ जड़ से जाने कैसे, और कैसे तृप्ति आए? अभी तक जो मन ने बोला तो राग रोग में ही डाला। मन से चला तो दुःखी सुखी हुआ तो कारण अपना मन ही है। ध्यान समाधि करते है पर भ० को नहीं जानते क्योंकि मन दीवार खड़ा है। देह से साधना करते हैं पर भगवत् प्राप्ति होती नहीं। कोई मन लेने वाला नहीं कोई मन देने वाला नहीं। इसलिए कोई ऊँचा उठता नहीं। सामने ही देखते हैं मन कहता है मैं भी रहूँ गुरु भी रहे। खुद ही ज्ञान स्वरूप है - जड़ चेतन दोनों प्रकृति को जानने वाला पर दोनों से वो न्यारा है। जभी जानेगा तभी उनसे काम लेगा तभी मैं इंद्रियों का मालिक हूँ।।

चेतन अहंकार जड़ के साथ mix होके हम जड़ हो गए। निश्चय करके वृत्ति और सुरती से, अपना जितना बुद्धि खुलेगी इतना मिथ्या लगेगी। आशीर्वाद और दर्शन यह दो शब्द गीता में नहीं लिखे। गीता कहती है जानो - खाली जानो। ज्ञान स्वरूप, तत्व, self को पकड़ो

279

7/ 4, 5, 6. (E) Cont.

तभी आप जड़ प्रकृति से काम ले सकेंगे।
मन जड़ है तो emotion आया क्यों और कहाँ से ?
आठों से तुम काम लियो - तू आत्मा - उसकी सत्ता है।

अध्याय 7.

(A) श्लोक 6 – (अपरा और परा) – इन दोनों प्रकृतियों के संयोग से ही सम्पूर्ण प्राणी उत्पन्न होते हैं, ऐसा तुम समझो। मैं सम्पूर्ण जगत का प्रभव और प्रलय हूँ।

श्लोक 7. – हे धनंजय, मुझसे भिन्न दूसरा कोई भी परम कारण नहीं है। यह सम्पूर्ण जगत् सूत्र में सूत्र की मनियों के सदृश मुझमें गुंथा हुआ है।

भगवान – सारा जगत मेरे में पड़ा हुआ है। मेरे को मालूम है मैंने कैसे सृष्टि धारण किया, प्रलय कैसे किया, पैदा कैसे किया, कैसे नाश किया। मैं आला हूँ। तू नहीं जानता, अपने को ही नहीं जानता तो भ० को कैसे जाने?

तेरे से कोई पूछे ये कर्म क्यों किया – बोलेगा ऐसे ही किया। तुम सच नहीं बताएंगे – इसलिए किया। तुमको शर्म आती है क्योंकि करते ही गलत हो। कर्म उलटे करते हैं – बस बताएंगे कर्म कर लिया। भ० बोलता है मेरे को सब मालूम है मैं कैसे उठूँ, बैठूँ – सारा जगत मेरे में है। मैं जगत में हूँ पर जगत के आदमी मेरे को क्यों नहीं जानते हैं? है भी नजदीक, फिर भी भ० को भुलाते हैं। खुदा है नज़दीक और नज़दीक चीज़ को हम नहीं पहचानते हैं। है तन में पर नज़र नहीं आता है क्योंकि छुपा है। वो ढक कर बैठा है। जैसे कितना तेज सूरज है, थोड़ा बादल होगा, उसको ढक लेगा। बादल बना सूरज से है फिर सूरज को ही ढकता है। जैसे ब्रह्म ही दिखाई देता है पर ये भ० की मर्ज़ी थी कि मैं छिपा रहूँ। भ० छिपा रहता है पर संत अन्दर से ढूँढ कर निकालता है। फिर तुम भी इनका दर्शन करते हैं। लगता है इसमें तो भ० दिखाई देता है क्योंकि जली हुई लालटेन है। तुम सब बुझी हुई लालटेन हैं।

जब आत्म जागृति में आएगा तो तेरे में रोशनी आएगी। ऐसी नहीं जैसी तुम अभी देख रहे हैं पर अन्दर की, search light जैसी। ज्ञानी को कभी कुछ पूछना नहीं होता है – यह कैसे, क्यों? ये नहीं होना था! वो कहता है ऐसा होता है। पर तुम जब मेरे पास आएगा तब तुमको भूल पकड़ाएगा। संत न हों जगत में तो जल मरे संसार। संत न होते तो तुम्हारा उद्धार न होगा।

279

3) 7/6/7 Cont.

सत् प्रगट न होगा। इसलिए धरती पर भ० होना ही चाहिए। कभी कभी धरती कम्पायमान होती है क्योंकि इतना बोझ है देहध्यानी का। सब कुतरन रहेगा जो देह में होगा। खाता पीता भ० से है, होता सब भगवान से है पर मैं मैं करता है। जैसे एक धागे में मोती पड़े हैं ऐसे तुम सब मेरे में पड़े हैं। मैं भी अन्दर देखते हैं, जानते हैं कि तुम मेरे मे मिले पड़े है। मेरे से कोई जुदा नहीं है। तेरे को भी विश्वास आएगा जितना अपनी आत्मा का संग करेगा। तुम बोलेगा मैं भ० के नज़दीक हूँ। पहले क्यों नहीं दिखाई देता था? पहले एक मिनिट मूर्ति में देखा ये भगवान है बस फिर माया में गया। अभी तुमको जहाँ तहाँ लगेगा भ० है, इसमें भी भ० है मैंने गलत क्यों बोला। गलत क्यों देखा। तुम अभी सुजाग है। कभी तू गहरी नींद में। कभी सपने में, कभी बिल्कुल रोशनी में है। ऐसे तुमको गुरु तैयार कर रहा है, नीचे से ऊपर कर रहा है, हमारी बुद्धि विशाल बना रहा है। एक दिन बोलेगा मैं सपने से जागा। जो भी सपने से जागता है अपनी आत्मा से बहुत प्रीत करता है। बहुत प्रीत करता है। दूसरे से प्रीत नहीं करता, पर अपने से, अपना आप ही है। Feel होता है मैं ही तो हूँ। मैं अपने को प्यार करते हैं, तुम दूसरों को प्यार करते हैं। तुम को मालूम है मैं इसको प्यार करता हूँ अपने को नहीं। तो प्यार ऐसा थोड़ई होता है – अनग², टुकड़ों²। किसको प्यार करता है किसको नहीं। सब में मैं ही तो हूँ – ऐसा प्यार दिल में रखो। तो तुम्हारे आगे हालत आएगी नहीं। अभी समझो 5 तत्व हैं इसको भी मैं प्यार करती हूँ। समझो बारिश ज्यादा हुई, बोलेंगे क्या हुआ है। पर तुम बोलेंगे बारिश ने तंग कर दिया, धूप ने तंग कर दिया। तुम कितना बेइमान है। भ० तेरे लिए सब कुछ करता है धूप छाँव, तुम प्रकृति से तंग हैं। स्वभाव ही तुम्हारा ऐसा है। पर हमारा आत्मा का nature है – सब ठीक² लगता है। धूप भी अच्छी, ठंड, गर्मी भी अच्छी। इन प्राणों को सब चाहिए। जो चीज़ भ० से हुई है सब very good है। पर तुम कभी तंग होते हैं – देखो कपड़ा भीग गया,

– ??

(C) 7/6,7 Cont.

बारिश अचानक आ गई। तुम तंग होते हैं क्योंकि अंदर में prepare नहीं है। अज्ञानी में हर बात की prepare नहीं है। अज्ञानी too sure क्यों होता है? प्रकृति changeable है, अचानक कुछ भी हो सकता है। अज्ञानी prepare नहीं है हर हालत के लिए तभी दुःखी होता है - मैं कैसे चलेगा, accident न हो जाए। पर ज्ञानी हर हालत के लिए prepare है, पहले ही घर में कुँआ बना, आग लगेगी तो बुझा देगा। जो पहले ही ready है तो भ० भी डरेगा - बोलेगा यह पहले ही तैय्यारी कर के बैठा है तो बारिश भी टाइम पर आएगी। इसलिए ज्ञान है कौन सी भी बात में हम तैय्यार हैं। जो भी होता है अच्छा ही होता है -

"राज़ी रहो रज़ा में तुहिन्जे सदाई सत्गुरु
कुरकी न दिल के वारो कहें भ. माँ करियां शाल सत्गुरु।"

एक second भी ऐसा नहीं करना - ये क्यों हुआ। ऐसा भी होता है! Nothing new under the sun. कोई भी हालत आए - बोलो सूरज के नीचे कोई भी नई बात नहीं होती। सब ठीक लगता है। आप सत् किए सब सत्। भ० तुमको right लगता है या wrong लगता है? तुम तो भ० को भी सलाह देने वाला है। कितना तुम मगरूर है। कभी भी बड़े आदमी की तुम भूल निकालेगा। पर अपने से भूल निकालो कि क्यों नराज़ होता हूँ मैं, क्यों न ठीक समझूँ - क्यों न प्रकृति से fit होऊँ। ऐसा nylon का मोजा बनो कि मैं सब से fit हूँ। सब जितने भी लोग आएंगे, तुमको कोई खराब नहीं लगेगा। अभी तुमको कोई खराब लगता है क्यों कि तू prepared नहीं है, तुमने सब की प्रकृति को नहीं जाना है। अपने पुरुष पने को भूल गया है। तभी तू प्रकृति से हरते हैं। कोई सेठ नौकर से हारे - शर्म आएगा। हारे क्यों? जीते क्यों नहीं? अपना मन वश है तो सब वश है। मन वश नहीं है तो तू प्रकृति के अधीन है।

गीता में भ० बोलता है मैं प्रकृति को वश करके आया हूँ।

२३१

(D) 7/6.7 Cont.

और तू कर्मों से आया है। तू बोलता है मेरा कर्म है, मेरा जन्म है। मैंने कर्मों से जन्म लिया है - तभी रोज़ दुःखी है। कभी कौन सी ठोकर मिलेगी, कभी कौन सी। कर्म काहे का?

आत्मा को कभी कोई ठोकर नहीं ~~मिलेगी~~ क्यों कि वो कर्मों से ऊपर है। अज्ञानी कर्मों के अधीन हैं। खुद ही तू बोलेगा - ये प्रारब्ध का कर्म भोग रहे हैं। तू अभोक्ता तो नहीं है, अजन्मा तो नहीं है, अमर तो नहीं है। आत्मा अजन्मा, अमर है तो अभोक्ता है। कुछ भोगता नहीं है। तुम बोलते हैं मैं भोगता हूँ। क्या भोगता है? कौन भोगता है? प्राणों की हलचल है। भोग तो है ही नहीं। सब सहज होता रहता है। सब ठीक होता रहता है। तुम द्रष्टा हो के देखो।

अध्याय 7. श्लोक ४, ९, १०, ११.

८ श्लोक – हे कुन्तीनन्दन, मैं जल में रस हूँ, चंद्रमा और सूर्य में प्रकाश हूँ, सम्पूर्ण वेदों में ओंकार हूँ, आकाश में शब्द और नरों में पुरुषार्थ हूँ।

९ श्लोक – मैं पृथ्वी में पवित्र गंध हूँ, अग्नि में तेज हूँ तथा सम्पूर्ण प्राणियों में उनकी जीवन शक्ति हूँ और तपस्वियों में तप हूँ।

१० श्लोक – हे पृथानन्दन, सम्पूर्ण प्राणियों का सनातन बीज मुझे जान। मैं बुद्धिमानों की बुद्धि और तेजस्वियों का तेज हूँ।

११ श्लोक – हे भरत श्रेष्ठ, मैं बलवानों का आसक्ति और कामनाओं से रहित बल हूँ (अर्थात् सामर्थ्य हूँ) और सब भूतों में धर्म के अनुकूल अर्थात् शास्त्र के अनुकूल काम हूँ।

भगवान – सब मैं हूँ। उसकी विशालता देखो। कभी देह वाला ऐसे बोल सकता है? धरती में गुण भी मैं हूँ। आकाश में भी मैं हूँ। जल के रस में भी मैं हूँ। लिम्ब की खटास में भी मैं हूँ। शास्त्र में भी मैं हूँ। बोलता है शास्त्र पढ़ेगा तो राम और कृष्ण की कथा करेगा पर हम उसमें भी आत्मा देखेंगे। पहले आत्मा, पीछे राम, पीछे शास्त्र। तुम शास्त्र से शास्त्र हो जाएगा, story और history पढ़ेगा, mystery नहीं जानेगा। कोई भी essence, जैसे फूल से, तो थोड़ा ही निकलता है। शास्त्र से तत्व निकाल कर आओ। वो है सच, foundation, परमात्मा।

प्रेमी – पृथ्वी में पवित्र गंध मैं हूँ, भ० इसको खोलिये।

भगवान – पृथ्वी से केसर निकलती है। अनन्त चीजे धरती से निकलती हैं – सब में अपनी पवित्र गंध है। धरती तो सब देती है। क्या नहीं देती है? जितने भी भाव उत्पन्न होते हैं वो परमात्मा से उत्पन्न होनेवाले हैं। ३ गुण – तेरे को जो भ० से, प्रकृति से संस्कार से गुण मिले हैं पर तेरे को ये वश करने हैं। जो प्रकृति को वश नहीं करता वह मनुष्य भी कैसे हुआ?

283

3) 7/8, 9, 10, 11 Cont.

शास्त्र कहाँ से आया? पहले निराकार था। वेदों में ॐ मैं हूँ। तो निराकार से ओम हुआ। I am that, not this body. 'वो' में कौन सा नाम रूप है? दिल में नाम रूप है तो आत्मा को कभी realize नहीं कर सकेगा। क्यों कि तू तत्व को, essence को, जानते ही नहीं है। तुम्हारा जुदा² प्रेम है, जुदा² मोह, अज्ञान, है। तो ओम को तू नहीं जानते है। ओम बोलो, देखो किसका face आया? पर जब राम, कृष्ण, ईश्वर बोला तो face आ गया। Face आया तो ज्ञान गया। जब कहते हैं आत्मा है तो कोई भी shape नहीं आता है। सारे जगत की प्रलय। Face, नाम रूप मरना है। उस में मन क्यों रखूँ। मन उधर जाता है तभी face आता है अन्दर में। सपना क्यों आता है? जब तू आत्मा है; गुम नाम है, नाम ही गुम है। रूप रंग नहीं है। तुम 4 दिन में किसी से दूर होगा, बोलेगा मैं जाता हूँ - फिर नाम रूप याद आयेगा। तुम नाम रूप में पड़े हैं, ओम में नहीं पड़े हैं। ओम के अर्थ को जानो। ओम खाली बको नहीं। वेद है ही ओम पर, पीछे story है। वेद पढ़ो, कर्म काण्ड, भक्ति, उपासना सिखाते हैं। पर तत्व को जानो essence को जानो तो चार वेद को तू जानेगा। वेद में त्रिगुण मयी माया 80000 श्लोक है, उपासना - 16000 श्लोक है और 4000 श्लोक तत्व ज्ञान, essence के हैं। कर्म काण्ड तो मनुष्य से natural होता है। तुम्हारा दिल, रुचि कर्मों में है। तुम चुप चाप एक दिन भी नहीं बैठ सकेगा। हम ऐसे बैठ सकते हैं - खाली, बिगर बात, बिगर शास्त्र। सब आधार के सिवाए हम आनन्द में रह सकते हैं। तुम अपने से पूछना बिगर आधार कितना देर बैठ सकते हैं। चाहे भजन गुनगुनाएगे तो भी आधार! दूसरे का बनाया हुआ भजन तेरा थोड़ा है। तुमने उस पर मनन किया, निध्यासन किया? ये सब उधारी बाजी है। वो कन रस है, मनोरंजन है। पर आत्मा का निश्चय कुछ और है।

राजा जनक बोलता है मैंने तीन किस्म के कर्म भी छोड़ दिए।

(C) 7/8, 9, 10, 11 Cont.

तन मन वाणी से। हरि ॐ मुख से नहीं बोलता। तन से सत्संग नहीं गया। मन का संकल्प विकल्प शान्त है। मन को सं. वि. नहीं है तो मन अमन है। ओहम् शिवोहम् बोलना भी जीव का जंजाल है। थकान है। जो अन्दर की तृप्ति में रहता है उसको बाहर का साधन चाहिए ही नहीं। तभी तुम्हारी आत्मिक वाणी निकलेगी जभी तुम इतना साधन रहित रहोगे। अभी सब साधन परा हुआ - न घंटी, न माला है, न जप न तप, न ओम न शिवोहम्, न पुस्तक है। पुस्तक काहेको? संत की महिमा वेद न जानें। वेद भी पीछे हुआ, पहले निराकार था।

मैं भी निराकार से साकार हो के आए तो मेरे को मनोरंजन के लिए कुछ नहीं चाहिए। तभी ये विशालता जो भ० बोलते हैं कि मैं सब में हूँ तो किताब कौन सा उठाऊँ? शास्त्र में भी मैं हूँ। ऐसी कुछ विशालता में आओ जो तुम्हारी बोली आत्मा की आत्मा से निकले।

पर तेरा मन चलता है। मेरी रज़ा में राज़ी नहीं है तभी मन चलता है। जो मेरी रज़ा में राज़ी है उसका मन चलेगा ही नहीं। ये बड़ी बात है कि मेरा मन भ० की रज़ा में, गुरु की मान्यता में, गुरु के इशारे में हम शान्त रहें मौन रहें। गम्भीरता में रहें। अन्दर से ज्ञान निकले पर बाहर का शास्त्र नहीं लें।

285

7/11 (D) Cont.

प्रेमी - आसक्ति और कामना रहित बल मैं हूँ - इसको खोलिए।

भगवान - एक इंसानियत का power होता है एक जानवर का।
ईश्वरीय पावर दूसरा होता है। साहुकारी का पावर दूसरा होता है।
गीता के एक² शब्द पर ध्यान दो। जिस की किस में आसक्ति
नहीं है उसका power might है। और मन में त्याग भावना है।
तुम देखो कइयों को power होता है निर्बल को बल नहीं देता है।
पाप उसका बल छीन लेता है। ईश्वरीय ताकत में नम्रता आती है।
इस में हर एक के लिए दर्द है। तुम बोलेगा यह बहुत सयानी है
हम उसको बेवकूफ बोलेगा क्योंकि आत्मा सहित बात करो।
आत्मा रहित नहीं।

· ईश्वरीय power ever lasting चलेगा जिसमें मनुष्य
एक रस रहता है। तार टूटी पड़ी है परमात्मा से तो तुम्हारा
चाहे बल है चाहे होशियारी, degree है पर fail है। Useless है।
पावर सच्चा है उसको याद करो। हम दर्दी उसको है जो समझे
सब मेरा प्राण है सब की आत्मा मेरी आत्मा है।

287

अध्याय 7

12 श्लोक — (और तो क्या कहें) जितने भी सात्विक, राजस और तामस भाव हैं, वे सब मेरे से ही होते हैं - ऐसा समझो। पर मैं उनमें और वे मुझमें नहीं हैं।

भगवान — मैं दुखी नहीं होता हूँ जभी मैं देखेगा विकारी में भी मैं ही हूँ। चोर में भी मैं हूँ। मैं बोलता हूँ गुण अपना काम करता है। सतोगुण में करेगा तो शान्ति है, रजोगुण में करेगा तो अशान्ति है। तो मेरे को थोड़ी अशान्ति होगी। मेरे में तीन गुण नहीं हैं। अज्ञानी में हैं तो मेरा क्या? मैं उस में हूँ पर जब वो मेरे को जानेगा तो वो 3 गुण से ऊपर होगा। पर जो वो नहीं जानेगा तो इसमें मेरेको दुःख भी नहीं है कि मैं इसके दिल में हूँ फिर भी यह काला मुँह क्यों करता है! इसमें इच्छा विकार क्यों होता है?

जब तक तेरे को देहध्यास है तू मेरी पहेली को नहीं सुलझाएगा। ज़रूर गिरेगा। ये भी मालूम है कोई 50 दफा गिरता है फिर उठता है, चढ़ता है। गिर के फिर सम्भल जाएगा। जब तीन गुण तुझे तंग करेगा तो तू 3 गुण से उठेगा। कोई कहता है मेरे में सतोगुण है। ठीक है, पर शान्ति नहीं मिलेगी। अहंकार जरूर आएगा मैं सत्कर्मी हूँ, बदकर्मी हूँ। मैं mixed कर्म करने वाला हूँ। तो जब तक गुड़-गोबर तेरे में है तो तू देह है। जब निराकार है तो तू गुण रहित है। आत्मा तो गुण कर्म बुद्धि से ऊपर है। जब सतोगुण में तू देखेगा विकार है तभी तू सत्कर्म करना छोड़ेगा। सत्कर्म अच्छा है तो करो जब तक तुमको ठोकर नहीं मिली है। कर्म से ठोकर मिले, अहंकार आएगा तो वो भी तू खुशी से छोड़ेगा। फिर तू आत्मा में तो है ही है। ऐसा कोई टाइम है जब तू बदकर्म करता है तो आत्मा निकल जाती है? तुम आके कभी 2 म० का गुण बताएगा, पर म० में क्या गुण है? देह है क्या भगवान? मैं देह हूँ क्या? जो भी तुम्हारा शब्द निकलेगा वो दूसरे को भ्रम में डालेगा। शब्द में विकार है।

288

7/12 (B) Cont.

भगवान - मनुष्य में तीन गुण हैं। भाव ले के आया, सत्संग सुनता भी है पर तुम्हारा कर्म प्रकृति का कर्म है। भ० आपको किसी बात के लिए रोकते नहीं हैं पर ज्ञान देते हैं कि तुम खुद अनुभव करो और वापस आओ। दुःखी होते तो ज्ञान से अनुभव कर के फिर २ निकलो। भ० ने दुनिया को पहले ही जान लिया था कि उसका ३ गुण है पर तुम पीड़ा को क्यों अपने ऊपर लाते हो ? सत्संग तो है ही है पर अपनी भूल से सीखो। चाहे निष्काम में भूल किया उसके अनुभव से सीखो। और सब झूठ उसका देखो। भ० ने शुरू से ही धोखा नहीं खाया पहले से दुनिया से सावधान थे। तेरा गुण प्रकृति से कुछ भी कर्म करा लेता है तो तू अपनी भूल से सीखो। संस्कार स्वभाव कर्म कराता है अपने अनुभव से जागो। भ० ने same ज्ञान दिया है तुमको चाहे अपने कर्म या अनुभव से पहले या पीछे पर तू अपनी ही भूल से उठ सकता है और ऊँचा चढ़ेगा अपना हाथ जला के।

= प्रेमी - मैं उनमें और वे मुझमे नहीं हूँ - इसे खोलिए

= भगवान - बोलता है अगर मैं उन में होता तो right सलाह देता। मैं उनमें नहीं हूँ माना सामान्य सत्ता में हूँ पर विशेषता में मैं नहीं हूँ। सामान्य जो होता है - सत्ता मात्र, जो use में नहीं लाता है। पर जो भ० को दोस्त बनाता है प्रेम से तो वह उसका मददगार हो जाता है। जैसे कोई दोस्त होता है तो वह समय पर मदद करता है और किसी को बस ऐसे ही जानते हैं। तो परमात्मा उसको पूरी सत्ता नहीं देता है कि यह मेरा gown नहीं है। तू भी सुजाग रह कि यह सतोगुण, अठोगुण मेरे में नहीं हैं। मैं तो त्रिगुणातीत होना चाहता हूँ।

289

7 अध्याय

13 श्लोक - इन तीनों (सात्विक, राजस और तामस) गुण रूप भावों से मोहित यह सब जगत इन गुणों से परे मुझ अविनाशी को नहीं जानता।

भगवान - जो 3 गुण में पड़ा है वह अविनाशी आत्मा को कभी नहीं जानेगा। एक मिनट भी किसका गुण विकार देखा तो आत्मा गई। खिन्न खिन्न भूलन हार। लगातार आत्मा की धुनी अन्दर लगे। और कोई शब्द, story बुद्धि का ज्ञान, होशियारी अच्छी लगे तो समझो ज्ञान नहीं लगा। वासुदेव सर्व। कृष्ण बोलता है त्रिगुणमयी माया मे राग द्वेष, मोह ममता होता है। तभी सब दुनिया तीन गुणों में घूमती है - कभी सत् मे कभी असत में। जो ज्ञानी है वह आप परमेश्वर है। उसमें गुण विकार नहीं है। वह जहाँ तहाँ आत्मा में टिकाएगा। आत्मा को ही मानो, जानो फिर प्रकृति के गुणों में शरीर आप ही चलेगा। तुम्हारी है ही खुशी दूसरा देखने में, अपने को देखने में नहीं। अपनी तिजोरी बन्द है। कोई 10/- खर्च करके आम लेके आए तो तू खुशी से खाएगा पर जभी अपना 10/- खर्च करके अपना आम खाए। वो सच्ची खुशी है। तुम देखो उदार चित्त हैं? ऐसे तुम दूसरे की खुशी लेते हैं। शब्द की खुशी लेते हैं, रस लेते हैं, ये, वो लेते हैं। ये कुत्ते का स्वभाव है। जो कॉंटे में मज़ा समझता है। पर रस स्वयं का, अपनी आत्मा का पियें तब है हमारी हिम्मत। जे दूसरे से मज़ा आया और वो चला गया - पक्का सुख चाहिए - ऐसा नहीं कि सुख आवे या जावे। चाहे गुरु भी सुख ले के आए, आसमान से। ईश्वर भी सुख भेजे, वह मुझे अंगीकार नहीं है - और तुम लोग बोलते हैं - सहज मिला सो दूध बराबर। जभी सुख मिले तो रोना आए कि अभी तक मैं भिखारी हूँ। ये ज्ञान में सुख है या भ० तेरे को भेजे? बाहर का सुख गुलाम करता है पर जो अपना सुख है, एकान्त में अपनी आत्मा से मिले वो सच्चा सुख है। पहले ज्ञान से धुरन होगी फिर fountain खुलेगा। Fountain प्रेम, ज्ञान सब तेरे अन्दर ही है खाली थोड़ा ढकना उतारो तो माल पानी मिलेगा। ढकना है देहध्यास। "मत रत्न जवाहर माणिक जे इक सिख गुरु की सुनी"। एक ही बात गुरु की catch करो तो तुम्हारे दिमाग में ज्ञान

290

7/13 (B) Cont.

भरपूर है। आत्मा है तो तू अज्ञानी कैसे है? तू आत्मा है तभी तो मेरे को catch करेगा। तू अपनी बात catch करता है, अपने देश की बोली सुनता है। रस स्वयं का अब मैं पीता हूँ। कोई मेहनत करेगा तो अन्दर का fountain बहेगा। पर तुम डर जाते हैं और बाहर के सुख में फिर२ जाते हैं। दिया बुझता है फिर सत्संग में जलता है। एक वारी इसमे मेहनत करनी है पीछे परीक्षा नहीं है - पीछे घूमने जाएंगे।.

कृष्ण भ० को यह शिकायत है कि ये लोग भ० को नही जानते तीन गुण में बह जाते हैं। मनुष्य को इतना अंध है जो ३ गुणो में बहता रहता है।

284

7 अध्याय

(A) 14 श्लोक - क्योंकि यह अलौकिक अर्थात् अति अद्भुत त्रिगुण-मयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है; परन्तु जो केवल मुझको ही निरंतर भजते हैं वे इस माया को उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसार से तर जाते हैं।

भगवान - जो भ० की शरण लेगा वो तरेगा - त्रिगुणमयी माया से पार करायेगा जो माया touch नहीं करेगी। तू खुद ही बोलेगा माया कहाँ है भ० 2 त्रिगुणमयी माया में पहले घूमते फिरते थे अब तू आत्मा में रहते हैं। जितना भ० तुमको भ० के निश्चय में डालेगा उतना तुम माया से ऊपर होगा। तुम लोक का नहीं, भ० का रहेगा।

उसको जो capital I है, छोटी i में नहीं है। शरीर में ही मैं, यह घोरा रोग है, जन्म जन्मान्तर से ले कर आया है। चूहा, बिल्ली कुत्ता मनुष्य सब में अहंकार है कि मैं हूँ। तू नहीं है-पर भ० है। भ० उसे कह सकता है जिसने अपना मौत किया है। पहले शरीर की हौमैं, मैं मेरा अहंकार छोड़ना है। जब मैं हूँ नहीं तो मेरा कहाँ से आया? तू है निर्बल, वो है बलवान। तुमको किसी ने नहीं बोला कि तू कुछ भी नहीं है। सब ने बोला - तू जीव, साधना करो। कौन साधना करेगा? "इस देह से बहु साधन करे पर मन ते कभी न मिथ्या तरे।" शरीर जैसी विकारी चीज दुनिया में नहीं है। जो भी इस विकारी शरीर से साधना करेगा वो भी विकारी हो जाएगा। तीर्थ, तप, दान, जप करो हौमैं पाप बढ़ती जाती है। "और जो जाने मैं कुछ करता तब लग गर्भ जून में फिरता। तो पहले foundation को किसने नहीं जाना। पहले मूल कारण परमात्मा को, तत्त्व को, सच को जानो पीछे वेद शास्त्र जा कर पढ़ो। पढ़ेगा तो तू खाली अनुभव लेगा - मैं तो आत्मा हूँ ॐ तत् सत्। ॐ ही तत् है सत् है बाकी सब नाम रूप मिथ्या है। जो दीसे सो नाशवन्त। भ० क्या है? नि० ज्योति है। "आदम को खुदा मत कहो आदम खुदा नहीं पर खुदा के नूर से आदम जुदा नहीं। माना दो है - भ० भी है और शरीर भी है। शरीर changeable है, भ० एक रस है। जो change नहीं होता वो ही

292

7/14 (B) Cont.

शरीर changeable है इसलिए वह भ० नहीं है। वो प्रकृति, शरीर, माया है। हर चीज में change है। आज नया पलंग लाओ, कल old हो गया। उसमें नया पुराना होता है। सब्जी भी तीन दिन में बदबू हो जाएगी – change हो गई। भ० हर जगह है पर change जो होती है वह माया है। खाली भ० में change नहीं है, परमात्मा एक ही है। One became many. एक से अनेक हुआ तो भ० खुद ही बढ़ गया। ये नहीं कि प्रकृति भ० से जुदा है। आगे चल कर देखेगा every thing is God पर पहले तुमको distinguish करना पड़ेगा। जब तुम ब्रह्म स्वरूप हो जाएगा – निर्विकारी – तो तू ब्रह्म देखेगा। जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि। तुम्हारी आँखों में रोशनी आ गई तो तुम वो ही देखेगा।

= शरण तो सब लेते हैं लेकिन % का फर्क है। तुम्हारे को कोई अपने वला पकड़े, भुलाने आए, तुम no करो। मनुष्य free है। मनोरंजन में रहता है तो बाहर उसको रस आने लगता है। तुम्हारे को भ० से link जोड़ कर आगे बढ़ना है। दुस्तर शब्द मुझे पसन्द नहीं है। हमको आदत ही नहीं है छोटा और बड़ा देखना। तू किसका कर्म देखता है तो तू अंधा है। अंधा देखता है जगत। आँख वाला देखता है भ०।

= संत साधु को सब था। है पर माया के विकार कितने हैं जो ढक लिया है क्यों कि ये पाँच विकार से नहीं उठे हैं। मंदिर ठिकाना, रोचक वचन से सब ढके हुए हैं।

298

7 अध्याय

15 श्लोक – माया के द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है ऐसे आसुर-स्वभाव को धारण किए हुए, मनुष्यों में नीच दूषित कर्म करने वाले मूढ़ लोग मुझको नहीं भजते।

भगवान – गीता का ज्ञान सरल में सरल है। कर्मकाण्ड, भक्ति पाण कठिन है। कर्म से किस को राज़ी करेगा, किस को नहीं। आज कोई, यज्ञ करेगा तो कोई न कोई नाराज़ होगा। ज्ञान सुगम है पर देने वाला सरल होवे, निष्काम होवे। जो देने वाला hypocrite है, उसके अन्दर लगी है – मैं लूटूंगा, अपना नाम famous करता है, कभी क्या बनाता है कभी newspaper बनाता है - अपनी कीर्ति के लिए। सब गुरु कीर्ति के lust में पड़े हैं। तो वो कभी भी सत का रास्ता न देगा न लेगा। पर जिसने सरल में सरल लिया वह सरल कर के देता है। कोई श्रद्धा रखे तो ज्ञान आने में देरी नहीं है। हम कुछ भी कर्म नहीं करते पर ज्ञान यज्ञ तो होता है ना। वो भ्रष्ट है जो ज्ञान ले के यज्ञ न करे। यज्ञ न करेगा तो आलस को प्राप्त होगा। इसलिए यज्ञ कर के खाना है।

= आसुरी स्वभाव वाले भ० तक कैसे पहुँचेंगे? आसुरी माना रस और अहंकार, चाहे उसने ज्ञान सुना होवे। रास्ता बिल्कुल बन्द है। इस quality को मैं ज्ञान दे नहीं सकता। माया का परदा और रस आएगा और यह उसको स्वाभाविक है। उसको मैं पहुँच नहीं सकता।

= आसुरी स्वभाव वाले को भ० चाहिए नहीं। यह ज्ञान में आके हम अपने आसुरी स्वभाव को, विकारों को इतना दखें, अन्दर निर्मल बनें। देखो अपने अहंकार का बीज खतम हुआ या अहंकार की हवा आती है मन में। देखो तुम्हारा power गया है, स्वभाव वाला power खतम हुआ है? इस स्वभाव के कारण ज्ञान में आ के तुमको power मिलता है पर इस स्वभाव वाले power की हस्ती को तुम खतम करना नहीं चाहते। बच्चे जैसे हो जाओ। मन ही माया है। वो ही रुकावट है। Totally अपने 5 विकार dissolve करो। नीचे की कुर्सी पर बैठो जो कोई भी तेरे से बात कर सके same level पर, इतने धीरज में बैठो। यह ज्ञान बहुत परहेज़ का है।

2921

७ अध्याय 16, 17, 18.

(A) 16 श्लोक - हे भरतश्रेष्ठ अर्जुन, उत्तम कर्म करने वाले अर्थार्थी, आर्त, जिज्ञासु और ज्ञानी - ऐसे चार प्रकार के भक्तजन मुझको भजते हैं।

17 श्लोक - उनमें नित्य मुझमें एकीभाव से स्थित अनन्य प्रेम भक्ति वाला ज्ञानी भक्त अति उत्तम है, क्यों कि मुझको तत्त्व से जानने वाले ज्ञानी को मैं अत्यन्त प्रिय हूँ और वह ज्ञानी मुझे अत्यन्त प्रिय है।

18 श्लोक - ये सभी उदार हैं, परन्तु ज्ञानी तो साक्षात मेरा स्वरूप ही है - ऐसा मेरा मत है। कारण कि वह युक्त आत्मा है और जिससे श्रेष्ठ दूसरी कोई गति नहीं है, ऐसे मेरे में दृढ आस्था वाला है।

भगवान - ज्ञानी आत्मा है। ये ज्ञानी नहीं जिसको ज्ञान का लक्षण होवे पर ज्ञानी माना जाता, Not body. ज्ञानी भी ब्रह्म की शरण लेता है क्यों कि वो शरीर में रहता है और ब्रह्म तो निर्विकारी है। तो जिज्ञासु भी है, अर्थार्थी (- संसार के पदार्थों के लिए भजने वाला -) सत्संग से मेरा बहुत फायदा है - गृहस्थ दुकान अच्छा चल रहा है। तुमने मीठी बात बोला, सब को ठग लिया, इसलिए ज्ञान लिया कि मैं गुरु बनूँ, ज्ञानी बनूँ या बीमारी उतर गई। फिर वो सत्संग छोड़ देता है कि मेरा काम पूरा हुआ। तो ये हुआ स्वार्थी आदमी, पर जो मोक्ष की इच्छा करता है और बोलता है इसजन्म से छूट जाऊँ। बोलता है जन्म मरण नहीं चाहिए, तत्त्व को जानना है। भ॰ बोलता है यह सहज योग है। जो तत्त्व दर्शी से लेगा उसको ही मिलता है बाकी को नहीं। फिर उसमें कठिनाई कौन सी है? शर्म करना तेरा धर्म नहीं है। भ॰ ने सब कुछ दे दिया है, वह क्या नहीं कर सकता है।

ज्ञानी को लगातार मन भ॰ में रखना है। एक second भी भ॰ से मन न निकाले। तभी भ॰ को साकार में आना पड़ता है। नि॰ का ज्ञान जे तू आप ही लेगा तो थक जाएगा, माया छोड़ना मुश्किल है। । रुपये का दो रुपया मिलेगा तभी । रुपया छोड़ेगा। बिन देखे महबूब को जौबन कौन लुटाए। महबूब मिले नहीं और हम दुनिया का भी सुख छोड़ें, यह जो होगा नहीं। तुमको मालूम पड़ेगा कि ज्ञानी होने में कितना रस है।

295

7/16, 17, 18. (B) Cont.

कुछ छोड़ना नहीं पड़ेगा छूट जाएगा - Natural.

ज्ञानी मेरे को याद करता है मैं ज्ञानी को याद करता हूँ। मैं ज्ञानी के दिल में 24 घंटा हूँ। ज्ञानी माना कर्म सहित। निष्काम कर्म भी ज्ञान सहित होना चाहिए। ज्ञान होवे कि मैं सेवा अपने से ही और कर्म अपने से ही करता हूँ। जो दूसरे से कर्म करता है वह निष्कामी थोड़ी हुआ? निष्काम कर्म बड़े भय से तुमको बचाएगा। तुम थोड़ा शुरू करो, और की भलाई के लिए जियो।

जो सामने कर्म आए वो है निष्काम कर्म। तुम जाके करना नहीं। करेगा तो doer हुआ। सामने कर्म आए - नहीं करना आलस है। ज्ञानी के दिल में 24 घंटा भ० है तो कर्म भी अच्छा होगा उनसे। जो पापी है, आत्मा नहीं जानता, वो कर्म करता है स्वार्थ से, दुःख है उसमें और निष्काम में शान्ति है। तुम फल की इच्छा छोड़ो तुमको जरा भी थकान नहीं होगी। क्यों कि भ० ही ले के आया, भ० ही ले के जाता है। अज्ञानी कितना भी कोशिश करे, मैं उनके पास नहीं रहता हूँ क्यों कि ज्ञान उसके पास नहीं है। ज्ञान ही जहान है, जहान ही ज्ञान है। अज्ञानी ने मेरे को बसाया ही नहीं है - ऊपर ही बोलता है मैं हूँ ऊपर ही बोलता है अच्छा भ० ने किया। पर अन्दर में ego है कि मैंने किया। भ० तो तेरा दिल देखेगा कि तू कितना pure है।

= जो गुरु की भक्ति करता है उसको सब की भक्ति करने में देर नहीं लगती। पहले गुरु से प्रेम होता है। वो गुरु को प्यार करने के सिवाए रुक नहीं सकता। हमारा प्राण भी गुरु के सिवाए नहीं उठता था। यह गुरु को खातरी थी, घर वालों को भी खातरी थी यह गुरु के सिवाए कुछ स्वीकार नहीं करेगा।

= पूरा वैराग्य है तब ज्ञान है। थोड़ा भी वैराग्य कम है तो माया घेर लेती है। भगवान से प्यार है तो जुदाई नहीं लगती। इतना मेरे को गुरु की तृप्ति है कि नाम लेना भी अच्छा नहीं लगता। जैसे पानी में पानी समाय गया। पर सुबह का दूध शाम के दूध में डालेगा तो फट जाएगा। दूध से दूध नहीं मिला। बात करने में होशियार हैं पर मरने में नहीं। मोह प्यार का आया तो बुद्धि नाश। तत्त्व की बात सब करते हैं पर मरता कौन है?

7/16,17,18 (?) Cont

= पहला गुण इस ज्ञान का है कि मैं अपने से फिट हूँ तो मैं सब से फिट हूँ। एक भी शिकायत दूसरे की नहीं होगी। सत्य सरलता जिसके दिल में है उसमें भी भ० बैठ सकता है। अपने विकार को जला दो। एक दफा जो मन को मोड़ा तो सब कुछ हो गया। समय अनुसार चलो जैसे गुरु नानक के टाइम मुसल्मानो का इतना झगड़ा था कि वह बहुत नम्रता में था और ज्ञान भी नम्रता का था। Jesus ने टाइम को नहीं जाना तो शब्द बोल कर – राजा का भी राजा – उस शहर के राजा को क्रोध दिलाया तभी तो crucify किया। यह सब स्वभाव है तभी वो माया से हारा।

राजा जनक का निश्चय क्या है? अपने आप से बैठा, अपने साक्षी के आधार में। तुम [illegible] हैं अपने रस में. गुरु क्या करे? Be still और अपने निश्चय में रहो और देखो क्या हो रहा है? जो हो रहा है उसको observe कर के तुम ही झुको। तुम अपने से उठो, मन से उठो। तू अपने निश्चय से समझ, अपनी प्रकृति से समझ और पहचान अपनी भूल।

= ज्ञान उठाता है गुरु के आदर्श से पर ज्ञान और भक्ति भी बोला है। तुम्हारे अन्दर changes रोज़ आना चाहिए। गुरु पहले, पीछे है ये निश्चय करो पर change खाली गुरु से हुआ है। ज्ञान सब कुछ नहीं है – भक्ति भी बहुत ज़रूरी है।

प्रेमी – उसको अति उत्तम क्यों बोला है?

भगवान – इधर इतने सब योगी बैठे हैं, इनमें कोई उत्तम, कोई अति उत्तम है। वह कौन है? जो केवल भ० के स्वरूप में रहे, ध्यान में रहे। उनके हृदय में केवल भ० होवे। Side में माया टका भी नहीं होवे। जो अपने खाने के लिए भी नहीं रखते। उनको पक्का है कि मेरी थाली मेरे पीछे घूमेगी। तेरी रोजी तुझको ढूँढे। तुम बताओ अंदर में कौन सा दिलासा है कि माँ बाप या भाई खिलाता है या फिर कहेगा मैं खुद ही कमा कर खाता हूँ। मनुष्य सारी उम्र खाता भी है और चिन्ता भी करता है। Self वाला विश्वास में है जहाँ चार जने खाएंगे वहाँ पाँचवा भी खाएगा। उसको taste lust नहीं है। तंदरुस्ती उसके हाथ में है

२९७

7/16,17,18 (D) Cont

उसका तो खाना भी सूक्ष्म है।

298

7 अध्याय 19, 20.

19 श्लोक - बहुत जन्मों के अन्त में तत्वज्ञान को प्राप्त पुरुष, सब कुछ वासुदेव ही है इस प्रकार मुझको भजता है, वह महात्मा अत्यन्त दुर्लभ है।

20 श्लोक - उन 2 भोगों की कामना द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है ऐसे वे मनुष्य अपनी 2 प्रकृति से नियंत्रित हो कर (देवताओं के) उन 2 नियमों को धारण करते हुए, उन 2 देवताओं के शरण हो जाते हैं।

भगवान - जुदा 2 देवता को पूजते हैं तो क्या मिलेगा ? परजो अनन्य भाव से मेरे को जानता है, भजता है, मैं उसमें, वो मेरे में है। दुनिया में कर्मकाण्ड, भक्ति उपासना भी है पर वो मेरे को नहीं जानता है। जोजानता है वह वासुदेव सर्व करके देखता है। वो योगी कौन है? जब बहुत जन्म का अन्त है, आखिरी जन्म है तब उसको योगी मिलता है। तभी योग युक्त होता है, इतना pure होता है तो वो पहचान सकता है भ० को। पर पापी, जो देवता की पूजा करता है सकाम के लिए, फल की इच्छा के लिए वह भ० को नहीं पहचान सकता। परजो मेरे परायण रहता है, अनन्य भक्ति करता है सब में वासुदेव देखता है, हर वक्त मेरे को जानता है। तुम देखो जब आत्मा जानते हैं तो भूल नहीं सकते। जैसे जिन भूत लग जाए ऐसे आत्मा गुरु को एक बार याद है बोलता है - भ० है, मैं नहीं हूं। इस भाव में रहने से तुम्हारे से कोई विकार भी होगा ? किसको तुम ठगेगा या कोई तुमको ठगेगा? तभी बोलते है "ना वो मरे न ठगे जाए जिसके नाम बसे मन माय।" हर चीज में वास है देव का। तुम जानो वास देव कहाँ नहीं है ?

299

7 अध्याय

२१ श्लोक – जो जो भक्त जिस २ देवता का श्रद्धा पूर्वक पूजन करना चाहता है, उस २ देवता के प्रति मैं उसकी श्रद्धा को दृढ़ कर देता हूँ।

भगवान – जो फल की इच्छा वाला है वो उस २ देवता को मानता है। उससे फल मिलता है पर मुक्ति नहीं। हिन्दु का भ० कितना है उतनों की पूजा करता है। पर फल देने वाला तो मैं ही हूँ ना। वो तो clerk है। काम तो boss से है। तुम भले कर्म भक्ति करो पर भ० ऐसा सच्चा है जो तेरे देह में बैठा है, वो वहीं वहीं श्रद्धा दे के फल देगा। ताकि तुम्हारी रुचि भले उस देवता में रहे, एक दिन तू सपने से जागेगा। पर भ० तुमको नास्तिक नहीं बनाएगा कि तू देवता की पूजा न कर। कर पर नाशवन्त पदार्थ मिलेगा।

—

300

7 अध्याय

22 श्लोक - उस श्रद्धा से युक्त हो कर वह मनुष्य उस देवता का पूजन करता है और उस देवता से मेरे द्वारा ही विधान किए हुए उन इच्छित भोगों को नि:संदेह प्राप्त करता है।

भगवान - फल उसको मिलता है पर तू बोलता है भ० नहीं है, फलाने देवता में है। इसमें भी है उसमें भी है, पर जो मिलता है वह नाशवन्त फल है। जो मेरे से मिलेगा वो है अमर फल। पर तुम clerk से काम उतार कर आएगा पर ठप्पा नहीं लगेगा ऊपर। Officer तुम को पूरा ठप्पा लगा कर पक्की receipt देगा। Clerk तुमको receipt कच्ची देगा। कच्चा फल देवता से ले कर आएगा पर पक्का फल भ० देगा।

201

7 अध्याय -

२३ श्लोक - परन्तु उन अल्प बुद्धि वाले मनुष्यों को उन देवताओं की आराधना का फल नाशवान् ही मिलता है। देवताओं का पूजन करने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं और मेरे भक्त मेरे को ही प्राप्त होते हैं।

भगवान - मेरे को भजने वाला full रहता है और देवता का पूजने वाला अतृप्त रहता है। जब सपने से जागेगा तो मालूम पड़ेगा तुम सपने में गए थे। तुम सपने का मज़ा लेते हैं हम जागने का मज़ा लेते हैं। सपने से थकेगी तो मेरे पास आएगी।

भ० तो नि० है invisible. गुरु नानक बोलता है सिमर३ सुख पाए। प्रभु का सिमरन सीधा नि० में ले जाता है। वो प्रभु पकड़ाता है। तत्त्व को जानो - उसको realise करो, उसको प्यार करो। किसी की body में नहीं जाओ। Self realize करो तो God realise हो जाएगा। तू मन के अधीन है पर मन तेरा नौकर है। भ० तू ज्योति स्वरूप है। अपना मूल पहचान। अपनी आत्मा को जानेगा तो सब को जानेगा।

302

7 अध्याय

२५ श्लोक - बुद्धि हीन मनुष्य मेरे सर्व श्रेष्ठ अविनाशी परम भाव को न जानते हुए मन इंद्रियों से परे मुझ सच्चिदानन्द परमात्मा को मनुष्य की भाँति जान कर व्यक्ति भाव को प्राप्त हुआ मानते हैं।.

भगवान - उनकी बुद्धि ऐसी है, देह बुद्धि है तो अव्यक्त परमात्मा को कैसे जानेंगे ? मन बुद्धि से परे आत्मा है। आत्मा को जानने के लिए मन बुद्धि रुकावट है। हम फिर २ भ० को देह समझते हैं पर जब मन बुद्धि गंवाएंगे तो उस mystery को जानेंगे।

वो बोलता है मैं हूँ भी हमेशा पर कोई २ जानता है। जिसकी बुद्धि शुद्ध, पवित्र होगी वह मेरे लिए ही यत्न करता होगा। तभी मेरे को प्राप्त होगा। जो नाशवंत पदार्थ के पीछे होगा उसकी बुद्धि जरूर छोटी होगी, मूढ़ होगी। जब तुम देवता की पूजा करते थे तो उधर क्या माँगते थे ? "क्या माँगू कुछ थिर नाहीं" फिर हाथ जोड़ कर उधर क्या माँगते थे ? आज तुमको मालूम पड़ा है कि हम कैसे अंधेरे में थे - हीरा छोड़ कर काँच में पड़े थे।.

भ० का हर कर्म दिव्य है। उसे साधारण बुद्धि से नहीं जान सकते। उसे जानने के लिए भी उसी से नेत्र लेना पड़ेगा तो उसकी दिव्यता जानेंगे।.

303

7/25 (B) Contd.

मैं मर जाएगा। तुमको सब का नाम याद है तो बाकी भुलाएगा क्या? तुम अपना नाम भी भुला दियो। कोई भी बात निकले तुम एक दम आत्मा परमात्मा की बात कर दो ना कि कौन आया कौन गया। तुम इधर आया है कर्म काटने और पाण तुम कर्म बनाते हैं? ये दुःख की बात है। माया में भी दूसरे तीसरे की बात किया, इधर भी सतोगुणी माया। History में mystery चली जाएगी।

2.5

7 अध्याय

25 श्लोक - जो मूढ़ मनुष्य मेरे को अजन्मा और अविनाशी ठीक तरह से नहीं जानते (मानते), उन सब के सामने योग माया से अच्छी तरह छिपा हुआ मैं प्रकट नहीं होता।

भगवान - भ० को ज्ञान से जानना चाहिए पर तुम शरीर से भ० मानते है। तभी बोलता है तत्त्व से, essence से जानो। Essence माना स। पहले शक है कि तू कौन है। जब तक अपने को भ० नहीं जाना तब तक गुरु को भी भ० नहीं समझना। तभी कृष्ण कहता है मैं अपनी योग माया से प्रकट हुआ हूँ पर कोई मेरे को अन्दर से नहीं जानता। अन्दर से जानो तो मौत है - तुम देह में कभी रहेगा ही नहीं। अव्यक्त भ० को निज करके जानो। साकार देखा होगा तो भक्ति करेगा। जे अपना आप देखा होगा तो भक्ति काहे की। भक्ति माना अनन्य में, एक२ में आत्मा देखना। हर एक को प्यार करना भक्ति है। जब तक तेरे अन्दर अनन्या भक्ति नहीं है तब तक देह का कर्म विकार देखने में आएगा। मैं जो आत्मा हूँ, तो भ० भी है, तो सर्व भी एक ही है। Unless you feel all, you know not all. जब तक तू feel नहीं करेगा कि यह सब मैं ही हूँ तो तुम्हारा प्यार भी किसी से न होगा। तुमको आत्मिक feeling होनी चाहिए कि सर्व आत्म रूप है। भ० को देह मानेगा तो अपने को आत्मा कैसे मानेगा? कृष्ण ही आके तुमको आत्मा की निष्ठा देता है। इतना आत्मा में रहता है कोई न आता है न जाता है। उसका ध्यान ही नहीं है - तो यह गुरु सच्चा है जो आत्म जागृति में रहता है और आत्मा के सिवाय कोई बात भी नहीं है। तुम भी अपने ऊपर कृपा करो कि सारी दुनिया से मन निकाल कर अपनी आत्मा में रखो। गुरु की आत्मा में मन रखेगा तब तू जीतेगा। जो निराकार का भक्त है वो अद्वैत में होगा, वो किसी की body देखेगा भी नहीं। कोई ब्रह्मज्ञानी को कैद भी करे पर वो बन्धन में आ नहीं सकता वो अन्दर में free२ है। उसको नमस्कार करने की भी ज़रूरत नहीं है किसी की। बात नहीं करे तो भी ठीक है। तुम अपनी खोज करो नहीं तो मुफ़्त

7 अध्याय

26 श्लोक - हे अर्जुन, पूर्व में व्यतीत हुए, और वर्तमान में स्थित तथा आगे आने वाले सब भूतों को मैं जानता हूँ परन्तु मुझको कोई भी श्रद्धा भक्ति रहित पुरुष नहीं जानता।

भगवान - श्रद्धा रहित पुरुष के लिए यह राज नहीं है। जो अटूट श्रद्धा रखे, सारी दुनिया को मेरे लिए No करके आए। श्रद्धा तब बढ़ती है जब बोले तीनों लोकों का स्वामी मेरा है। भ० के पास जा कर जो भ० से सच्चे नहीं होते उनकी श्रद्धा होगी भ० में, जो 12 महीने में एक बात नहीं करते ? अश्रद्धालु को नास जान। बीच2 में तेरी इधर उधर वृत्ति है तो श्रद्धा बढ़ेगी नहीं। इससे भी दुःख बीमारी आती है।

306

7 अध्याय

27 श्लोक - हे भरतवंशी परंतप! इच्छा (राग) और द्वेष से उत्पन्न होने वाले द्वन्द्व-मोह से मोहित सम्पूर्ण प्राणी संसार में मूढ़ता को अर्थात जन्म-मरण को प्राप्त हो रहे हैं।

भगवान - इच्छा है, दूसरा है, मोह राग है, जुदा² वर्तन है। तो अज्ञानी को ये अन्धकार का नहीं मालूम पड़ता है कि अपने किससे मोह, राग, द्वेष, करता है? साकार भक्ति पसन्द है तो उधर जाओ पर जो नि० का ज्ञान चाहिए तो इधर बैठो। यह अनुभव का ज्ञान है। अनुभव कुछ नहीं किया, सारे दिन इधर बोला उधर देखा - वृत्ति खराब। एक बारी समता भाव आ जाए फिर तो बात ही खतम। पर तुमको ऐसी बीमारी लगी है जो समता भाव रखना आता ही नहीं। तुम भ० की पहेली समझते ही नहीं हैं। जो भ० की पहेली नहीं समझेगा तो भ० को क्या समझेगा? ऐसे ही टाइम गंवाते हैं - गली² घूमते हैं।

7 अध्याय -

28 श्लोक - परन्तु निष्काम भाव से श्रेष्ठ कर्मों का आचरण करने वाले जिन मनुष्यों का पाप नष्ट हो गया है वे राग द्वेष जनित द्वन्द्व रूप मोह से मुक्त दृढ़व्रती भक्त मुझको सब प्रकार से भजते हैं।

भगवान - देखो कैसी बात है - राग द्वेष है नहीं और निष्काम भाव से एक२ की सेवा, एक२ को प्यार और एक२ में अपना रूप देखना। ऐसा नहीं कि इधर से निकला और उधर फंसा। निष्काम भाव जिसके दिल में है निरिच्छा, निर्हंकार, वो भाव में ही रहता है। तो ऐसे निराकार को जान सकता है पीछे। पहले निष्काम भाव होवे। सब की भलाई में तू जीता है, सर्व में पेखे प्र०। एक की भी बुराई तुम नहीं करेगा। पर जो अभी तक देह में, द्वैत में साकार भक्ति में है, कभी नहीं निराकार को जानेगा। साकार भक्ति वाले का एक विकार जावे, हो ही नहीं सकता। निर्गुण भक्ति वाले का सब विकार खतम है। वो देखेगा कि ये आत्मा है तो विकार कैसे करेगा। बात किससे करेगा। आत्मा ही आत्मा जानेगा। निष्काम भाव होता क्या है? किसको तू will जानेगा, सब के हृदय में परमात्मा है। पहले बोलते थे किसी में प्यार नहीं है - तेरे में प्यार नहीं था। अभी तेरे में प्यार है तो तू निष्काम प्यार कर के देख। सब को तुम्हारी जरूरत पड़े। किसी को भी दो वचन उसकी भलाई के लिए बोलेगा किसी का दिल लेगा, ऊपर उठाएगा तो किसको न आराम आएगा। तुम आराम खराब करते हैं जो साकार भक्ति करते हैं, न तुम अपनी money से वैराग्य लेते हैं - money is useless. जब तू money हाथ में न उठाएगा तब देखेगा कितना निर्विकारी है।

308

७ अध्याय

२९ श्लोक - जरा और मरण से मोक्ष पाने के लिए जो मेरा आश्रय लेकर यत्न करते हैं, वे उस ब्रह्म को, सम्पूर्ण आध्यात्म को और सम्पूर्ण कर्म को भी जान जाते हैं।

भगवान - जो मेरे में मन रखता है वह बुढ़ापे से, मौत से, सब चिन्ता से बच जाता है। जो २४ घंटा मेरे में मन रखेगा तो निःसंदेह मेरे को प्राप्त होगा। सब में एक ही ज्योति देखो तो शरीर अलग हो जाएगा फिर बुढ़ापा कहाँ से आएगा, मौत कहाँ से आएगा? तुम अमर ज्योति आपने को जानेगा। अमर आत्मा सत्चित आनन्द मैं हूँ। तो पहले ये भावना तो करो ना। बकते हैं मैं आत्मा हूँ पर लक्षण एक भी नहीं हैं। तुम्हारे घर वालों से चल कर पूछेंगे कि ये घर में आत्मा की study करते हैं। सब तुम्हारी शिकायत करते हैं। आत्मा के लिए तो कोई अज्ञानी है भी नहीं। तुम बकते हैं पहले साकार में पीछे निराकार में मन रखेगा। पर पहले पाण निराकार में मन रखो। जिस काम के लिए आए हैं तो वो ज्योति पहले पहचानूँ - सब के ज्योत को पहचानूं। पीछे भक्ति किया तो तत्व सहित भक्ति हुई। तुम्हारी भक्ति की definition क्या हुई? पुरानी आदत है - गुरु की भी भक्ति करेगा।

मेरे को दिल में रखा तो मेरी भक्ति हुई। दुनिया में इतने कर्म, यज्ञ, पाठ, पूजा, व्रत, नेम-टेम देखते हैं - सब बेकार।

३०७

7 अध्याय

30 श्लोक - जो मनुष्य अधिभूत, अधिदैव और अधियज्ञ के सहित मुझे जानते हैं, वे युक्त चेता मनुष्य अन्तकाल में भी मुझे ही जानते हैं, अर्थात प्राप्त होते हैं।

भगवान - पहले अपने को आत्मा जानता है तो ये आध्यात्मिक दुःख नहीं लगेगा। अधिदैव जो है वो सभी भूतों में और प्राणियों में आत्मा देखेगा। हवा में, पानी में, सब में तू ब्रह्म देखेगा। जो अधिदैव है - दुःख जो आता है आसमान से, बारिश से, पहले साँप, बिच्छु से - तीनों ही दुःख चला जाएगा जो तू वासुदेव सर्व देखेगा। भूत को भी देवता बोलेगा जो आ० का प्रकाश करेगा। मूर्ति दीपक होवे तभी मंदिर है। शरीर मंदिर है उसमें मूर्ति है ब्रह्म। ज्ञान रूपी दीपक है तो दुःख कैसे लगेगा। तुम खुद ही ठंडी से ठंडी, गर्मी से गर्मी हो जाएगा सारी प्रकृति से ऊपर होगा। तुम्हारा कर्म यज्ञ होगा, कर्म नहीं। तन, मन, वाणी से वो यज्ञ करता है। तुम दो वचन भी किसी को छिप कर बताएगा - नर्क हुआ। ज्ञान सहित कर्म यज्ञ हुआ। यज्ञ कौन करता है? शरीर को कितना पवित्र बनाया है? शरीर पवित्र कब है? जब इसमें कोई विकार नहीं - न काम, न क्रोध, न लोभ, न मोह।

सब यज्ञ का अधिभूत, माना आत्मा जो है तो सृष्टि चलती है। आधिभौतिक भी मेरे को जान। बकरा कसाई आत्मा है ऐसा जानेगा तो सब कर्म खतम हो जाएगा। देह भी मेरी, पैसा भी मेरा पर तू बोलेगा मैंने किया तो भ० को मार देगा। आज किसी को लाख रुपया दो - समझो गंवा के आया तो तू दुःखी होगा। पर निकालने वाला भी भ० देने वाला भी भ०।

ये ब्रह्म की खोज करता है - ब्रह्म क्या है? तुम्हारी बुद्धि विशाल किया - सब ब्रह्म में आहुति करो - सब ब्रह्म जानो। तन मन को शुद्ध कर दीजिए।

310

ॐ

आठवाँ अध्याय

||ॐ|| दादा भगवान के श्री मुख से संक्षेप में –

आठवां – उत्तरायण दक्षिणायन। कोई आत्मा में टिकता है कोई देह में। आत्मा में टिकने वाला अमर है। इन दोनों गतियों को जानने के बाद कुछ भी समझना नहीं है। यह जानकर कोई भी कर्म नहीं करेगा। राजा जनक की तरह सब कर्म त्याग देगा। क्यों कि सब में मैं ही तो हूँ। अन्त काल में मेरा ध्यान करके जो आत्मा में है वही मेरे को प्राप्त होता है।

||ॐ||

श्लोक सूची

1) ब्रह्म, अध्यात्म, कर्म, अधिभूत, अधिदैव क्या?
2) अधियज्ञ कौन, इस शरीर में कैसे?
अन्त समय आप कैसे जाने जाते?
3) परम अक्षर = ब्र०; जीवात्मा = अध्यात्म
भूत भाव विसर्ग = कर्म;
4) उत्पत्ति-विनाश वाले = अधिभूत; हिरण्यमय = अधिदैव
मैं अन्तर यामी रूप से = अधियज्ञ
5) अन्तकाल मुझे स्मरण = मुझको प्राप्त
6) अन्त काल जिस² भाव को स्मरण उसको प्राप्त
7) इस लिए निरंतर मेरा स्मरण कर – युद्ध कर

(1–7: ब्र०, अध्यात्म, कर्म आदि 7 प्रश्न और उत्तर)

8) प० का ध्यान अभ्यास योग से – प्रकाशमय दिव्य पुरुष को प्राप्त
9). सर्वज्ञ, अनादि, नियन्ता, अति सूक्ष्म, सूर्य सदृश अविद्या से अति परे
10) वह भक्ति युक्त – भृकुटी मध्य प्राण – प० प्राप्त
11) विद्वान जिसको अविनाशी कहते, सन्यासी-प्रवेश करते ब्रह्मचारी आचरण करते, उसे संक्षेप से कहूँगा।

(8–11: प्राप्ति ब्र०)

32

12.} इं॰ द्वार रोक; मन हृद्देश में, प्राण मस्तक में;
13.} योग धारणा में ॐ उच्चारण = परम गति प्राप्त
14. अनन्य चित्त, निरंतर स्मरण = मैं सुलभ
15. परम सिद्ध - दुःखों के घर, क्षणभंगुर पुनर्जन्म - नहीं प्राप्त
16. सब लोक आने जाने वाले, मैं नहीं - क्योंकि कालातीत
17. ब्रह्मा का एक दिन हजार चतुरयुग वाला ...
18. सब भूत ब्रह्मा के सूक्ष्म शरीर से उत्पन्न, उसी में लीन
19. प्रकृति वश रात्रि - प्रवेश-काल लीन दिन ....
20. अव्यक्त से अति परे विलक्षण सनातन अव्यक्त भाव
21. अव्यक्त अक्षर - परम गति, मेरा परम धाम
22. जिसके अन्तरगत सब, जिससे सारा जग परिपूर्ण
वह अनन्य भक्ति से प्राप्त

(भक्ति योग cont.)

23. जिस काल में मरा हुआ नर वापस नहीं लौटता .. दो मार्ग
24. ज्योतिर्मय अग्नि, शुक्ल पक्ष, उत्तरायण - ब्र॰ प्राप्त
25. धूमा, रात्रि, कृष्ण पक्ष, दक्षिणायन - चंद्रमा के रास्ते फिर वापस
26. दो मार्ग - शुक्ल, कृष्ण
27. दो मार्ग तत्व से जान, सम बुद्धि योग युक्त मुझे प्राप्त हो
28. योगी रहस्य को तत्व से जान पुण्य के फल का
उल्लंघन कर परम पद प्राप्त

(शुक्ल, कृष्ण दो मार्ग)

8 अध्याय 1, 2, 3 (A)

1 श्लोक - अर्जुन ने कहा - हे पुरुषोत्तम ! वह ब्रह्म क्या है ? अध्यात्म क्या है ? कर्म क्या है ? अधिभूत नाम से क्या कहा गया है और अधिदैव किसको कहते हैं।

2 श्लोक - हे मधुसूदन ! यहाँ अधियज्ञ कौन है ? और वह इस शरीर में कैसे है ? तथा युक्त चित्त वाले पुरुषों द्वारा अन्त समय में आप किस प्रकार जानने में आते हैं ?

3 श्लोक - श्री भगवान ने कहा, परम अक्षर ब्रह्म है; अपना स्वरूप अर्थात् जीवात्मा अध्यात्म नाम से कहा जाता है तथा भूतों के भाव को उत्पन्न करने वाला जो त्याग है वह कर्म नाम से कहा गया है।

भगवान - ब्रह्म क्या है ? परम अक्षर ब्रह्म है। अक्षर - जिसका नाश नहीं होता। अविनाशी है, ओम है।

अध्यात्म क्या है ? जीवात्मा अध्यात्म नाम से कहा गया है। माया सहित है। शरीर सहित है। जो जीव को cross करे वो आत्मा में टिके। अध्यात्म - आत्मा का अध्ययन करना।

कर्म क्या है ? ब्रह्म की सत्ता से ही सब होता है पर जीव अहंकार करता है कि मैं करता हूँ तो यह उसका कर्म बन जाता है। अहंकार से जो त्याग किया वह भी कर्म है। जो भूतों में भाव उत्पन्न हुआ, उसको हमने त्याग दिया, सत्ता नहीं दिया, तो सच्चा कर्म हुआ। जो जीव में बातें उत्पन्न होती हैं कि दूसरा नाराज होगा, दुखी होगा, मेरे सिवाए ये कैसे होगा, मर जाएगा, तो ये हम क्यों सत्ता देते हैं। शायद वो दुखी ना भी होवे, शायद हम भी दुखी न होवें। तो इन सब का उल्लंघन करें। अपने इस भूत और भूतों के भावों को सत्ता नहीं देना ही सच्चा कर्म है।

= परम अक्षर तो ब्रह्म है, ओम है, नि० है, जिसमें कोई माया नहीं। अपना स्वरूप जीवात्मा, जो माया सहित है, शरीर सहित है

314

उसको आध्यात्म कहते हैं। उस परम अक्षर की ही सत्ता से सब कुछ होता है। पर 5H. वाला मनुष्य अपने अहंकार से कहता है कि मैं करता हूँ, तो वो उसका कर्म बन जाता है। यहाँ तक की वो अहंकार के कारण कुछ त्याग करता है तो वो त्याग भी उसका कर्म बन जाता है। तो कर्म न बनने के लिए इस भूत (शरीर) में आने का भी नहीं है। ईश्वर इच्छा पर चलने का है। नि॰ को जान कर फिर यज्ञ करे। फिर ब्रह्म में ब्रह्म का यज्ञ है – लेने वाला ब्रह्म, देने वाला ब्रह्म। ब्रह्म नहीं है तो दुनिया के पैसे से यज्ञ करेगा, मायावी बुद्धि वाला तुम है। पहले वैराग्य लेगा, धन से ऊपर उठेगा तभी आत्मा का ज्ञान लगेगा।.

= परम अक्षर ओम है, ऐसे ब्रह्म है, ऐसे आत्मा है। उनके अलावा कोई बात है? जीवात्मा दुःख सुख भोगती है। 5 भूतका शरीर है फिर तो जीवात्मा प्राणी में आती है। गर्भ से सुखदुःख शुरू हुआ। जो तुम करते हैं बच्चे पर असर पड़ता है। इतना सुन्दर बच्चा, इमली अमरूद खा कर वाई दर्द शुरू कर देते हैं। बच्चे ने क्या किया जो चण्डी माँ मिली? यह मैंने बोला कि सो बात में तुम्हारे को ईश्वर का भय है। अब माया का आच है तो तुमको कोई भय नहीं है। हमेशा knower को आगे रखो। वो बोलेगा तो चलेंगे – जैसे वो चलाए। हुकुम में चलेंगे, भले 10 टिकट fail करेंगे पर सोचेंगे नहीं। हम mystery में रहते हैं। उस टाइम जायेंगे जब प्रकृति सो जाएगी। हमने इस लिए थोड़ी ज्ञान लिया है कि तुम्हारे से खाता रखें। एक दम खाता बन्द है – account close. Diary में मेरी address नहीं रखना। I am mystery.

एक ही परमात्मा है, घट घट वासी है filled with God. गुरु नानक में काबे में जा कर दिखाया जहाँ तहाँ प्रभु तू वर्तते। सत्पुरुषों की बात mystery में होती है, वो Oneness में होते हैं। सब body एक ही है। हम आत्मा को प्यार करें या देह को। विकारी शरीर, विकारी दुनिया – मेरा किससे प्यार होगा – पर सीधा नूर पर नजर रखें तो

8/3 (B) Cont.

भगवान - भूत माना शरीर। उनका जो भाव है वह कर्म ही हो गया।

8/1.2.3. Cont. (C)

प्यार होगा। दुनिया में भेद है तो कभी प्यार नहीं होगा। भेद कौन सा करें ? फिर फिर के देखो तो एक की ही महिमा है। तुम बोलते हैं हमारा भ० साकार है, वो बोलते हैं हमारा भ० नि० है, फिर झगड़ा करते हैं। निराकार रूप मेरा सारी सृष्टि है। कारीगर है तो कारीगरी ज़रूर है। घर है तो घर वाला भी है।

मुसलमान अल्लाह हू बोलता है। देखो, उसकी meaning देखो। मुसलमान बोलता है अल्लाह न बोले तो क्या बोले। तुमको visible चीज़ अच्छी न लगे, invisible अच्छी लगे। जहाँ बैठो तो आनन्द ही आनन्द ही आनन्द।

319

8 अध्याय

4 श्लोक- उत्पत्ति-विनाश वाले सब पदार्थ अधिभूत हैं, हिरण्यमय पुरुष अधिदैव है और हे देहधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन ! इस शरीर में अन्तरयामी रूप से मैं ही अधियज्ञ हूँ।

भगवान – अधिभूत क्या है ? उत्पत्ति विनाश वाले जितने पदार्थ हैं वो अधिभूत है। पहले अपने भूत को छोड़ो, देह को भूलो फिर बाहर का हीरा पत्थर माया, फिर टोटल सब पदार्थ से, भूतों से ऊपर हो गया तभी आदि को जानेगा।

अधिदैव क्या है ? हिरण्यमय पुरुष अधिदैव है जो अपने को समझे मैं परमात्मा से आया हूँ। भ० ने ही ये रूप धारण किया है। इतने सुन्दर शरीर की रक्षा किसने किया, उस पुरुष का ही अंश हूँ। वो ही अधिदैव है।

अधियज्ञ क्या है ? फिर जो भी उस अधिदैव से होगा उसका यज्ञ हो जाएगा। वासुदेव ही सब में जाना तो उसका अधियज्ञ हो गया। अपने को सब में जाना तो अधियज्ञ हो गया।

= गर्भ में भी ब्रह्म है। सब जगह ब्रह्म जानेगा। इस बात का भेद मालूम होगा। अपने को ब्रह्म नहीं जाना तो अभी भी गर्भ में है। - भगवान को नहीं जानेगा। ब्रह्म को ही जानो, तुमको मालूम है इधर कौन, उधर कौन ? भ० को जानने के लिए भ० से प्यार करते हैं। 'तू किव राम रिझायो री गणिका ?' गणिका वैश्या ने राम को अपना कर लिया। भ० को जानने के लिए उस वैश्या से प्यार करना पड़ेगा। जो श्रद्धावान है उससे प्यार करना पड़ेगा।

३१९

8 अध्याय

5 श्लोक - जो मनुष्य अन्त काल में भी मेरा स्मरण करते हुए शरीर छोड़ कर जाता है, वह मेरे को ही प्राप्त होता है, इसमें संदेह नहीं है।

भगवान - तुम सब बोलते हैं मेरे को ही नमस्कार करता है। तो आत्मा की शरण नहीं लेता है। कृष्ण ने लिया - मैं एक ही परमात्मा हूँ। तुम इतने दिन देह में थे तो body की शरण लिया। गुरु से बेशक दूर रहना पर ज्ञान से दूर नहीं रहना। ज्ञान तुम्हारे अन्दर पैदा होना चाहिए। तू जब निष्काम, निरिच्छा होगा तो आपे ही तेरे पास कर्म आएगा पर तू न कर्ता न करावता। Body का गुण कर्म देखेगा ज्ञान न होगा। जो आत्मा को जान कर संसार छोड़ेगा मुक्त होगा। आत्मा को जो नहीं जानता है दुःखी सुखी है। यह शुद्ध अहंकार नहीं करेगा कि मैं भ० से पहले हूँ, भ० पीछे है। तुमने इसमें ज्ञान धारण किया है, ईश्वर ही मिलेगा। सच से प्रीत किया होगा तो अभी ज्ञान है।

319

8 अध्याय

6 श्लोक – हे कुन्ती पुत्र अर्जुन! मनुष्य अन्त काल में जिस जिस भी भाव का स्मरण करते हुए शरीर छोड़ता है, वह उस (अन्त काल के) भाव से सदा भावित होता हुआ उस उसको ही प्राप्त होता है अर्थात् उस उस योनि में ही चला जाता है।

भगवान – जो तुम्हारा सिमरन है उसमें तुम्हारा संसार छूटेगा। तुम ही बोलना, तुम्हारी क्या गति होगी – भ० क्यों बोले? अंदर चित्र गुप्त में सब लिखा है। तुम बोलो, 20 वर्ष की बात याद है? मित का जहाँ झुकाव होगा, वहीं गिरेगी। खुद ही अपने को जज करना। तुम ही बोलो ज्यादा प्रिय चीज क्या है? प्रिय में प्रिय आत्मा का ज्ञान है। अन्त समय नारायण² बोलेगा, मुक्त नहीं होगा। भ० ने दर्शन दिया और अजामिल को कहा 12 महीना सुमिरन करो। Life में दुःख की बात आती है भ० chance देता है। पर तुम बहरे से बहरा, अंधे से अंधा है। हमेशा आत्मा में लीन रहो। आत्म चिन्तन है तो बात ही नहीं है। बेटा सिमरेगा भूत प्रेत हो कर आएगा। तुम्हारा मनन है माया का, सुमिरन है धन का और निदिध्यासन है नार का। इस भूत से मन निकालना है। अभी तक तेरी वासना किसी न किसी में होती है। वासना से जन्म लेना। दृष्टांत- राजा का मन कुत्ती में गया। सत्संग में आ कर भी दूसरी जगह मन रखता है, मेरे में नहीं रखता। यह एक जगह है – अपने अज्ञान को मन से निकाल कर फेंक दो। मन को ज्ञान से अमन करो। किधर भी मन जाता है पकड़ कर आत्मा में गुम करो। पहले समता भाव रखो – नाम रूप में मन नहीं जाए। घर में अपनी लड़ाई खुद करनी है। तुमको सब भ० करके देखें, देह करके नहीं ओम बिना हर बात को नाकार कर। तुम body को छोड़ दियो।

320

8/6 (B) Cont.

सेवा भक्ति की मना नहीं है पर अहम् से कर्म मना है। तुम वासना से काश्मीर जाएगा पर बोलो जब भ० लेकर चले। कई कोषों की वासना अनन्त जगह पड़ी है। पीपल के वृक्ष की जड़ की तरह। तुम मूर्ख है भ० ज्ञान देता है तुम समझते नहीं है। ज्ञान माना युद्ध। ज्ञान अग्नि में सब वासना भस्म करो।

8 अध्याय

7 श्लोक - इसलिए तू सब समय में मेरा स्मरण कर और युद्ध भी कर। मेरे में मन और बुद्धि अर्पित करने वाला तू निःसंदेह मेरे को ही प्राप्त होगा।

भगवान - युद्ध कर क्यों बोला? जो ममता रखेगा उसको युद्ध करनी पड़ेगी। तुम सब मेरे को प्यार करते हैं पर मैं नहीं मानता हूँ। सब का तन मन कहाँ पड़ा है? तुम दान पुण्य करता है - जिसको देता है उसको weak करता है। दान अच्छा है, कर्म अच्छा है, पर भ० से विश्वास निकालना बड़ा खराब है। तुम अपने से पूछो। सारी दुनिया से मन निकाल कर स्त्री को अपना आधार दिया। सब अपनी अपनी प्रारब्ध खाएं तो अच्छा है। नौकर राशन लाता है और बोलता है मैं राशन लाया पर लाया तो घर वालों के नाम पर ही, नहीं तो उसे राशन कैसे मिलेगा।

322

8 अध्याय

8 श्लोक – हे पृथानन्दन ! अभ्यास योग से युक्त और अन्य का चिन्तन न करने वाले चित्त से परम दिव्य पुरुष का चिन्तन करता हुआ (शरीर छोड़ने वाला मनुष्य) उसी को प्राप्त हो जाता है।

भगवान– जो भ० के चिन्तन में रहता है भ० ही देखता है। निष्काम कर्म, सेवा सामने आती है, करता है। सेवा करके भी बोलता है thankyou. तुमने कुछ भूल किया तो कबूल करो और उससे माफ़ी माँगो। जो मेरे परायण, मेरे ध्यान में रहता है वह ही पार होता है।

323

8 अध्याय

9 श्लोक - जो सर्वज्ञ, अनादि, शासन करने वाला, सूक्ष्म से भी अति सूक्ष्म, सब का धारण पोषण करने वाला, अज्ञान से अत्यन्त परे, सूर्य की तरह प्रकाशस्वरूप - ऐसे अचिन्त्य स्वरूप का चिन्तन करता है।

भगवान - अज्ञान, अविद्या से परे माना जब तक तेरे में अज्ञान होगा ये ब्रह्म विद्या नहीं लगेगी। कॉंटा अंदर पड़ा है जुत्ती दूसरी पहनता है। तू अविद्या में पड़ा है, ब्रह्म विद्या किधर है? कितनी भी समाधि करो, अज्ञान जाएगा ज्ञान से। तुमको ज्ञान कहाँ है? शुद्धि किया है? तू सब की निन्दा मेरे पास करता है। तुम आत्मा देखेगा तो मेरे से न अच्छाई की, न बुराई की बात करेगा। मन से चाहे बाहर से चुप करनी पड़ेगी अन्दर भ० की दृष्टि है। गुरु क्रोध करके तुम्हारा विकार निकालेगा फिर अन्दर से प्रेम करता है। तुम दोनों बात play करते हैं? जो आत्मा को जानता है, बाहर से कुछ भी करता है पर अन्दर एक न दो। हमको किसी से कुछ चाहिए नहीं। हमको देह करके नहीं देखना। कोई free नहीं है जो तन मन धन दे सके। कृष्ण ने अर्जुन से लड़ाई कराई, खुद नहीं करी। युद्ध करना पड़ता है। आत्मा में आने से तुममें भी हिम्मत आएगी। तुम भी युद्ध कर सकेंगे। युद्ध हो मन से, और दृष्टि हो आत्मा की। ज्ञान है युद्ध। मन को ज्ञान से अमन करो।

324

8 अध्याय -

10 श्लोक - वह भक्तियुक्त मनुष्य अन्तकाल में अचल मन से और योग बल के द्वारा भृकुटी के मध्य में प्राणों को अच्छी तरह प्रविष्ट करके (शरीर छोड़ने पर) उस परम दिव्य पुरुष को प्राप्त होता है। ..

भगवान - कितनी शुद्धता, कितनी पवित्रता अन्दर की चाहिए जो दिव्य भ० है उसमें मन रखें। तुम भ० के स्वरूप को जानते हैं? भ० अरूप है, स्वरूप नहीं। अन्दर में feel करेगा मैं ही प्रेमस्वरूप हूँ। तू कभी ऊँचा नहीं बोलेगा - बाहर से शान्ति-नाथ, अन्दर से क्रोधी नाथ। मैं बाहर से क्रोधी नाथ हूँ। तुमको वासना का मेडा लगा हुआ है तो डा. को बोलेगा operation नहीं करना। प्राणों को दसवें द्वार में लेजाना माना निर्वासना हो जाना। एक² इन्द्रिय का रस दूर गया तो वासना न होगी तो उसका प्राण ऊपर ही होगा। एक है प्राणायाम, एक है वासनायाम। जो हठ से प्राणायाम करेगा, उसकी वासना रहेगी। समाधि पर समाधि ... । वासना किसी में है तो सच्ची समाधि नहीं लगेगी। ज्ञान अन्दर नहीं जाता है। तू केवल मुँह से बोलेगा पर अन्दर नाभि-कमल से निकले मैं आत्मा हूँ। तू अकेला आया है अकेला जाएगा; क्यों धर्म मान रखा है। सर्व धर्मान परित्यज्य ... ...। आत्मा का धर्म पालन करेगा सारी दुनिया से वृत्ति हटजाएगी रोज़ देखो मेरी वृत्ति कहाँ जाती है? जहाँ² मन जाता है वहाँ से आत्मा में लीन करो। माया के बीच में रह कर दिखाओ। कोई कितना भी सन्यासी होवे, मन चलता है। कोई भी उल्टी सीधी बात देखो, तेरे अन्दर न आवे। तू एक रख है? तू बाहर दीप जलाता है अन्दर नहीं। बाहर के दिए का तेल खतम हो जाता है, light भी खतम हो जाती है। तुम पागल हैं जो भगवान के आगे दिया जलाते हैं। कौन सी वस्तु भ० से जुदा है जो तुम सेवा में लाते हैं?

325

8 अध्याय

।। श्लोक – वेद वेत्ता लोग जिसको अविनाशी कहते हैं, आसक्ति रहित यत्नशील महात्माजन जिसको प्राप्त करते हैं, और साधक जिसकी प्राप्ति की इच्छा करते हुए ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, वह पद मैं तेरे लिए संक्षेप से कहूँगा।

भगवान – ब्रह्मचर्य में रहना सब को कड़वी दवा लगती है। जो भी शास्त्र खोलो यही बात लिखी होगी। जो ब्रह्मचर्य पालन करेगा वो ही भ० को जानेगा। बाकी को आना नहीं है। ब्रह्मचर्य माना इंद्रियां वश होना चाहिए। जिस दिन ब्रह्मचर्य का पालन करेगा, अपने आप में आ जाएगा। कोई बात खींचेगी नहीं। देह में ओम अक्षर बोलता है, सिद्ध कौन करेगा? ओम के उच्चारण से क्या होगा? ओम – वो मैं हूँ I am that, not this. कोई भी taste होगा, body गुलाम करेगी। अन्दर से ओम नहीं निकलेगा क्यों कि इच्छा वासना है। सब इंद्रिय बाहर मुख करती हैं। ओम ऐसा बोलो सुध बुध न रहे। शरीर में ज़रा भी sex है, सुख नहीं देगा। ये भूत शरीर ही गुलाम करता है। कितना दुःखी करता है। कोई बीमार पड़ता है Dr. का कितना bill देगा। सारा दिन इसे खाना चाहिए। जितना तुम संयम में रहेगा, निर्विकारी होगा। जितना खुशियां मनाया उतना भया रोग। अभी ज़रूर सज़ा भोगनी पड़ेगी। हम पूछे अपने से 5/- की चीज़ खाई सेवा कितनी किया। खाए तो विचार कर .... । नि० हिसाब कितना पूरा लेता है। सेवा कितना किया, लिया कितना, दिया कितना। ईश्वर की सरकार गलत काम करने नहीं देती। उस दिन मेरे साथ एक लड़की को 30/- दण्ड देना पड़ा क्यों कि signal बन्द होने के बाद उसकी कार एकदम निकल गई। नि. भी एक-२ बात का हिसाब लेता है। ओम में लीन रहना है। सब बात में हिसाब रखना है – योगी कैसे चलता है। जैसा अन्न वैसा मन। विचार में सुख है अविचार में दुःख। ये कहने की बात नहीं है। मरने पर नौकर सेठ एक ही कब्र में सोते हैं। भ० ने तुमको वैराग्य के लिए हस्पताल, शमशान दिखाया है।

326

अध्याय 8-12, 13.

12, 13 श्लोक - इंद्रियों के सब द्वारों को रोक कर, तथा मन को हृदेश में स्थिर करके, फिर उस जीते हुए मन के द्वारा प्राण को मस्तक में स्थापित करके, परमात्म सम्बन्धी योगधारणा में स्थित होकर जो ॐ इस एक अक्षर रूप ब्रह्म को उच्चारण करता हुआ शरीर को छोड़ कर जाता है वह परमगति को प्राप्त होता है।।

भगवान- पहले सब साधन है जैसे बोला इन्द्रिय मन सहित शरीर को वस करना। तुम इंद्रिय को वश में गया और बोला मैं आत्मा हूँ तो तू कहने में है, जानने में नहीं है। जो देह रहित है उसका प्राण मस्तिष्क में चढ़ा ही पड़ा है। लेकिन जो ॐ बोलता है नीचे से माना देहध्यास से, वो मुक्त नहीं होता है। जो विषय विकार में है उसका ओम नीचे से ही निकलेगा। ओम कौन बोलेगा? जो टिका होगा। एक मनुष्य को चार वाणी क्यों है - मुख, कंठ, हृदय और नाभी हृदय नाभी कमल से ओम बोल, अन्दर इतना साफ हो मेरी दिल पोलार होवे जैसे तबला। प्राण सहित ऊपर चढ़े पड़े हैं, नीचे आए क्यों? नीचे जो रहते हैं, कामी क्रोधी हैं। ये बात पढ़ने लिखने की नहीं है, अनुभव करने की है। जब अन्त समय प्राण मस्तिष्क में है, देहध्यास भी नहीं है, विषय विकार भी नहीं है तब मुक्त होता है।

प्रेमी:- भ० कोई आँख बन्द करता है उसको प्रकाश दिखता है, ये सब क्या है?

भगवान - प्रकाश कुछ भी नहीं है। सारा दिन आँख खुली रहती है तो देख देख कर क्या देखे? तो लोग आँख बन्द कर देते हैं। खोल कर थकते हैं तो आँख बन्द कर शान्ति आ जाती है।

327

8/12, 13, 14. (B)

=प्रेमी - ओम और ओंकार में क्या फर्क है?

=भगवान - ओम ओंकार एक ही है। शरीर छोड़ते हुए कुछ भी छूटता नहीं है पर गुरु मिलने से ओम भी बोलना नहीं पड़ता। आपे ही शरीर छूट जाता है।

=अक्षर स्वरूप ब्रह्म - ब्रह्म परम अक्षर है और ओहम् में कोई नाम रूप नहीं है जैसे आधा अक्षर है ॐ॥ तुम पढ़ने वाले ओंकार बोलते हैं। वैसे आधे अक्षर में स्कोहम् सत्गुरु प्रसाद ही है।

=प्रेमी - मुझे निर्गुण परमेश्वर को खोलिए।

=भगवान - सब में पुरुष उत्तम मैं हूँ। ओहम् भी मैं हूँ सोहम् भी मैं हूँ, शिवोहम् भी मैं हूँ। वेद भी मेरे पीछे हुआ। बोलते हैं सन्त की महिमा वेद न जाने। अथाह वाणी है - गुरु मुख नादं -----। सागर कैसे गागर में आएगा।

=प्रेमी - परम गति को खोलिए।

=भगवान - परम अक्षर main जो है वो ओहम् है। उसमें नाम रूप नहीं है। तुम नाम रूप में अटकते हैं कि मेरे को किसी योगी की वाणी चाहिए। फिर वाणी में अटक गए। वाणी सब की सुनो पर उसमें भ० का ही भाव डालो। परम गति उसको मिलेगी जो ओम के ही भाव में गुम होगा।

इतना कुछ देखते हुए भी कुछ देखा नहीं, सुना नहीं। Self enquiry होनी चाहिए कि कोई भी colour मेरे अन्दर चढ़ ही न सके। एक रण्डी नाच करती थी। एक योगी बोलता है ये क्या है - औरत नृत्य करता है। गुरु बोलता है स्त्री तत्व कहाँ है? सब तो एक ही है -- Oneness है तो घबराने की क्या बात है? जागा ही हुआ हूँ। अभी कोई बात अन्दर नहीं जाती

326

8/12,13,14,(c)

झूठे picture में भी तुम रोते हैं तो सच्ची picture में क्या करेंगे ? जो हमेशा सत_ है उसको पकड़ो। कहीं भी जाओ निश्चय को नहीं छोड़ो। जब आकाश ही आकाश है तो उसमें क्या करना है ?

229

8/14 (B) Cont.

भगवान – ज्ञान सुगम है पर इसको कोई सुगम करता नहीं है। तुम हैं जो ज्ञान को कठिन कर देते हैं। समझते हैं माया छोड़नी है काटनी है। तुम पहले ही पहाड़ देखते हैं तो चढ़ ही नहीं पाते। हम सच्चाई में रहते हैं तो पहाड़ कैसे देखें?

इस ज्ञान में समझते हैं त्याग करना है। त्याग कुछ नहीं है, खाली गलत संगत, गलत बातें गलत कर्म छोड़ने हैं। वो गलत चीज़ों को गुरु आ कर छुड़ाता है। दुनिया में कर्मकाण्ड भक्ति में कर्म भी है, फल भी पर इसमें तो कोई बात ही नहीं है।

329

8 अध्याय

14 श्लोक – हे पृथानन्दन ! अनन्य चित्त वाला जो मनुष्य मेरा नित्य-निरन्तर स्मरण करता है, उस नित्य युक्त योगी के लिए मैं सुलभ हूँ, अर्थात् उसे सहज ही प्राप्त हो जाता हूँ।

भगवान – जिसका मन अनन्य भाव से मेरे में है जो सब time मेरी बात मेरी याद में है उसके साथ मैं हूँ। आत्मा एक है। कभी याद करते हैं तो वो आदमी सामने है। ऐसे जो मेरे परायण रहता है उसमें मैं हूँ ही हूँ। याद है तो आबाद, भूलें तो क्यों भूलें ? विषय के संग में रस नहीं है, मिलेगा फिर जाएगा। इस प० के रस में क्या आनन्द है ! दुनिया की बात कभी चढ़ाए गी, कभी गिराएगी। एक ही आत्म बुद्धि है। सब को बोलो जो तू है सो मैं हूँ। एक मुस्कुराहट से सब का विकार निकल सकता है। आत्मा की नजर क्यों न रखें। इसमें खर्च क्या है ? जितनी तू इज़्ज़त चाहता है, देता है ? Live and let live. न रहने देगा, तुमको भी बेचैनी होगी। न ऊँचा न नीचा, न Superior न inferior. पर अपना आप करके देखो।

338

8 अध्याय -

15 श्लोक - परम सिद्धि को प्राप्त महात्माजन मुझ को प्राप्त होकर दुःखों के घर एवं क्षणभंगुर पुनर्जन्म को प्राप्त नहीं होते।

भगवान - उसको दूसरा जन्म नहीं जिसको सिद्धि प्राप्त हुई। जिसको पहचान के लिए आया उसे पहचान। निःसंदेह तू प० में लीन है। इतना पुरुषार्थ करते क्यों नहीं ? प० को पहुँचेगा ? तू विकार नहीं करना। मेरे में विकार है ? याद रखना शरीर में विकार होता है। पहले तुमको पुरुषार्थ करके परम सिद्धि को प्राप्त करना है। पीछे आराम से बैठो। जो जीवन मुक्त है वो विदेह मुक्त है। मरेगा नहीं तो हालत कैसी होगी ? मन मारन की औषधि है। मरेगा नहीं तो हालत कैसी होगी ? ....। जैसे २ नम्रता करोगे अपने आप को पहचानेंगे। स्वरूप को जानने के लिए reasoning power मिला है। सच्चा मिलता है, सच प्रकट करता है, परम सिद्धि होती है temporary नहीं। अन्त मति सो गति। इधर आज जीवन मुक्त है, एक ही एक मुक्त है। तुमको दुनिया भले देह करके देखे, तुम अपनी नज़र change करो। तू आत्मा करके देख। ये नहीं बोल मेरे को प्यार करता है। तू सुजाग हो जाओ। वासना दो में होती है। एक कृष्ण में वासना नहीं है - गोपी भले वासना रखे।

यहाँ आकर आत्मा में कई बीमारियां गुम हो जाती हैं। मेरी देह को देखने वाले को कुछ नहीं मिलेगा - बीमारी आ जाएगी। ये अनुभव की बात है। अन्दर अपने को सुजाग रखेगा, मेरे को इतना हो जानेगा। अपने अन्दर जो थरमामीटर रखा है तू उससे पूछ। जिसने अपने को पहचाना, मुझको पहचाना। दुनिया के गुरु जैसा यहाँ दर्शन नहीं है। ये ऊँचा दर्शन है। तुमको अपने अन्दर खोज करनी पड़ेगी। अपने को realise किया, नि० को realise किया।

331

8 अध्याय

16 श्लोक – हे अर्जुन ! ब्रह्मलोक तक सब लोक पुनरावर्ती हैं, परन्तु हे कुन्ती पुत्र ! मुझ को प्राप्त हो कर पुनर्जन्म नहीं होता। (क्यों कि मैं कालातीत हूं और ये सब ब्रह्मादि के लोक काल के द्वारा सीमित होने से अनित्य हैं।

भगवान– काल माना time. मैं timeless, birthless हूं। तू कल की बात सोचेगा। सब जीव में टाइम है, मेरे में time, कर्म कुछ नहीं है। मैंने सृष्टि बनाई। कौन बोले सृष्टि बनाई। तुमको टाइम था, बेटे को जन्म दिया। धरती में है कर्म। ऊपर रहेगा शान्त मौन पद में time का मालूम नहीं पड़ेगा॥ कितना ज़र्रे 2 में टाइम देखता है। सूरज में रात नहीं, अंधेरा नहीं वैसे ज्ञानी में टाइम नहीं। तुमको अपने पर विश्वास है? जिसको भक्ति करनी होगी तो टाइम याद आएगा। है ही ब्रह्म तो टाइम किसका? निष्काम कर्म इत्तफाक से आया तो बोलेगा जाना है। जो भी कामी पुरुष है सारा दिन क्या करता है? सावधान है? सब देह के अन्दर है। अनित्य माना नाशवंत, नित्य नहीं है। अनित्य में वक्त देते हैं। आत्म जागृति में आओ। टाइम का कैदी नहीं बनेगा। जो भ० के ऊपर बात रखता है भ० उसका सब काम करता है। अवधि हुई मन चला, मन नहीं चला विधि हो गई।

332

8 अध्याय

17 श्लोक – जो मनुष्य ब्रह्मा के सहस्त्र चतुर्युगीपर्यन्त एक दिन और सहस्त्र चतुर्युगी पर्यन्त एक रात को जानते हैं, वे योगी ब्रह्मा के दिन और रात (अर्थात् काल के तत्त्व) को जानने वाले हैं।

भगवान – Time को जानता है, तत्व में रहता है? हजार वर्ष आयु बनाओ, शान्ति मिलेगी? हमारा क्षणिक ब्रह्म का आनन्द तुम्हारा हजार वर्ष तपस्या। हमारा क्या आनन्द है ब्रह्मा को मालूम नहीं है। ब्रह्म न्यारा है। कोई चीज का बंधन नहीं होगा, विकार नहीं होगा। ब्रह्मा माना नाम रूप। ब्रह्म में नाम रूप नहीं है।

ये सृष्टि की बात करता है। हर एक अपनी² सृष्टि पैदा करता है। पर जो अव्यक्त है उससे ब्रह्मा का दिन है। पर किसको वो रात है। हम सच को जानते हैं तो हैरान होते हैं कि Sunday अभी आया फिर कैसे आया। हमारा दिन जैसे पानी में जाता है। हमको साल महीने का भी मालूम नहीं पड़ता और लोग सोचते हैं हम टाइम की कैद में हैं। ब्रह्मा भी कैद में है जो कहता है मैंने पैदा किया। गोपी को छः महीने की एक रात लगी। वो कैसे? [ब्रह्मा जो सृष्टि पैदा करता है उसको रात दिन देखने में आएगा पर जो प्रलय कर के बैठा है तो इतनी life जो बीती वो सपना हो गया। जो भी life बीती उस time से क्या हुआ? Result देखा है कि फल क्या हुआ? तुम्हारी life जाती है ऐसे ही पर हमारी life नहीं। जो² आत्मा में रहता है तो जगत से विस्मृति हो जाती है। स्मृति माना याद।

तत्त्व से जानने का अर्थ foundation को जानना है। तो उनके पास काल भी नहीं आएगा पर जब तू बोलेगा अभी मेरा शरीर छूटेगा। प्रभु के सिमरन काल पर है...।

333

8/17 (B) Cont.

भगवान- जो 4 युग में न मिले वह एक रात में गुरू के पास मिल जाता है। ब्रह्मा है गुरू जो मुख से जन्म देता है। गुरू ब्रह्मा गुरू विष्णु---। वो ब्रह्मा गुरू है जो मुख से जन्म देता है और एक रात में अनुभव हो जाता है।

दूसरा काल के तत्व को जानने वाला अर्थात time को जानने वाला। मौसम को भी जानने वाला। और कोई द्वापर सत्युग जानता नहीं है पर जभी वाणी चलाता है तो वहीं ही सत्युग मिल जाता है।

337

अध्याय 8.

18 श्लोक – ब्रह्माजी के दिन के प्रवेशकाल में अव्यक्त-(ब्रह्माजी के सूक्ष्म-शरीर-) से सम्पूर्ण प्राणी पैदा होते हैं और ब्रह्माजी की रात के प्रवेशकाल में उसी अव्यक्त में सम्पूर्ण प्राणी लीन हो जाते हैं।.

भगवान – है ब्रह्म, पैदा जहाँ से लय उसमें। केवल आत्मा है वो ही value रखता है। कलयुग में ब्रह्म से दूर होगा सब जादू प्रतीत होगा। कई लोग नशा पीते है गम को भुलाने के लिए। सूफी शराब बहुत पीते हैं पर ये नशा कुछ और है। हमेशा नशा बगैर पिये होता है। ऐसा नशा चढ़ता है! तुम जानते हो ब्रह्म का क्षणिक आनन्द क्या होता है। ज्ञानी को 24 घंटा आनन्द है। देह भुलाने से वो आनन्द आता है जो उतरे ही नहीं। जो चढ़ती उतरती है मस्ती वो हकीकत में मस्ती नहीं है। कोई भी action करेगा natural नहीं है। प्रिय चीज़ नाश हुई नशा उतर जाएगा। निमित्त मात्र संसार से चलता है पर अन्दर एक न दो। बालक जैसी क्रिया करता है। बालक को सोने का खिलोना, मिट्टी का खिलौना मालूम नहीं है। अव्यक्त हो कर रहता है, अव्यक्त को जानेगा।

तुम संकल्प पर ध्यान नहीं देते हैं। तुम्हारा ही संकल्प तुम को बांध बैठा है। समझ होते हुए भी मनुष्य अहंकार करता है। गुरु से बराबरी करता है। फिर कहेगा मुझे शुद्ध अहंकार है। कितना भरा हुआ भी होवे पर अहंकार बहुत खराब है। कितने भी शास्त्र पढ़े पर जीते पैगम्बर की आज्ञापालन नहीं करे तो ज्ञान नहीं होगा।.

३३८

8/18 (B) Cont.

भगवान – ब्रह्मा गुरु है भगवान है उनसे पैदा होते हैं फिर उसमें लय होते हैं फिर जागते हैं। तुम सब जितना ज्ञान सुनते हैं, फिर सुनते हैं। एक वारी लय हो जाओ फिर जागो।.

336

8 अध्याय

19 श्लोक - हे पार्थ ! वही यह भूतसमुदाय उत्पन्न हो-हो कर प्रकृति के वश में हुआ रात्रि के प्रवेशकाल में लीन होता है और दिन के प्रवेश काल में फिर उत्पन्न होता है।

भगवान - ब्रह्मा सृष्टि पैदा करता है, लय भी करता है। ब्रह्मा की age सौ साल है फिर वो लय भी हो जाता है। ऐसा ब्रह्मा कितने दिन राज करेगा ? सब भूत प्राणी आते जाते हैं पर ब्रह्म लय नहीं होता है। ब्रह्म सता एक रस है। हजार वर्ष राज करो तो भी क्या ? रोज एक ही routine है। पर आज ही - Today ! दुकान वाला कहता है आज नकद, कल उधार - माना, today का, आज का विचार। जो past future में है वो ब्रह्म को नहीं जानते। सूरज में एक दो दिन नहीं है। आत्मा के लिए कुछ नहीं है। तू सूरज से भी ऊपर, जानने वाला है। ब्रह्मा भी तू है क्यों कि तू कहता है मैंने पैदा किया। तू खलास है तो फिर किसकी चलेगी ?

337

20 श्लोक – उस अव्यक्त से भी अति परे दूसरा अर्थात् विलक्षण जो सनातन अव्यक्त भाव है, वह परम दिव्य पुरुष सब भूतों के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होता।

भगवान – एक ही ब्रह्म सत्ता है जो change नहीं होती। प्रकृति में change है। आत्मा में न मुल्क है न कुटुम्ब। इधर आ कर भूठ निकालो

मतलब यह देह से अलौकिक बात है। ये ब्रह्मज्ञान की जो बात है वह देह से अलग है। जो देह में है वो समझेगा ही नहीं, कथन भी नहीं कर सकेगा मन बुद्धि से। वो बोलता है अव्यक्त नि० उससे भी अति परे जो तुमको समझ में नहीं आता है, वो अति परे है। उसमें विशेषता है। सामान्य तो सब में ही है। अति परे को बुद्धि से नहीं जान सकते हैं। कोई भी engineering पढ़े या कुछ भी science तो वो भी बीज तक समझेगा, अति परे को नहीं। उसको कोई भी दुरबीन से नहीं देख सकते। सब को स्थूलता चाहिए – किस को touch करें। वो feeling में आता है पर देखने में नहीं। पानी में रस किसका है, निम्बू में खटास किसकी है? तो वो रस कहाँ से आया? तभी तो गुरु नानक निराकार की महिमा करता है – "पवना गु धरती माता"...

तू सच को जान। सच को अपना ही परख होता है। ब्रह्म को प्रकृति का आधार भी नहीं चाहिए। ब्रह्म को जानेगा तो किसको भूत प्राणी करके नहीं जानेगा। 5 भूत में तू वर्तन करते हैं। शरीर तो भूत है पर तू आत्मा अडोल है। ये निश्चय नहीं किया तो किसी को भी नहीं जानेगा। तू देहध्यास में है तो तेरे को सब ठगेगा।

योगी अपने आप में टिकता है। जो खोजे सो पाए। 5 विषय में सब मनुष्य खुश होते हैं। गुरु के ज्ञान से दिल लगाएं, एक वचन पर मरें मिटें तभी ज्ञान है।

332

8/20

सब में ही तो हूँ इसके सिवा तुम्हारा काम नहीं चलेगा और वह (अति परे)[3], विलाहता क्यों बोलता है ? न्यारा (सब से न्यारा)[3] (होते जाओ)[3] सब से न्यारा - जैसा मैंने कुछ देखा ही नहीं, सुना भी नहीं, देखा भी नहीं। ये दृश्य जो है - सब मिथ्या है। जैसे रात को नींद करते हैं ऐसा प्रलय है। आप सोये पड़े हैं पर तो भी तुम्हारे मन में जगत पड़ा है। तुम सोये नहीं हैं सच्ची तरह से। जैसे ज्ञानी सोता है सच्ची तरह से। तुमको मालूम है मैं सोता हूँ, उठता हूँ। तुम उठेंगे। वह ऐसा सोया पड़ा है जैसे सोया ही पड़ा है, उठता ही नहीं है क्यों कि वह जागता ही नहीं है। तुम्हारे जैसा आँख उसकी काम नहीं करती, मन, बुद्धि काम नहीं करती। चतुराई नहीं, चालाकी नहीं, ठगी नहीं। Be clean. अति परे माना जो भी दृश्य देखा, इससे भी ऊपर हो जाओ। माना कहीं भी खड़ा न रहो।

तुमने अभ्यास वैराग किया, शान्ति नहीं। रोज़ अन्दर में देखो, ये मैंने नहीं देखा था तो मेरे को याद था ? जब तुमको नहीं देखा था, याद थोड़ी था फलानी माई है ? अभी मेरे को क्यों याद आए, किस लिए ? उसको मैं आत्मा करके मिला था तो याद नहीं आएगा, देह करके मिलेगा तो याद आएगा। समझने की, जानने की, विचारने की बात है। तुम बोलते हैं ये माई है तो माई कहाँ है आज। इतना तो मैं अति परे हूँ जो माई[2] नहीं लगता, बहन[2] नहीं, बेटा[2] नहीं लगता। तुम मेरा आदर्श देखना। सपने में भी कोई नहीं है।[2] इससे भी अति परे, इससे भी अति परे हो।[2] अतीत - अतीत उसको बोलते हैं (सिंधी में) जैसे कोई गरीब हो जाता है। ये फिर इतना अतीत, दृश्य-मात्र से अतीत है, न्यारा है, सब का प्यारा है।

तुम रोज़ किसी भी हद में खड़े हैं इसका letter नहीं आया, इसकी बात नहीं हुई - किसका दृश्य, किसका शब्द, किसका कर्म, किसका present किसकी बात तुम्हारे दिल में आती है। हम रोज़ अति परे, अति परे होते जाते हैं। राजा जनक जैसी दृष्टि - गुम बोलता है, कितना इसको वैराग, इतनी माया में भी सतकर्म नहीं करता है कि जन्म मरण में कौन आएगा। माया उसने मिथ्या कर के देखी तब शरण में आया। आप मेरे को कितना भी सुख दो मेरे को आनन्द आएगा ? पर जिस बात में तपस्या होगी। उसमें आनन्द

339

9/20

आएगा। तुम इस बात से तपस्या में डरते हो। हमको तपस्या में आनन्द है। रोग, चोटें, मेरे, गले पर इसको किससे भी मिलने नहीं देगा, तो क्या करेगा? मैं इससे कर्म नहीं कराऊंगा तो क्या होगा? मैं इसको बिल्कुल नंगा कर के बैठाऊंगा - तू कहाँ जाएगा? तू पहले ही सब जगह है, आत्मा कहाँ नहीं है? सब जगह है। पाँच तत्व घूमता फिरता है। बाकी कहाँ जाओ? कोई भी योगी जनक की तरह यह बात निश्चय कर के सब को बताए। सहज सुख तो सब को मिला। वह कौन सी तृप्ति है, बताओ?

सब सुख में दुःख में कीड़ा समाया पड़ा है। दोस्त में मन रहेगा - चला जाएगा, बेइमानी करेगा, दुःख होगा। बाहर से सुख लेते हैं। सच्चा सुख अन्दर है। अन्दर भ० ने अमृत का चश्मा डाल दिया है। उसको तुमने देहध्यास से ढक दिया। अहंकार गया तो सब को प्यार कर सकते हैं। ये नहीं भूलो सब मेरा रूप है। तुमको दूसरा दिखता है और तुम्हारा मन अन्दर ही अन्दर भौंकता है। मन को ज्ञान से बिल्कुल खलास कर दो। रहे ही नहीं - मैं ऊपर हो गया। अति परे। धरती से ऊपर, आकाश से ऊपर। सबसे ऊपर। आकाश में कहीं २ प्लेन चलता है उससे भी दूर २ चला जाता है। कोई संगी नहीं साथी नहीं। साथ नहीं कोई आता है फिर हमको क्यों जहान पर भरोसा होता है? अति परे, विलक्षण माना सब से ऊपर जिसकी किससे तुलना नहीं होती। ऐसा प्यारा है उसके आगे दूसरी चीज नहीं है। इस जैसा आता या उस जैसा? प्यारा है प्यारा है सब का प्यारा है। भ० प्रिय है, अपना आप है। पेड़ देखो पौधा देखो सब से प्यार है। बारिश आए तो भी प्यार है। नहीं आए तो भी प्यार है। सर्दी गर्मी सब से फिर है। हालत आए तो उससे भी फिर है। ये नहीं निकलेगा भ०! भगवान ऐसा कर ऐसा नहीं कर यह नहीं निकलेगा। तेरा ही कर्म तेरा ही फल। कौन clean man है। इधर एक आना clean होते हैं। पर विश्वास नहीं आता है सच में तू इतना pure है।

ॐ

8/20 (E) Cont.

प्रेमी - अव्यक्त से अति परे - परम दिव्य को खोलिए।

भगवान - वह तो आत्मा है तो परम दिव्य पुरुष मिलना मुश्किल है। उसको कहते हैं जो उधर पहुँच जाता है अव्यक्त से अति परे वह दिव्य पुरुष मिलना दुर्लभ है। इतनी सारी संगत में मेरी किसमें आँख नहीं डुबती है कि ये अति परे हुआ है। बाहर की खुशी पर ध्यान देते हैं पर अन्दर का foundation खुले तो बाहर की बक२ बन्द होजाए। कोई मेरे से बात करे तो चिढ लगे कि ये मेरे को खुश करने को कर रही है। जैसे बच्चे को देख कर सब खुश होते हैं यह माया है। मैं खुद ही देखते हैं कि उनकी beauty ऐसी है कोमलता ऐसी है जो कोई अलग आदमी भी उठाएगा। उसकी भी attraction होती है - कुदरत ने उसको ऐसा आकर्षण दिया है जो वैसे माँ उसकी कैसे सफाई करे जो बच्चे के मोह और आकर्षण में करती रहती है।

= निश्चय में फिर body आ गई कि body ने निश्चय किया। अति विलक्षण - इससे परे का अर्थ है bodyless पहले भी था नि० है अव्यक्त फिर भी उसकी लीला देखें। इतना परे है जिसको तुम बुद्धि से नहीं जान सकते। एक हो गया वो ही विलक्षण है, न्यारा है। वो ही देहरहित है। तुमको देह में मान अपमान मोह शोक होता है। समझो बोला - "मैंने निश्चय किया" तो "मैं कौन? मैं की जगी बास न आए। अव्यक्त से अति परे माना जब वो ही है तो कौन जाने कौन बोले। जहाँ तू मैं न हो। तुम्हारी आँख जब मेरे को देखती है तो वो हो गए। 'तू' किसने नाम रखा, 'मैं' किसने नाम रखा। तुम कितना भेद भाव रख के बैठे हैं। नाम बोलते हैं बैठे बैठे में मोह जाता है-

344

8/20 (F) Cont.

तो तूने कौन सी मट्टी से बनाया है - तो लि० कृष्ण, गी खेल करे उसकी body है - मैं क्यों बीच में आऊँ। वो ही मारता है वो ही जिलाता है। तुम कैसे "मैं मैं" करते है। थोड़ा विचार करो अपने वाले की लकीर भी आती है तो क्यों? होने वाली बात होती है, न होने वाली नहीं होती। तुम मुस्कुरा के चलो न। लीला देखने से क्या होता है। देहध्यास पक्का है मैं फलानी हूँ - पर आया कहाँ से नाम रूप।

यह जीव छोटी i में पड़ा है। छोटी 'i' से दुःख सुख सारा जगत बना है। - ये कौन है, ये कैसे है। भगवान ने पहली भेजा है तुमको। क्यों हम आसक्ति में आते हैं? छोटी 'i' में तो रोज मरते हैं। तुमको यहाँ मरना कठिन क्यों लगता है? यहाँ कितने झंझटों से, पाप से, डर से छूट जाते है - यह analyse नहीं करते।

इच्छा करते ही क्यों हैं? सूक्ष्म में भी कोई इच्छा क्यों करें? मैं बोलते हैं अन्त वेले तुम विवेक धारण करो। अन्त समय प्राप्त की प्राप्ति पर है। उसको क्या अप्राप्त माने? विस्मृति है। कोई नहीं बोलता मेरे को सब प्राप्त है। प्राणों को सत्ता कौन देता है? वो सूक्ष्म से सूक्ष्म है। जभी अपने को गँवाएंगे तभी जानेंगें। जिधर किधर अपना आप ही है। मरे हुए को कौन मारेगा?

= अव्यक्त कृष्ण को बोला है पर जो सनातन पुरातन पुरुष है वो पहले निराकार था, है - कृष्ण अव्यक्त है पर उससे भी परे जो अव्यक्त विलक्षण भाव है - सृष्टि है तो भी है - नाश हो जाए तो भी है - मैं ऐसा अव्यक्त विलक्षण हूँ। जो इतना देह को cross करेगा तो उसको जानेगा। - वो मैं हूँ -। तब बोल सकेगा सृष्टि नहीं थी तो beginning में क्या था - अव्यक्त।

बेअन्त का अन्त तत्व दर्शी पाता है। जब सृष्टि नहीं थी तो पहले क्या था beginning में - अव्यक्त। आप उसमें गुम हो जाओ कि आदि अंत में क्या था। Beginning है अव्यक्त

8/20 (G) Cont.

पर जो अव्यक्त से भी परे है वो तू नहीं जान सकेगा। तू फिर कृष्ण को नानक को याद करेगा, प्यार करेगा। तू अव्यक्त को प्यार नहीं करेगा। तू visible को प्यार करेगा पर मैं जो सब के हृदय में हूँ सारी world के रूप मैंने ही धारण किए हैं वो अव्यक्त मैं हूँ।

तू बोल सकते हैं आदि से मैं हूँ। सृष्टि नहीं है तो भी हूँ Beginning भी मैं हूँ, end भी मैं हूँ।

विलक्षण अर्थात दूर२। तुम दूर नहीं जाते हैं। तुम घर का दिया है। फिर कोई रोड की बत्ती कोई चंद्रमा कोई सूरज। चंद्रमा भी सूरज से रोशनी लेता है। कोई M० से रोशनी लेता है तो चंद्रमा है। सूरज का कोई तेज नहीं सह सकता तभी सूरज तक नहीं जाता। पर सूरज से भी अति परे। सूरज भी पत्थर जड़ है, वो भी देखा है पर अति परे जो मैं हूँ उसकी मुझे जान कारी होवे। तुम चोटी तक बाजू तक भी नहीं जानेगा। जैसे एक ही धागा है उसमें इतने मोती है – एक ही तार है।

तुम आँखों से ध्यान लगाता है। वो तो मोर भी मोरनी से आँखें मिलाती है। मोर की आँखों से आँसू गिरते हैं मोरनी पीती है तो बच्चा होता है। तो ये आँखों का रस पीना भी sex हो गया है। कितना भी ध्यान लगा पर अज्ञान का बीज नाश नहीं होगा। गरीबी साहुकारी अंदर से खत्म होगी ज्ञान से। तू ध्यान लगाएगा वो मूर्ति आएगी तू अटक जाएगा क्यों कि आँख मिलाई तो नाम रूप ज़रूर आएगा। तू ज्ञान से अन्दर जा सकता है। तू गुरु में इतनी श्रद्धा रख जो तुम्हारे भीतर ज्ञान होवे। वाणी और दृष्टि दोनो हैं चोर्चो। पर हृदय की तार लगाए। कोई व्यक्ति मेरे दिल में बैठे तो आँखों में सच्चा नूर झलकार दृष्टि, ब्रह्म नहीं रहेगा। मैं निर्वासना हूँ तब ब्रह्म मेरे हृदय में बैठेगा। हम उस व्यक्ति को भी बोलेगा तू अन्दर की तार लगा। जो अव्यक्त अति परे है उसमें तू ध्यान कर।

वो कैसे तेरे को मिलेगा? जब कोई व्यक्ति, पत्थर

343

8/20 (H) Cont.

लाग तू बोल हट जा, don't care कर सबको। आत्म रस No करना पड़ेगा तू मेरा नहीं है। कबीर की दिल थी रामानन्द को गुरु बनाऊँ पर वो नहीं मानता है तो कबीर रामानन्द के रास्ते में रोक कर सो गया। रामानन्द ने बोला उठो, राम² बोलो चार बजे हैं, क्यों सोया पड़ा है? जागो। रामानन्द को सारी दुनिया ने बोला कि कोढ़ी को शिष्य क्यों बनाया? रामानन्द ने बोला मैंने शिष्य देखा नहीं है। तब कबीर ने बोला मैंने माना है मेरे को राम² बोल कर जगाया है। तो देखो कबीर ने गुरु को पकड़ा पर रामानन्द पकड़ेगा तो कितनों को पकड़ेगा? तू आत्मा में जागेगा तो बोलेगा तू मैं एक हैं। शीशा शीशी मेरे पास नहीं है। ये पहेली तू नहीं समझता है कि मैं तुमको छुड़ाते भी नहीं हैं। अद्वैत में मैं दूसरा देखूँ भी नहीं। अद्वैत में नाहीं ठाकुर नाही दास। हम अद्वैत में टिकाएगा तू टिकेगा पर द्वैत की भक्ति अंगीकार नहीं करेगा। गुरु होवे guide. तुम्हारी देह और गुलामी सब को पसंद है। तुम्हारी गुलामी पति की बेटे की बाप की सब की पसंद है। सारी दुनिया की तू गुलामी करता है पर मैं क्यों गुलामी कराऊँ तू गुलामी करेगा तेरी हालत बुरी होगी। शेर उसको कहते हैं जो अपने पैरों पर खड़े हैं। जो अपनी आत्मा को छोड़ कर दूसरे को आत्मा देखे वो डायन है।

मेरे को हँसी आती है जब ये प्रसाद बाँटते हैं - मेरा प्रसाद है I am that मैं she he नहीं हूँ। ऐसा देखो मैं वो हूँ। तू पहले साकार मानते हैं। हम तुमको घट² वासी omnipresent देखेंगे। जो मिले भ० है, तू दूर क्यों जाते है? पुराना संस्कार निकाल दो। मैं तुमको भ० देखूँ तू फिर बाहर देखता है। कबीर तपस्या करेगा तो रामानन्द से ऊँचा उठेगा। अन्दर की तपस्या है। मन वाणी की तपस्या है इसमें pathless land है। जहाँ तू है वहाँ भगवान है। देहध्यास में देख नहीं

8/20 (I) Cont.

नहीं पाते हैं। तू सब से पूछो किस नज़र से सबने तुमको देखा ? हम ही तुमको भ० देखते हैं। फिर कैसे तुम बोलते हैं भ० मेरे को याद करते हैं ? तुमको भ० भुलाए तब याद करे। माँ एक बार पैदा करती है अगर वो दस बीस साल के बाद आएगा तो भूल थोड़ी जाएगी। भले कोई दूसरा गोद में ले तो भी सब उसको बोलते हैं तेरी माँ वो है।

तू अपने घर में ज़रूर आजा, खुदी के बदले खुदा को पाजा। रामकृष्ण बहुत देवी की भक्ति करता है पर गुरु ने बोला उसको देह भूलना पड़ेगा। उसने संकल्प में सिर काट दिया तो देह को उड़ा दिये - bodyless.

तुमको नज़र वाला भ० चाहिए हमको नज़र से ऊपर भ० चाहिए।

8/20 Cont J

भगवान - अव्यक्त भी नाम है कि मैं अव्यक्त हूँ वो अति परे हैं तो बोले कौन ? जो कोई वर्णन नहीं कर सकता। मैं कौन ? कृष्ण में भी थोड़ी बहुत हलचल है। उससे परे जो शान्त ब्रह्म है। वो अति शान्त है - ऐसा जो लीन हो जाता है वो कुछ बात ही नहीं कर सकता।

दुनिया में सब सत्संग एक ही level पर चलते हैं - जीव को ज्ञान देते हैं - ये करना चाहिए ये नहीं। परमात्मा को जानने के सिवाए तुमको टके का भी ज्ञान नहीं है।

= अव्यक्त भाव, अर्थात् अव्यक्त से परे तो शबरी कुबड़ी कैसे देखेगा साकार में भ० प्रकट होता है तो अर्जुन भ० को याद करता है। भ० भी अर्जुन के पास बुखार में जाता है पर क्यों जाए। भ० अव्यक्त है पर भगत उसको याद कर के भी व्यक्त न कर सके इसलिए अव्यक्त से भी परे विलक्षण अव्यक्त भाव है।

346

8 अध्याय

२। श्लोक- जो अव्यक्त 'अक्षर' इस नाम से कहा गया है उसी अक्षर नामक अव्यक्त भाव को परमगति कहते हैं तथा जिस सनातन अव्यक्त-भाव को प्राप्त हो कर मनुष्य वापस नहीं आते, वह मेरा परम धाम है।

भगवान- जो सनातन धर्म है माना आदि से ये ज्ञान है। सृष्टि थी तभी ज्ञान था। लोग अपना पुस्तक बनाते हैं पर सनातन ज्ञान एक ही ब्रह्म का है। देह को बाहर रख कर तुम इस सत्संग में आना। कितना दिल को योगी हो कर रहना है, भोगी नहीं। ये ज्ञान सनातन है। तुम मन बुद्धि से अज्ञानी हैं। तुमने अपने में विकार बनाया है। अव्यक्त भाव किसने बनाया भी था? कृष्ण कहते हैं ज्ञानी की बुद्धि में मैं आता हूँ अज्ञानी की नहीं। तुमने माया में बुद्धि रुलाई तो ब्रह्म को क्या जानेगा? तुम अपनी गलती को एकान्त में देखो। इतना control में है निश्चयात्मक बुद्धि क्यों नहीं होती। सब में माया पड़ी है। Money ले कर घूमते हैं कि भ० अंगीकार करो। तुम तो गुरु को भी गिराने आते हैं। पर गुरु निर्विकारी है तो तेरे को भी निर्विकारी बनाएगा। इधर उधर ही भटकेगा तो तंदरुस्ती भी बिगड़ेगी। तुम reality में आओ कुछ नहीं चाहिए।

8 अध्याय -

२२ श्लोक - हे पृथानन्दन ! सम्पूर्ण प्राणी जिसके अन्तर्गत हैं और जिससे यह सम्पूर्ण संसार व्याप्त है, वह परम पुरुष तो अनन्य भक्ति से प्राप्त होने योग्य है। .

भगवान - जभी तू आत्मा है तो मनुष्य भाव से आत्मा देखेगा ? एक में आत्मा एक को देह देखा तो तू मनुष्य भाव से किया। जो तू है वो मैं हूँ। तुम इधर एक वर्तन करेगा, उधर ब्रह्म की बात करेगा। तुम ब्रह्म की बात करो। घड़ी इक विसरे राम को तो ब्रह्म हत्या मोहे होय। सन्त दर्शन जाइए, संग न लीजे कोय। तुम्हारे अन्दर gang लगी पड़ी है। सच्चा प्यार होवे। एक ही भाव से भ० में रहे।

348

8 अध्याय – 23, 24, 25

(A) 23 श्लोक – हे भरत वंशियों में श्रेष्ठ अर्जुन! जिस काल में (अर्थात् मार्ग में) शरीर त्याग कर गए हुए योगीजन तो वापस न लौटने वाली गति को और जिस काल में गए हुए वापस लौटने वाली गति को प्राप्त होते हैं, उस काल को अर्थात् दोनों मार्गों को कहूँगा।

24 श्लोक – जिस मार्ग में प्रकाश स्वरूप का अधिपति देवता, दिन का अधिपति देवता, शुक्ल पक्ष का अधिपति देवता और उत्तरायण का अधिपति देवता है उस मार्ग में मर कर गए हुए ब्रह्मवेत्ता योगीजन उपर्युक्त देवताओं द्वारा क्रम से ले जाए जाकर ब्रह्म को प्राप्त होते हैं।

25 श्लोक – जिस मार्ग में धूम का अधिपति देवता, रात्रि का अधिपति देवता, कृष्ण पक्ष का अधिपति देवता और छः महीनों वाले दक्षिणायन का अधिपति देवता है, शरीर छोड़ कर उस मार्ग से गया हुआ योगी (सकाम मनुष्य) चन्द्रमा की ज्योति को प्राप्त हो कर लौट आता है (अर्थात् जन्म मरण को प्राप्त होता है)।

भगवान – जो भी उत्तरायण में शरीर छोड़ता है माना आत्मा में ऊपर। शुद्ध अभिमान है कि मैं अजर अमर हूँ। वह समझेगा कि सूर्य जैसा ज्ञान उदय किया है अब जन्म मरण नहीं है। वो ब्रह्म में लीन हो जाता है। माना उसको पहले ही इतनी practice है, ज्ञान है, Omnipresent है तो उसको लगता ही नहीं है कि मैं मरता भी हूँ। जो आत्मा में टिकेगा उसमें कितना तेज होगा। उसको अन्दर में सुजागी है। वह ब्रह्म चिन्तन में रहता है। वह शान्त है। तुम ब्रह्मज्ञानी का इशारा समझो। खुद की value करो जैसे भीष्म पितामह ने उत्तरायण में शरीर छोड़ा, कृष्ण ने जगाया।

जो दक्षिणायन में शरीर छोड़ता है माना अंधेरे धुंए में जाता है। वो जन्म मरण में वापस आता है। शरीर छोड़ने पर भी देह अभिमान था। पदार्थ की भावना थी, जगत की भावना थी।

347

8/23,24,25(B) Cont.

ऐसे शुक्ल पक्ष चाँदनी रात है और कृष्ण पक्ष अंधेरी रात तो जो देहध्यास में होगा वो समझता है अंधेरे में जा रहा हूँ। उसको लगता है कि कोई नर्क में घसीट के ले के जाता है। माना उसकी कर्म की रील सामने आएगी। फिर भगवान बोलेगा बताओ अंतिम इच्छा क्या है? कुछ न कुछ बकेगा तो वो जन्म लेगा। कोई देह में होवे, बोले उस समय अभ्यास हो जाएगा तो नहीं। अभी से अभ्यास करना है। जैसे शरीर छोड़ने पर कईयों को पीड़ा होती है तो क्यों? जैसे छोटा बच्चा है, सारा साल पढ़ाई करता है तो पेपर में fresh बैठेगा खुशी में पर जिसने पढ़ाई नहीं किया वो डरेगा। Practice नहीं करेगा तो कैसे होगा। क्रम से धीरे धीरे आत्मा में चढ़ता जाएगा। मुक्त का अभिमानी मुक्त है। बन्धन का अभिमानी बन्धन में है। जो निश्चय कर के बैठा है तो मौत, बीमारी बुढ़ापा नहीं आएगा।

जैसे२ विकार छोड़ते जाएंगे सब इंद्रियों का ब्रह्मचर्य – आँख ने क्या देखा? जीभ ने क्या खाया? जो अपना विचार करता है अनुभव करता है वह बोल सकता है। जब उत्तरायण में आएगा तो अन्दर से बात करेगा। अभी भी मेरी बात को भूल जाओ। अपने में आ जाओ – जैसे सूर्य होता है ऐसा चमकता है।

शरीर में रहेगा तो सब कर्म सकामी में सब आ गया। करेगा। सूरज को अपनी रोशनी है पर चन्द्रमा उससे रोशनी लेता है। तभी तो सूर्यलोक में कोई जाता नहीं। गीता के रहस्य को कौन जानेगा। दो गतियां हैं, उत्तरायण और दक्षिणायण। उत्तरायण माना मनुष्य शरीर छोड़ते समय सूर्य के प्रकाश, शुक्ल पक्ष में प्राण छोड़ता है। क्योंकि

8/23,24,25 Cont. (c)

क्योंकि शरीर छोड़ने से पहले उसकी सम्पूर्ण कामनाएं नाश हो गई हैं। तो शरीर छोड़ने न छोड़ने से उसका कोई वास्ता नहीं, देह का भाव ही नहीं तो ज़रूर ब्रह्म भाव है। लोग समझते हैं ज्ञान माना वैराग्य पर ज्ञान माना आत्मा, निश्चय में पक्का है कि देह कपड़ा है। मैं उसको धारण करने वाला हमेशा हूँ ही हूँ।

दक्षिणायण माना देह ध्यास। इसमें उसको मौत भास्ती है क्यों कि 'मैं' मरता है, देह छोड़ता है। घर बार, पदार्थ, कर्म किए उसके मन में हैं और याद हैं तो शरीर छोड़ते समय उसके अन्दर में लड़ाई चलती है। रोता है देह छोड़ के, देह में फंसा हुआ है जो उसको ब्रह्म की बिल्कुल जाँच नहीं है। इस लिए वो 84 के चक्कर में, (जन्म मरण में) आता है।

क्रम² से माना जो गुरु में मन रखेगा वह Be still हो जाएगा, फिर be still से अकर्ता, अकर्ता से निर्वासिना होजाएगा।

पहले अपनी will से चलता है फिर गुरु की will से तो अहंकार खतम हो जाएगा।

ज्ञान से निष्काम, निष्काम से प्रेम, फिर प्रेम में मन नहीं रहता है। जितना² ज्ञान में realise करेगा, क्रम² से माया रहित होताजाएगा फिर उतना आत्मा के निश्चय में आएगा। जितना² झुकेगा, नम्रता करेगा उतना² आत्मा में चढ़ता जाएगा।

अभिमानी देवता माना गर्व है। जो आत्मा में है तो उसी अनुभूति में है कि ब्रह्म है तो उसका तेज सूर्य की तरह है। हमेशा चमकता है तो मरते समय भी उसी अभिमान में है। आत्मा का अभ्यास जवानी से किया तो मुक्त ही है।

चंद्रमा की ज्योति माना देह में कभी अंधेरा कभी रोशनी। पूरा सुजाग नहीं है। तो जन्म मरण में आएगा।

35/8

8 अध्याय

26 श्लोक – क्योंकि शुक्ल और कृष्ण – ये दोनों गतियां अनादि काल से जगत – (प्राणिमात्र –) के साथ सम्बन्ध रखनेवाली हैं। इनमें से एक गति में जाने वाले को लौटना नहीं पड़ता और दूसरी गति में जाने वाले को लौटना पड़ता है।

भगवान – दो गति बताते हैं। ब्रह्म में जो है वो तो वापस नहीं आता। सत्कर्मी को मालूम है कि स्वर्ग मिलेगा, बदकर्मी को नर्क। पर आत्माकार तो कुछ करता ही नहीं है। वह सब कुछ भुलाकर बैठा है। दो गति कोई समझते नहीं। पाठ करते थे पर ऐसा खोल कर किसी ने ज्ञान बताया नहीं। कोई आता है मोक्ष के लिए पर कर्म काण्ड में लग जाता है। लोग ब्रह्मज्ञानी को नास्तिक समझते हैं, पर वह actionless, thoughtless है। Body मुर्दे जैसी होगी जैसे जलेली रस्सी बांधने के काम नहीं आती ऐसे ज्ञानी का कर्म बांधने के काम में नहीं आता। भक्त की बंदगी है रज़ा में राज़ी रहना। जो भक्ति करेगा सो मांगेगा पर आशिक की नमाज़ है रज़ा में राज़ी रहना।

352

8 अध्याय - 27, 28.

(A) 27 श्लोक - हे पार्थ, इस प्रकार इन दोनों मार्गों को तत्व से जान कर कोई भी योगी मोहित नहीं होता। इस कारण हे अर्जुन! तू सब काल में समबुद्धि रूप योग से युक्त हो कर, अर्थात् निरंतर मेरी प्राप्ति के लिए साधन करने वाला हो।

28 श्लोक - योगीजन इस रहस्य को तत्व से जान कर वेदों में, यज्ञों में, तपों में, तथा दान में जो 2 पुण्य फल कहे गए हैं उन सभी पुण्य फलों का उल्लंघन कर जाता है और सनातन परमपद को प्राप्त होता है।

भगवान - सारा टाइम बोलता है निरंतर मेरे में मन रखो। जो दो गति को जानता है, जो ब्रह्म में लीन है निःसंदेह मालूम है वापस जन्म नहीं लेगा। तत्व को जानता है तू regular आत्मा है। आत्मा में टिकना चाहिए। पहले भ० है पीछे तू है। गुरु से सलाह करेगा - पक ही पक। देह-ध्यास छूट जाएगा। अज्ञान के कारण अपने को देह माना है। सामान्य वृत्ति से मैं हूँ, मेरा है, मैंने कुछ किया - अहंमता, ममता, कर्ता - तीनों विकार गए। Past, present, future कुछ याद नहीं है। कोई सत बद किया तो जन्म मरण मिलेगा। Account होगा मेरे को तू भूल गया। मेरा बोलने से मुँह में काँटा लगेगा। ऐसी जागी आएगी। पहले 'तू मैं' के बाज़ार में खड़े थे। मनुष्य को दो गति पहचाननी है। आत्मा को जानेगा चुस्त होगा - वेदान्ती चुस्त है। शरीर का मोह ही कमज़ोर करता है। जब आत्मा है, शरीर अलग हो गया। रावण का अहंकार गया। रावण माना दस इंद्रियों का अहंकार। राम के बाद सीता हुई माना संतोष आ गया। No hurry, no worry. कोई भी बात का इंतज़ार नहीं, बेकरारी नहीं। होगा तो मंज़ूर है देखा जाएगा। Want ही मनुष्य को भिखारी बनाती है। मैं हूँ तो विकार उठता है। पहले अपना मौत कर फिर भक्ति कर्म करना। तब जो होगा समानता में होगा। समानता में आने से विक्षेप नहीं आता है। एक² में अनन्य रूप करके देखो। पहले अपनी परछाई करके देखो - मैं हूँ फिर out नहीं होगा। ज्ञानी का हाथ सर्व की भलाई में है।

353

8/27.28 (B) Cont.

अपनी भलाई के लिए कुछ नहीं रखा है। सर्व में देखे भगवान। सब की भलाई में जो रहता है खुद की भलाई हो जाती है। वेद त्रिगुण माया है। तीन गुण में वेद हैं। सतोगुणी को यह करना — सारा common sense लगा पड़ा है। देह की बात। आत्माकार बुद्धि से अपर है, शास्त्र कैसे लिखेगा? वेद लिखने पढ़ने वाले सब बुद्धि वाले हैं। सूरज में कुछ नहीं है। चंद्रमा सूरज से तेज लेता है — कभी बीज कभी फूल कभी अमावस। ज्ञान का सूरज सब से ऊँचा है। उसको कुछ भी नहीं चाहिए।

तुमको बोलेगा कर्म छोड़ो, तुमको सुख आएगा? पहले 4 ऋषि आया, पीछे वेद बना पहले कृष्ण आया पीछे गीता बनी। कृष्ण के सामने गीता पढ़ेगा? सन्त की महिमा वेद न जाने। संत इतना विशाल है, वेद क्या करेगा। गागर में सागर आएगा क्या? कई लौकिक दुनिया की बातें उसमें लिखी हैं। चार महावाक्य — अहं ब्रह्मास्मी, तत्त्वम् असि, अयमात्मा ब्रह्म, प्रज्ञानं ब्रह्म भी उसमें है। जो आत्मा अनुभव करता है उसको छोटे² तालाबों से क्या मतलब। तुम तत्त्व को जानो सर्वज्ञ होगा। एक सुई भी तुम्हारे से जुदा नहीं। भ० ने विराट स्वरूप में बताया सब मैं ही हूँ। पहले नि० भ० है उसके ऊपर कवर है। सब पीछे बना है जैसे बाल पीछे पहले होते हैं, फिर बढ़ जाते हैं। Fan है तो Current annexy हुआ। नि० रूप मेरा, निर्गुण आप सगुण भी सोई। निर्गुण सगुण भेद नहीं है। Fan है तो current है, current है तो fan है। Foundation तुम नहीं जानते हैं। सब चीज का ज्ञान एक बीज से मिलता है। कर्म नहीं देखना, मर्म पूछना। अन्दर का है सब। जब प्रश्न पूछेगा अन्दर का राज़ मालूम पड़ेगा। नम्रता भाव से पूछो, तेरे में नम्रता नहीं है। नम्रता होगी झुक कर पूछेगा मेरी भावना में ये आया। तुमको संवाद करना नहीं आता। सम्बन्ध सब तज दे हो जा सुखी। प्रेम, नम्रता, श्रद्धा, लेने देने करने में कोई बात नहीं है। ज्ञान तेरी ही चीज़ है उठा। जब मोह नहीं लोभ नहीं तो इसका हक है, तू आपे ही देगा।

SMH

8/27.28 Cont. (C)

एक है चिचड़ एक है बद्दुड़ा। चिचड़ गाय का खून पीता है, बद्दुड़ा दूध। देहध्यास चिचड़ है। तू किसका खून पियेगा, कोई तेरा पियेगा। अशान्ति में चैन गँवायेगा – चिचड़ है चैन नहीं लेगा। लात लगाओ ऐसी माया को। रुपये का चार आना ले कर चैन से बैठो। तुम sleeping partner बनो। आज का मज़ा लो। कल नाम है काल का। तंदरुस्ती का भी ख्याल नहीं। मनुष्य शरीर सोने का थाल है। 80 वर्ष का बूढ़ा भी बेटे से पूछेगा कितना धंधा हुआ। बाहर से retire है अन्दर से नहीं। बूढ़ा घर में मुसीबत हुआ – जवान को तंग करेगा। जो बुढ़ापे मौत से छूटना चाहे वो ज्ञान समझे। तुम्हारा बेटा पाँव धो कर पियेगा, अभी आँख निकालता है।

= किस चीज़ का हम निश्चय करायें जो पहले ही आत्मा था और रहेगा। अपने आप को मिटा दो। जहाँ मेरी हस्ती है वहाँ मिटाने की है। 8 अध्याय में last में बोलता है जितने भी सत्कर्म किए हैं वो सब उलंघन करना है। पहले बद कर्म छोड़ो, फिर सत्कर्म छोड़ो फिर तुम कुछ नहीं करो। दया आती है जीव भाव में। आत्माकार को कभी दया नहीं आती। हम दया करें तो एक भी नहीं सुधरे, एक को भी सीधा नहीं कर सकें। भले ये तंग होवें कि रोज़ गुरु गाली देता है पर सुधर जायेंगे तो कितना आनन्द होगा। इधर ज्ञान किसको लगता है, तुम घर में भी पूरे हैं इधर भी पूरे हैं, duty में तुम्हारी beauty खलास हो जाती है। इधर तो ऐसा चाहिए जो ख्यालों से खाली तो कौन करे समाधि।

ॐ

नवाँ अध्याय

॥ ॐ ॥ दादा भगवान के श्री मुख से संक्षेप में

नवाँ अध्याय – योग और क्षेम का भार मुझ पर है। योग का मतलब – जो हमें अभी नहीं मिला उसे हासिल करना, क्षेम का मतलब है जो हासिल हो गया उसकी रक्षा करना। (योग – जो तुमको चाहिए, क्षेम – उसकी सलामती). जड़ चेतन में ही तो हूँ। तीनों वेदों के कर्मकाण्ड 84 की चरखी में पीसते हैं। तीर्थ तप और दान करे, मन में धरे गुमान नानक निष्फल जाए है ज्यों कुंजर स्नान। जो करो, मुझको अर्पण करो। सिर्फ self surrender + जो मेरी शरण लेते हैं वो परम पद को पाते हैं यानी आत्मा की शरण लेते हैं।

॥ ॐ ॥

श्लोक सूची

1) तुझ दोष दृष्टि रहित के लिए विज्ञान सहित ज्ञान ·
2) सब विद्याओं का राजा पवित्र, उत्तम, प्रत्यक्ष फल, धर्म युक्त, सुगम, अविनाशी।
3) श्रद्धा रहित संसार चक्र में
4) जग जल में बर्फ जैसा मेरे सं. के आधार पर मैं उनमें नहीं ·
5) ईश्वरीय योगशक्ति से धारण पोषण, उत्पत्ति पर मेरा आत्मा उनमें नहीं
6). जैसे आकाश में उत्पन्न वायु उसमें स्थित ·

(1–6: ज्ञान सहित ज्ञान)

7). कल्प अंत सब मेरी प्रकृति को प्राप्त ....
8). अपनी प्रकृति अंगीकार, स्वभाव और कर्म अनुसार रचना
9). कर्मों में आसक्ति रहित और उदासीन – नहीं बांधते
10) मुझ अधिष्ठाता, प्रकृति जगत रचती, संसार चक्र घूमता

(7–10: जगत उत्पत्ति)

11) मेरे परम भाव न जानने वाले जन मुझ महान ईश्वर को तुच्छ
12) व्यर्थ आशा, कर्म, ज्ञान वाले राक्षसी जन – मोहिनी प्रकृति ही धारण किए
13) दैवी प्रकृति वाले सब का सनातन कारण जान निरंतर भजते
14) मेरे नाम, गुणों का कीर्तन, बार² प्रणाम, ध्यान – उपासना
15) निर्गुण नि. ब्र. का ज्ञान यज्ञ द्वारा पूजन; पृथक² उपासना

(आसुरी प्रकृति निन्दा, दैवी प्र. उपासना)

16) क्रतु, यज्ञ, स्वधा, मंत्र, घी, अग्नि और क्रिया मैं
17) जग का धाता, कर्म फल देने वाला, पिता, माता, ॐ साम यजुर वेद भी मैं हूँ।
18) परम धाम, बदला न चाह कर हित करने वाला, आधार निधान, अविनाशी कारण मैं
19). सूर्य, वर्षा, अमृत, मृत्यु सत् असत मैं हूँ

(आत्म स्वरूप वर्णन)

20) तीन वेदों के सकाम कर्म करने वाले स्वर्ग प्राप्ति – दिव्य भोग
21) पुण्य क्षीण मृत्यु लोक प्राप्त – बार² आवागमन
22) अनन्य प्रेमी मुझे निष्काम भाव से भजते – उनका योगक्षेम
23) सकाम भक्त मुझे दूसरे देवताओं द्वारा पूजते पर अविधि पूर्वक
24) सम्पूर्ण यज्ञों का भोक्ता, स्वामी मैं; पर तत्व नहीं जानते
25) देवताओं को पूजने वाले उनको; पितरों को पूजने वाले उनको; मुझे पूजने वाले मुझको प्राप्त

(सकाम निष्काम उपासना फल)

26) पत्र पुष्प फल जल मैं सगुण रूप से खाता
27). कर्म, हवन, खाना, दान, तप सब मुझको अर्पण कर
28) कर्म मुझे अर्पण = संन्यास युक्त = शुभ अशुभ कर्म से मुक्त
29) मैं सम भाव से व्यापक; कोई प्रिय अप्रिय नहीं; भक्त में प्रत्यक्ष प्रकट

(निष्काम भक्ति महिमा)

9 अध्याय   श्लोक सूची   Cont.

30). अतिशय दुराचारी – अनन्य भाव से भजता – साधु

31) वह शीघ्र धर्मात्मा – परम शान्ति को प्राप्त – नष्ट नहीं

32) स्त्री वैश्य शूद्र पापयोनि मेरे शरण – परम गति

33) पुण्य शील, ब्राह्मण, राजर्षि – परम गति

34) मुझ में मन वाला, भक्त मुझमें नियुक्त मुझको प्राप्त

९ अध्याय

१ श्लोक – श्री भगवान बोले, तुम दोषरहित भक्त के लिए इस परम गोपनीय विज्ञान सहित ज्ञान को फिर से मैं अच्छी तरह कहूँगा, जिस को जान कर तू अशुभ से अर्थात् जन्म मरण रूप संसार से मुक्त हो जाएगा। .

भगवान – प्रेम स्वरूप गोपी का जितना प्रेम था उतना प्रेम आत्मा में रखो। परमात्मा को गोपी नाथ बोलते हैं। रहस्य को कोई जानेगा तो कोई बात सीखने की नहीं रहेगी। एक को भूला सब को भूला। बेअन्त का अन्त पाएगा तो बेअन्त होगा। ज्ञानी अन्त पा के संतुष्ट रहता है। जानने की इच्छा नहीं, सीखने की इच्छा नहीं। मन out होता है यह भी देखूँ। आप भये बुड्ढे तृष्णा भई जवान। तुम समझता है बड़ी age में इंद्रिय वश होगी। बूढ़ा बीमारी खरीद करेगा, taste नहीं छोड़ेगा। अपने को पूछना तंदरुस्ती से खाते हैं या taste से। एक आत्मा को जानने से सब कुछ वश होगा। ठोकर लगती है, कोई अपमान करता है तुम्हारा दिल टूटता है पर म० ने टूटे दिल को जोड़ दिया। दुनिया का हक टके पैसे का है। पति मरेगा। २ महीने दुःख करेगी फिर खाती घूमती है। तुम दुःख सुख में वैराग्य छोड़ देते हैं। Temporary वैराग्य है। ज्ञान से अज्ञान जाता है। Natural वैराग्य होता है। Wrong भी right हो जाता है। ज्ञान से वैराग्य आता है तब छोड़ना नहीं पड़ता, छूट जाता है (इससे भी क्या होगा)^2।

९ अध्याय

२ श्लोक – यह सम्पूर्ण विद्याओं का और सम्पूर्ण गोपनियों का राजा है। यह अति पवित्र, अति उत्तम, प्रत्यक्ष फल वाला, धर्म युक्त, साधन करने में बड़ा सुगम और अविनाशी है।।

भगवान – ये ज्ञान कितना पवित्र है, गुरु के सिवाए गत नहीं। ऐसे ज्ञान को तूने कैसे छोड़ा। इसमें कुछ नुकसान नहीं, फायदा तुम्हारा नुकसान हमारा। ये ब्रह्म ज्ञान सब विद्या से ऊपर है हमको खातरी है। वकील जज कोई भी आवेगा सब सलाम करता है कोर्ट में पर घर में आएगा माँ बोलेगी गोपाल भाजी ले कर आ। सब कुर्सी को सलाम करते हैं। ज्ञानी का सब टाइम valuable है। राजा भी छत्र उतार कर संत को सलाम करते हैं। ब्रह्मविद्या मास्टर of key है किधर भी चाभी लगाओ खज़ाना मिलेगा। कोई barrister भी है तो भी दुखी तो होगा। मैं आया अकेला तो कौन सा दुःख होगा। संत दुःख को जवाब दे कर बैठा है। तुम्हारी heart को वज्र की छाती बनाएगा। गुरु के ज्ञान से विकार जाएगा। धन से विकार होगा मैं इतना कमाता हूँ। सब विद्या अविद्या है। अविद्या माना अज्ञान।

= ज्ञान बहुत सुगम है पर इसको कोई सुगम करता नहीं है। तुम ज्ञान को कठिन कर देते हैं – समझते हैं माया छोडनी है, काजो है। तुम पहले ही पहाड़ देखते हैं तो चढ़ ही नहीं पाते। हम सच्चाई में रहते हैं तो पहाड़ कैसे देखें कि इतना बड़ा है, चढ़ना है। समझते हैं त्याग करना है पर त्याग कुछ भी नहीं खाली गलत संगत गलत बातें गलत कर्म छोड़ना है। वो गलत चीजों को गुरु आ के छुड़ाता है। दुनिया के कर्म काण्ड भक्ति में कर्म भी है फल भी है पर इसमें तो कोई बात ही नहीं है।

9 अध्याय

3 श्लोक – हे परंतप, इस धर्म में श्रद्धा रहित मनुष्य मुझको न प्राप्त हो कर मृत्यु रूप संसार चक्र में भ्रमण करते रहते हैं।

भगवान – ये ज्ञान श्रद्धा का है। दुनिया के गुरु lecture करते हैं श्रद्धा नहीं देखते हैं। तुम्हारी श्रद्धा ऐसी है, अटूट नहीं तो ज्ञान भी नहीं मिलेगा, पूरा ज्ञान नहीं मिलेगा। श्रद्धा माना तू ही है। जैसे अर्जुन कृष्ण को कहता है तुम्हारे सिवाए कोई विरामत नहीं उतारेगा। हिन्दु अंधा .... । है ही एक नि०। तुम कौन हैं? पुजारी जो हैं वो मूढ़ हैं – दूसरे की पूजा करते हैं। किस कारण इधर उधर देखते हैं? अपने में श्रद्धा जगाओ, मैं ही आत्मा हूँ, भ० हूँ तो तेरा ही मन ज्योति स्वरूप है। अपने में श्रद्धा पक्की रखो – मैं ही तो हूँ। भगवान को ढक कर जीव भाव में आ कर इधर उधर भटकते हैं। जिस के अन्दर विश्वास प्रभु आया तत्व बोध तिस मन प्रगटाया। तुम स्वयं ज्योति है अपनी ज्योति को पहचान तो शान्ति मिलेगी। तुमको अपना दिया जलाना है। तेरा मन ज्योति नहीं है – डरेगा, आत्मा है निर्भय है। गुरु को अपना आपकरके देखेगा। शेर का बच्चा शेर है। अपनी जागृति कर के बैठ। काम पूरा हुआ – अद्वैत मत, ये One without a second है। दूसरा है नहीं। अपने में श्रद्धा रखना मेरे में नहीं। नास्तिक वो है जो अपने में विश्वास नहीं रखता है। तेरा ही ज्ञान तुमको बंधन से छुड़ाएगा। कर्म योग गुरु ने सुनाए पर ज्ञान योग reality में जब आएगा तो लगेगा बंधन है कहाँ? बन्धन माना था। ज्ञानी को कहीं भी बैठाओ free ही free है।

9 अध्याय 4,5.

4 श्लोक – यह सब संसार (जल से बर्फ के सदृश्य) मेरे अव्यक्त स्वरूप से व्याप्त है और सब प्राणी मेरे अन्तर्गत (संकल्प के आधार पर) स्थित हैं, किन्तु वास्तव में मैं उनमें स्थित नहीं हूँ।

5 श्लोक – वे सब भूत मुझ में स्थित नहीं हैं किन्तु मेरी ईश्वरीय योगशक्ति को देख कि भूतों को धारण-पोषण करने वाला और भूतों को उत्पन्न करने वाला भी मेरा आत्मा वास्तव में भूतों में स्थित नहीं है।

भगवान – सामान्य आत्मा सब में है पर विशेष आत्मा तू नहीं था। आत्म ज्ञान सहित केवल बोला आत्मा हूँ तो नहीं है। जैसे बर्फ में पानी है ऐसे जगत जगदीश्वर है। निर्गुण है सगुण है, अलग नहीं। जगत दूषण नहीं भूषण है। अज्ञानी जगत देखेगा ज्ञानी जगदीश देखेगा। तुम्हारी भावना जुदा हुई तो समानता भूल गई। समानता देखो तो नज़र आएगा।

5 – आधार मेरा है पर मेरे को जानता नहीं है। देह में मरा गरा पड़ा है। भूत प्राणी 5 भूत की देह में रहता है। सारा दिन घोड़े की बात की। ब्रह्म का घात कर के परमात्मा को बन्द कर के अपना दिल दिखाते हैं। फिर भी अपने को वैष्णु कहते हैं। अभी ईश्वर सृष्टि में इतना रहो कि जीव सृष्टि को भूल जाए।

= वह मुझमें ही स्थित है पर आगे बोलता है मैं उसमें नहीं हूँ। सच्चा भगत हाज़िर नाज़िर देखेगा। 24 घंटे में किसको याद नहीं करता सिवाए भ० के। उसको याद है main power है परमात्मा तो सब उनसे हो रहा है। अज्ञानी यह बात नहीं समझता अपने ego में चलता है। पर गुरु करने से ego चला जाता है। मैं कैसे गुम होवे? गुरु को आगे रखना है। याद होवे हाज़िर नाज़िर कि गुरु ने जगाया है।

मैं ब्रह्म हूँ मैं आत्मा हूँ तो देह ही ब्रह्म समझेगा। पर गुरु प्रगट करें मेरी भलाई है नहीं तो मेरा ego भूलेगा नहीं। गुरु को कीर्ति नहीं चाहिए पर अपना नाम रूप भूले कि मैंने

9/4,5, (B) Cont.

कुछ नहीं किया। गुरु अपने गुरु को याद करे फिर वो अपना नाम रूप भुलाए। कुत्ता अपनी पूँछ नहीं पकड़ सकता। बीच का रास्ता नहीं निकालो – पूरा ego नहीं गया। श्रद्धा तीन किस्म की है पर कोई शास्त्र अनुसार या गुरु अनुसार नहीं चलते। गुरु से एक भी सच्चा कर्म किया तो core शान्ति आएगी। तृप्ति आएगी। उसमें ठप्पा लगा गुरु का। आपे ही कितना भी सत्संग करो पर M० के हुकुम से करो तो कितना हल्का होता है।

मन को माया भी थोड़ी अच्छी लगती है तभी पूरा surrender नहीं करता। बच्चे जैसा सीधा बात करो गुरु से। जिस आनन्द के लिए तू ढूंढ रहा है वह खाली गुरु के पास मिलता है।

हमेशा देखो गुरु कौन सा मिला है। गुरु वो जो अन्दर का त्याग हो जाए और मालूम न पड़े। गुरु ने आसक्ति की चोरी किया, विकारों की चोरी। त्याग नहीं कराता है। Power के आगे अंधेरा क्या करेगा? बाहर बैठता है। सन्यासी सब निरास हो गया। कौन perfect सन्यासी है जो तृप्त हो गया। eg. राजा जनक।

9 अध्याय

6 श्लोक – जैसे (आकाश से उत्पन्न) सर्वत्र विचरने वाली महान् वायु सदा आकाश में स्थित है, वैसे ही (मेरे संकल्प द्वारा उत्पन्न होने से) सम्पूर्ण प्राणी मुझ में स्थित हैं, ऐसा जान।

भगवान – हवा जहाँ तहाँ है ऐसे मेरे में रहने वाला मेरे में है। जो सच्चा है वह मेरे में है, मैं उसमें हूँ। अज्ञानी जानवर है मनुष्य कैसा भी पापी होगा, तरेगा। मनुष्य को प्रभु दीन्हीं बड़ाई। जब तू जानवर था ज्ञान नहीं ले सकता था। अब ईश्वर मनुष्य बना है, फिर देवता भी भ० भी बनेगा। वायु है, प्राण है ऐसे भ० है। प्राण आत्मा की सत्ता से चलेगा। तुम कैसे भ० भूल जाते हैं। तू जितना माँ बाप को जानता है भ० को नहीं। कोई माया नहीं है, return ticket ले कर आया है। सृष्टि में तो राम रावण भी है।

9

9 अध्याय

7 श्लोक - हे कुन्तीनन्दन ! कल्पों के अन्त में सब प्राणी मेरी प्रकृति को प्राप्त होते हैं (अर्थात प्रकृति में लीन होते हैं) और कल्पों के आदि में मैं फिर उनको रचता हूँ।.

भगवान - कल्प² में हमेशा² सृष्टि लय होती है फिर उत्पन्न होती है। कुछ नाश नहीं होता है। कोई ऐसा टाइम नहीं जो तू आया है भ० नहीं आया। भ० खुद भी आता है, तेरे को भी पैदा करता है। भ० है ही है। दुनिया अंधकार में बैठी है वो नहीं समझती भ० आया है।
= कोई चीज़ नाश नहीं होती है। किसी का अन्त नहीं होता। मेरे हाथ में क्या नहीं है ऐसा भ० दिखलाता है। कई जगह में इकट्ठे लोग तूफान में भूकम्प में मर जाते हैं फिर भी धरती हरी हो जाती है। उनको मैं फिर² रचता हूँ।

- चार प्रकार की सृष्टियां उत्पन्न होती है -
1 अण्डज - अण्डे से पैदाइश - जैसे पक्षियों के अण्डे
2 जेरज - जेर की पैदाइश अर्थात जेर में बच्चे बड़े होते हैं
3 उद्भिज - वृक्ष पौधे जो धरती की पैदाइश है
4 स्वेदज - पसीने से पैदाइश जैसे जूँ, खटमल आदि।

९ अध्याय

(A) 8 श्लोक – अपनी प्रकृति को अंगीकार करके स्वभाव के बल से परतंत्र हुए इस सम्पूर्ण भूतसमुदाय को बार-बार उनके कर्मों के अनुसार रचता हूँ।

भगवान – भूत है त्रिगुणी माया में। पहले तीन गुण योग माया से आये। सपने से जागेगा त्रिगुणी माया से ऊपर उठेगा। भ० की पहेली को भी जानेगा। तेरे से कोई कुछ करता है, क्यों करता है? कुछ foundation होगा। तू अपने को कसूर देना। पहले माया में विचलित होता था। जब माया दासी है कौन सी त्रिगुणी माया touch करती है। तू आत्मा है तेरे से माया डरेगी।

तू पुरुष है।

= इधर भ० ने तुम्हारा काला मुँह किया है। अपने स्वभाव से तुम कर्म बनाते हैं फिर बार² मरते हैं फिर आते हैं। देखो तुमको गीता में कृष्ण ने जीव बना दिया। जीव भाव ही कर्म बनाता है, जीव ही भाव में आता है। तुमको इतना डर नहीं है कि यह बात भी मुझ को जीव भाव में आई। कौन है जीव भाव से रहित? Challenge है तुमको! बाकी ज्ञान क्या है? इतना सरल ज्ञान सुना है?

तुमको ये जल्दी नहीं है कि मेरा ये जीव भाव छूट जाए, कुछ भी नहीं भासे। जीव की बांस ही नहीं हो। और देह से ऊपर हो जाऊँ। देह में खुशी रंज सुख दुःख होता है। अंतरमुख होगा तो बाहर की प्रकृति भुलानी नहीं पड़ेगी, भूल जाएगी कि मेरे देह में ऐसा होता है। देह ही नहीं है तो दुःख कहाँ से आया। सुबह से रात तलक देखो मेरा स्वभाव out क्यों होता है? एक भी कर्म क्यों बने?

"कर्तव्य जलती आग है, वो वृक्ष कैसे हो हरा है आग जिसमें लग गई?" अहंकार की नीचे से आग लगी पड़ी है

9/8 (B) Cont.

तो वृक्ष कैसे हरा होगा? जो भी हमारा कर्तव्य कर्म, duty है वो जलती आग है। हम कर्तव्य पूरा तो करते हैं पर अपने को सीधा नहीं चलाते हैं।

जीव भाव में राग द्वेष मान अपमान दुःख सुख सब लगता है पर जो जीव भाव से ऊपर है उसको कोई संसार का रंग नहीं चढ़ता। तुमको अंदर में कोई सबक ही नहीं है मैं कैसे निराहारी हूँ, असंग हूँ, अद्वैत साक्षी हूँ, दिव्य हूँ। अद्वैत तो कोई जानता ही नहीं है। द्वैत तो सब जगह चलता ही है। सत्कर्म भी करता है तो doer है। कौन है अकर्ता, कौन है जो जीव भाव छोड़ कर बैठा है कि भगवान का काम अभी उतर गया।

12

९ अध्याय

९ श्लोक - हे धनञ्जय ! उन (सृष्टि-रचना आदि) कर्मों में अनासक्त और उदासीन की तरह रहते हुए मेरे को वे कर्म नहीं बांधते।

भगवान- संसार घूमता है मैं नहीं घूमता। ब्रह्म देखेगा योग माया touch नहीं करेगी। पहले मन में भूत उठते थे। चाहे चौतरफी माया है, कॉटों की बारी है पर जितना आत्मा का संग करेगा माया से ऊपर उठेगा। तू कहेगा इसको माया कम है इसको ज्यादा पर माया तो माया ही है। मनुष्य जन्म लड़ने के लिए मिला है। उदासीनता और वैराग्य में ज्ञानी रहता है उसे सुजागी है। कर्म से न बंधू। तुमको डर लगता है ऐसा कर्म न करूँ जो बाँधे। तुम्हारी कर्म में रुचि है ज्ञान ही ज्ञान है तो कर्मों को भी जानेगा। अज्ञानी गोरख धन्धे में फंस जाते हैं। ज्ञानी बन्धन तोड़ बनता है। वो तुमको भी बन्धन तोड़ बनाता है। तुम 50 वर्ष में retire नहीं हैं। ईश्वर सब free है, इनको खाना भी नहीं चाहिए। कर्म को जाना कर्म stop किया? इस रूप में नहीं तो उस रूप में किया। एक सेठ है २० कारखाने हैं, वो बीस कारखाने में थोड़ी जाता है। मैं बैठूं, ईश्वर माया की management आपे ही है। तू भाजी लेने खुद ही जाएगी कि नौकर। रुपया जेब में डालेगा। तू नौकर में दोष देखेगा। कर्म तुमको प्रिय है पर ज्ञान में अकर्ता होना प्रिय नहीं है। कर्म में रुचि वाला कभी न कभी ज्ञान गंवाएगा। बीमारी कितने कर्म छुड़ाती है? सब भलाई के लिए होता है।

९ अध्याय

१० श्लोक – प्रकृति मेरी अध्यक्षता में सम्पूर्ण चराचर जगत् को रचती है और इस हेतु से ही यह संसार चक्र घूम रहा है।

भगवान – सब का बीज स्वरूप प० है। उससे ही यह सब होता है। जो कुछ भी भासता है उसका कारण परमात्मा ही है। बीज के ज्ञान से पेड़ का पता चलता है। तुम एक तिनका तो बना के दिखाओ। तिनका भी भ० ही हुआ है। भ० ही फैल गया है। मैं ही तो हूँ।

९ अध्याय 11, 12, 13

(A) 11 श्लोक – मेरे परम भाव को न जानने वाले मूढ़ लोग मनुष्य का शरीर धारण करने वाले मुझ सम्पूर्ण भूतों के महान् ईश्वर को तुच्छ समझते हैं।

12 श्लोक – वे व्यर्थ आशा, व्यर्थ कर्म और व्यर्थ ज्ञान वाले विक्षिप्त चित्त अज्ञानी जन राक्षसी, आसुरी और मोहिनी प्रकृति को ही धारण किये रहते हैं।

13 श्लोक – परन्तु हे पृथा पुत्र, दैवी प्रकृति के आश्रित महात्माजन मुझको सब भूतों का सनातन कारण और नाश रहित अक्षर स्वरूप जान कर अनन्य मन से युक्त हो कर निरंतर भजते रहते हैं।

भगवान – तत्व को न जाना तो आना जाना बेकार है। एक बूंद भी ज्ञान की नहीं मिलेगी जब तक तू मेरे दिव्य स्वरूप आत्मा को नहीं जानेगा। जब दिव्य स्वरूप को जानेगा तो तू दिव्य हो जाएगा। तू मेरे को दिव्य जाना तो अन्दर वाला unconscious भी दिव्य हो जाएगा। दिव्य माना जो आत्मा से बात लगती है। रोशनी है, सच है। उसे जानो पर देह को नहीं देखो। भ० हमेशा प्रगट होता है तो एक दो ही क्यों पहचाने, जब सब उसका रूप हैं तो एक२ देखे कि ये भी मेरा रूप है। भ० को भी ठगते हैं कि भ० को क्या पता। तुमने चोरी किया, इच्छा किया, पर भ० देखता है। अब यह शरीर गलत कर्म कर ही न सके – current आए। रोको नहीं पर निर्णय कर के निकले।

भ० का दिव्य स्वरूप है। दिव्य माना अलौकिक। लोक दृष्टि में भाई बहन देखते हैं, पूजा करते हैं। पर ज्ञानी है अनुभव मात्र। मीरा भी last में अद्वैत में आई कि राम पति वर पाया – कृष्ण नहीं। पहले कृष्ण२ करके घूमती थी। रवि दास ने सुजाग किया कि मूर्ति अपने में समा जाए। मूर्ति दीवार है। ब्रह्म का अनुभव कैसे होवे? इसीलिए गुरु अव्यक्त होना चाहिए। मेरे स्वरूप को जो आला जानेगा – दिव्य स्वरूप सत्–, उसका कर्म दिव्य वह कर्मातीत है।

15

मैं दूसरा देखता नहीं तो कर्म कैसे करें ? होता भी है तो इंद्रियों का धर्म है। मेरे अन्दर में seer पना है doer पना नहीं है। समानता योग में दूसरा नहीं है। समानता योग पक्का करो कि सब मैं ही तो हूँ तो देखो किसमें आनन्द आता है। जो भी सामने बैठे उसमें अपनी आत्मा डाल कर मज़ा लेना पड़ता है। अपनी आत्मा, अपना ज्ञान। जो मैं हूँ वो सब में देखें। जब लग देखी तब लग माया। इस आँख से जो देखा माया देखा। ये आँख गलत देखती है पर बिन आँखें देखना। जैसे कोई दो गाली देता है तो mood बा होती है। अन्दर उसके लिए क्या२ सोचते हैं ? हम उसे जानते हैं कि अन्दर में क्या emotion हुआ। इधर भ० बैठे पर हम चालाकी ठगी में चलते हैं। भ० से दूर हैं तो भ० सौ कोस दूर है। जितना सहेली याद है उतना भ० नहीं। कितना भ० याद है ? भ० को omni present देखे तो वो ही है, मैं नहीं हूँ। तू भ० से आया वो ही रक्षा करता है। तू चलता है - तेरे साथ है। उसको दिल नहीं है मैं दिखने में आऊँ। जिसको भ० दिव्य दृष्टि देते वो उसको जाने। जो जैसी इच्छा रखे वो जाने। मेरा काम नहीं है मैं कपट विकार निकालूँ। पर तू सामने आ। उसकी कृपा हमेशा है पर तुम्हारी कृपा अपने पर है? सतगुरु रोशनी दे, तुम torch पकड़ो। तुम्हारी कृपा है, मेरी बात नहीं। भ० का प्यार आकर्षण है। जितना pure होगा, भ० के नजदीक होगा। तुम्हारा पछताना ही काफ़ी है। गुरु परमात्मा है क्यों कि वह परमात्मा का पैगाम देता है। ये आत्मा तुमको जगाती है, वाणी तुमको जगाती है। तू जागते हैं तभी आते हैं। मैं माना यह body नहीं परइश्वर से तुम जागते हैं। Body consciousness मे नहीं रहें। Oneness में आएं कि ईश्वर से ले कर सब मैं ही हूँ। तुम्हारे करने से कुछ नहीं होगा पर सृष्टि चलती है।

16

9/11, 12, 13 (c) Cont.

अर्जुन ने सौ सूरज की रोशनी देखी पर और सब ने नहीं देखी तो वह रोशनी कैसे देखी ? जो चीज़ तुम्हें प्यारी लगती थी वह अब अप्यारी हो गई तो वो रोशनी से ही। ज्ञान अंजन शुरू दिया .... । जो पहले तुम देखते थे वो दृष्टि मैंने खतम कर दिया कि सच्ची light क्या है ? आत्म विचार से देखते हैं। तू बोलेगा कितनी रोशनी भ० से लेने की है। वैराग्य आता है कि इतना जगत को सच माना - भ० ने कहा मिथ्या है। अर्जुन बोलता है मैंने जो रोशनी देखी मैं जानता हूँ तो लगता था एक बल्ब जलता था सौ आदमी देखता था। उसकी ऐसी रोशनी थी जो अर्जुन ने देखी बाकी ने नहीं । तो चम की आँखों से नहीं देख सकेगा । दिव्य दृष्टि से देखेगा । पहले दिन तुम आए थे अब कितना change हुए है ?

9 अध्याय 14, 15, 16, 17.

(A) 14 श्लोक – वे दृढ़ निश्चय वाले भक्तजन निरंतर मेरे नाम और गुणों का कीर्तन करते हुए तथा मेरी प्राप्ति के लिए यत्न करते हुए मुझको बार बार प्रणाम करते हुए, सदा मेरे ध्यान में युक्त हो कर अनन्य प्रेम से मेरी उपासना करते हैं।

15 श्लोक – दूसरे ज्ञान योगी मुझ निर्गुण निराकार ब्रह्म का ज्ञान यज्ञ के द्वारा अभिन्न भाव से पूजन करते हुए भी मेरी उपासना करते हैं और दूसरे मनुष्य बहुत प्रकार से स्थित मुझ विराट स्वरूप परमेश्वर की पृथक् भाव से उपासना करते हैं।

16 श्लोक – क्रतु मैं हूँ, यज्ञ मैं हूँ, स्वधा मैं हूँ, औषधि मैं हूँ, मंत्र मैं हूँ, घृत मैं हूँ, अग्नि मैं हूँ और हवन रूप क्रिया भी मैं ही हूँ।

17 श्लोक – इस सम्पूर्ण जगत् का धाता अर्थात् धारण करने वाला एवं कर्मों के फल देने वाला, पिता, माता, पितामह, जानने योग्य, पवित्र ओंकार तथा ऋग्वेद, साम वेद और यजुरवेद भी मैं ही हूँ।

भगवान – वह ब्रह्म ही ब्रह्म देखता है। ब्रह्म की उपासना करता है। ब्रह्म ही रहे मैं न रहूँ। उसकी उपासना नाना हर चीज़ में ब्रह्म ही देखता है। अग्नि देखे या जो तिल देखे ब्रह्म ही देखता है। उसको देख के उपासना करता है (ये भी मेरा रूप है)², इसमें भी मैं उसमें भी मैं। मेरे से कोई चीज़ जुदा नहीं है। ये ब्रह्म उपासना है जो इधर से लेकर सब में वो ही देखेगा, दूसरा नहीं। ये चोर है ये ब्रह्म कैसे हो सकता है? वो नीच नहीं देखता है पर सब मैं ही तो हूँ। 4 वेद भी खड़े हैं जैसे धरती खड़ी है। उस पर तुम सब खड़े हैं। धरती नीचे ऊपर भी कभी² होती है पर धरती खड़ी है। जहाँ पाप होता है तो धरती भी हिलती है। जहाँ शुद्ध मन है तो धरती नहीं हिलती है। जैसे धरती पर खड़े हैं ऐसे आत्मा पर तुम खड़े हैं मां बाप के ऊपर नहीं। उस आत्म तत्त्व को जानना पड़ेगा कि

18

9/14, 15, 16, 17 (B) Cont.

मेरा क्या तत्त्व है। Essence क्या है? निर्णय करो कि सत् क्या है। आत्म तत्त्व में कोई मेरा नहीं पराया नहीं। पर तुम संसार मन में ले के बैठा है। जीते जी देखो तुम्हारी वासना किधर जाती है। तुम्हारे मरने के बाद सब free हो जाते हैं तो तुम नीच क्यों बनता है जो उनको पकड़ के बैठा है।

= देखो टोटल मैं किसमें नहीं हूँ? जैसे तुम किसी को अच्छा मानो, अच्छा बुरा भी देखो तो सब मैं ही हूँ देखोगे तो और देखना बन्द हो जाएगा। समानता के ज्ञान में अलग पन छूट गया तभी बोलता है हाथी, चोर, चाण्डाल, कुत्ता, वैश्या सब मैं हूँ। किस में मैं नहीं हूँ? Where not God.

९ अध्याय 18, 19, 20, 21 (A)

18 श्लोक – प्राप्त होने योग्य परम धाम, भरण पोषण करने वाला, सब का स्वामी, शुभाशुभ का देखने वाला, सब का वासस्थान, शरण लेने योग्य, प्रत्युपकार न चाह कर हित करने वाला, सब की उत्पत्ति-प्रलय का हेतु, स्थिति का आधार, निधान, और अविनाशी कारण भी मैं ही हूँ।

19 श्लोक – मैं ही सूर्य रूप से तपता हूँ, वर्षा का आकर्षण करता हूँ और उसे बरसाता हूँ। हे अर्जुन! मैं ही अमृत और मृत्यु हूँ और सत् असत् भी मैं ही हूँ।

२० श्लोक – तीनों वेदों में विधान किए हुए सकाम कर्मों को करने वाले सोम रस पीने वाले, पाप रहित पुरुष मुझको यज्ञों के द्वारा पूज कर स्वर्ग की प्राप्ति चाहते हैं, वे पुरुष अपने पुण्यों के फल रूप स्वर्ग-लोक को प्राप्त हो कर स्वर्ग में दिव्य देवताओं के भोगों को भोगते हैं।

२१ श्लोक – वे उस विशाल स्वर्गलोक को भोग कर पुण्य क्षीण होने पर मृत्युलोक को प्राप्त होते हैं। इस प्रकार स्वर्ग के साधन रूप तीनों वेदों में कहे हुए सकाम कर्म का आश्रय लेने वाले और भोगों की कामना वाले पुरुष बार² आवागमन को प्राप्त होते हैं, अर्थात् पुण्य के प्रभाव से स्वर्ग में जाते हैं और पुण्य क्षीण होने पर मृत्यु लोक में आते हैं।

प्रेमी – भ० निधान का अर्थ बताइए।

भगवान – निधान का अर्थ है – प्रलय काल में सम्पूर्ण भूत सूक्ष्म रूप से जिसमें लय होते हैं, जैसे थोड़े समय की नींद में मन लय हो जाता है पर वासना रहती है। सिर्फ बेखबरी होती है ऐसे ही प्रलय के समय सम्पूर्ण भूत प्राणी को relax मिलता है पर वासना फिर उत्पन्न हो कर कर्मों के अनुसार दुख सुख भोगेगी। ऐसा शास्त्रों में वर्णन किया है। निधान का अर्थ है परमात्मा ही आदि कारण है, वो ही निधान आधार है।

9/ 18, 19, 20, 21 · (B) Cont·

प्राप्त करने योग्य परम धाम - भरण पोषण करने वाला सब का स्वामी, शुभ अशुभ को देने वाला, सब का वास स्थान, शरण लेने योग्य, प्रत्युपकार न चाह कर हित करने वाला, सब की उत्पत्ति प्रलय का हेतु, स्थिति का आधार, निधान और अविनाशी कारण मैं ही हूँ। जैसे अपने शरीर को खिलाते पिलाते हैं तो कुछ भी याद नहीं रहता, ऐसे सब को अपना body समझ कर कर्म होते पर दूसरा न समझे। जभी दूसरा देखते हैं तो वासना की इच्छा होती है। जब मैं ही तो हूँ तो किस से return की इच्छा होगी।

परमधाम का मतलब जो बिल्कुल अपने निजधाम में हैं, अपने आत्मपद में स्थित है जहाँ कोई भी सं॰ वि॰ ख्याल नहीं है। अपने आप में तृप्त।

अमृत और मृत्यु एवं सत असत भी मैं ही हूँ। मतलब है सारे अध्याय में कृष्ण ने Capital I बताई है कि अमृत भी मैं हूँ। जो सत है वो भी मैं हूँ जो असत है वो भी मैं हूँ, मतलब foundation बताया है। सब का मूल कारण, foundation मैं हूँ, मेरे सिवाए कुछ भी नहीं है।

दिव्य पुरुष और दिव्य देवता का अर्थ है जो सत्कर्म करते हैं उनको अच्छे घर में जन्म मिलता है। उसको सब सुख साधन प्राप्त होता है। फिर जभी उसका कर्म फल बुरा होता है तो फिर मृत्यु लोक को प्राप्त होता है। मतलब खराब घर में उसको जन्म मिलता है।

= सोम रस है जो देवता पीते हैं। यह नीचे level की बात है। - स्वर्ग का रस लेता है, स्वर्ग की इच्छा करता है। जैसे कोई अच्छी चीज खाऊँ तो जैसे स्वर्ग का सुख है। देवताओं का पूजन कर के स्वर्ग का सुख लेगा फिर मृत्यु लोक में जाएगा - त्रिगुणमयी माया में फंसेगा। क्यों कि कोई न कोई भूल होती रहती है। फिर इसको मेहनत करनी पड़ेगी।

९ अध्याय

२२ श्लोक - जो अनन्य भक्त मेरा चिन्तन करते हुए मेरी उपासना करते हैं मेरे में निरंतर लगे हुए हैं उन भक्तों का योग क्षेम (अप्राप्त की प्राप्ति और प्राप्त की रक्षा) मैं वहन करता हूँ।

भगवान - पहले मनुष्य आता है तो उसको सलामती चाहिए घर की, ज्ञान की भी। तुमको लगता है कि ये ऊँचा ज्ञान है, हमारी ऐसी स्थिति बनेगी। तो माया ऊँची मुश्किल है तेरा योग क्षेम मेरे ऊपर है फिर अभी आत्मा में टिकेगा तो बोलेगा मेरे को इसकी परवाह नहीं है। पहले मन बोलता था ज्ञान लेंगे तो नुकसान तो नहीं होगा? तो भ० के रास्ते में मगज़ गिराता है कि ज्ञान मुश्किल है। Money useless कैसे करेगा? जो पदार्थ है परीक्षा के लिए है not भोगने के लिए। तुमने बोला सहज मिला सो दूध बराबर। तो मज़ा माना सज़ा। तो योग क्षेम क्या है? तुमने समझा मन की रक्षा होवे, पदार्थ की रक्षा होवे पर तुमको उसकी परवाह भी न होवे। "अव्वल अल्लाह नूर उपाया कुदरत के सब बन्दे...।" तो शरीर की प्रारब्ध है। गुरु वचनों से प्यार करेगा तो ज्ञान की रोज़ growth होगी। जैसे बचपन, जवानी, बुढ़ापा, मौत ये अवस्थाएं तेरी माँ ने बनाई ऐसे जितनी श्रद्धा होगी उतना ज्ञान बढ़ेगा। श्रद्धावान लभते ज्ञानं। पहले लोग बोलते थे प्रारब्ध पर विश्वास कराओ। अभी बोला आत्मा से योग कैसे होवे। योग माना connection. योग माना जो वचनों की ज़रूरत होगी वो गुरु देगा। गुरु जितना विवेक खोलेगा तो ज्ञान आएगा। माया की रक्षा तो आपे ही होगी। फिर तू क्यों सोचता है? तुम ज्ञान की रक्षा करो। ईश्वर सब के कर्म में टेप चलता है, गीता पढ़ते हैं कि कर्म न बने। एक ही परमात्मा है। तुम कुत्ते जैसा पहले रहते थे। दूसरा २ देखते थे। अज्ञानी कुत्ते की तरह हैं। तुमको office में भी दूसरा दिखता है। भाई बहन आएगा तो भी बोलेगा, आदमी औरत जाता है तो तेरी आँखें कौन सा काम करती हैं? बाबा मन की आँखें खोल। ये आँखें unnatural हैं जो जगत देखती हैं। तुम foundation को, बीज को देखो। ये कुदरत का power है जो इतना बीज बना। सर्वत्र भ० देखेगा तो योग क्षेम की परवाह न होगी।

9/22 (B) Cont.

= जो माँ तुमको वचन चाहिए ऐसे² वचन दे कर सतगुरु तुम्हारे अन्दर श्रद्धा डालते हैं फिर रक्षा भी करते हैं नहीं तो तुम शान सम्भाल नहीं सकेंगे उनके सिवाए। वो ताकत देते हैं, श्रद्धा देते हैं, क्या नहीं डालते हैं? कैसे पौधा बड़ा होता है, धरती कैसे पौधा बड़ा करती है, बच्चे कैसे बड़े होते हैं?

२३ श्लोक - हे कुन्ती नन्दन ! जो भी भक्त श्रद्धापूर्वक अन्य देवताओं का पूजन करते हैं, वे भी करते तो मेरा ही पूजन हैं, पर करते हैं अविधि पूर्वक ।.

२४ श्लोक - क्यों कि मैं ही सब यज्ञों का भोक्ता और स्वामी हूँ; परन्तु वे मेरे को तत्त्व से नहीं जानते, इसीसे उनका पतन होता है।

२५ श्लोक - (सकाम भाव से) देवताओं का पूजन करने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं, पितरों को पूजने वाले पितरों को प्राप्त होते हैं भूतों को पूजने वाले भूतों को प्राप्त होते हैं और मेरा पूजन करने वाले भक्त मुझ को ही प्राप्त होते हैं। (इस लिए मेरे भक्तों का पुनरजन्म नहीं होता।).

भगवान - मेरा पूजन करने वाला भगत जन्म मरण से, दुःखों पापों से छूट जाएगा। जो देवताओं को पूजेगा उसको नाशवन्त पदार्थ मिलेगा - उस लोक में जाएगा। पितर को पूजेगा, उसमें जाएगा पर मेरे में समायेगा नहीं। पर जिसे मेरे मे समाने की इच्छा है उसे जन्म मरण नहीं मिलेगा। मेरे में माना मुझ आत्मा में। इधर बोलते हैं पूजा भक्ति दान छुड़ाते हैं - तो मुक्ति के लिए। जैसे राजा भरत ने हिरणी के मोह में दो जन्म लिए। तुमको मालूम पड़े कि मेरा कर्म खाते मे नहीं है मैं तो निजी आत्मा हूँ निजी सत हूँ। भ० देखेगा कि तुम्हारे खाते में कोई कर्म है? इसको सम्भाल करे कि कर्ता बन कर कोई कर्म न करे। न दान न दया न मोह में जाए। दया धर्म का मूल है ... । मैंने दया की तो इधर लकीर पड़ेगी। इधर लकीर न आए कि कुछ किया। उसकी श्रद्धा से हुआ। जैसे बदकर्म का फल मिलता है वैसे सत्कर्म का भी मिलेगा। मैं कुछ करने वाला नहीं हूँ। मेरे से तुमको सुख मिले आनन्द मिले पर मैं शान्त पद मे हूँ। बात करते खाते शान्त में हूँ क्यों कि अंतःकरण नहीं है तो हिले कैसे? मन बुद्धि चित्त अहंकार नहीं है। किसी का पक्ष नहीं है मैं ही हूँ। मटका खाली करना। इधर गुरु सब खाली करे न। गुरु के सिवाए जो किया बेगाना है। जो

तुमने सुना खाया पिया बोला पर totally खाली होना है। सन्त करमण्डल ... । कमण्डल में छेद है, तुम्हारे में छेद है। खाते पीते सोते हैं तृप्त नहीं हैं। अहंकार का मोह का छेद लगा पड़ा है, तो कैसे भरें?

जो जीव सृष्टि में रहता है उसको भ्रम आता है कि मैंने इसको नहीं खिलाया तो ये बात समझ आई। जो ईश्वर सृष्टि में रहता है वह कहता है मरा कौन, बचा कौन। समझू आदमी न मरे का शोक करता है न जीते का। भ० ने चोला धारण किया। आप साल में दो दिन खिलाएगा, बाकी 12 महीना कौन खिलाएगा?

= भगवान सरल में बताता है कि तू जैसा भाव जगाए वैसा ही फल पाए। जहाँ भी मेरी interest है उसी को प्राप्त होते हैं। देवी देवता का अर्थ क्या है? वो सूक्ष्म शरीर है - जैसे अग्नि देवता, जल देवता, वायु देवता - जिस २ देवता की पूजा करेगा, उस २ को प्राप्त होगा। तू वृक्ष को ज्यास्ती पूजेगा तो वृक्ष बनेगा। भ० ऐसा चालाक है कि हमको वासना में डालेगा। लगातार चिन्तन किया तो तुम्हारा संग उसके है। मनुष्य लगातार चिन्तन करता है यही बड़ी तकलीफ है। इतने देवता हैं थोड़ी। कल्पना से बनाया हुआ है। नि० को छोड़ कर वृथा जन्म गंवाया। तुम अपने से तो पूछो नि० को छोड़ कर तुम्हारा मन इसमें उसमें, घोड़े गधे में गया क्यों? तुम बोलेंगे यह झोंपड़ी में कैसे रहता होगा तो भ० वहीं बैठा देगा। अन्त समय में जहाँ वासना होगा वहीं जन्म होगा। तुम खुश होते हैं यह मेरे को याद आया इसलिए धर्मी पुस्तक है जो मनुष्य टाइम पास करे। अन्तकाल जो स्त्री सुमिरे वेश्या जन बल २ उतरे

" " " पुत्र " सूकर " "
" " " मंदिर " प्रेत " "
" " " माया " सर्प " "

मतलब बताते हैं जो याद होगा वो ही मिलेगा। अन्तकाल जो नारायण सुमिरे ऐसी चिन्ता में जो मरे भगत त्रिलोचन नारायण समाय। जनम

१.अध्याय २३,२४,२५ (c) Cont.

मरण से रहित हो जाए।

भ० ने जो माया बनाई है तो मनुष्य देखो परीक्षा दे कर आता है या कहीं भी अटक जाता है।

९ अध्याय -

२६ श्लोक - जो भक्त पत्र पुष्प फल जल आदि (यथा साध्य प्राप्त वस्तु) को भक्ति पूर्वक मेरे अर्पण करता है, उस मेरे में तल्लीन भक्त के द्वारा भक्ति पूर्वक अर्पण किया हुआ वह (पत्र -पुष्प आदि में सगुण रूप से प्रकट होकर) प्रीति सहित खाता हूँ।

भगवान - कोई तो भोग चढ़ाता होगा, भोग चढ़ा के पीछे खाता होगा तो उसका मैं अंगीकार करता हूँ। पत्र है देह, पुष्प है मन, फल है सत कर्मों का फल, जल है प्रभु प्रेम के आँसू जो अर्पण करता है सच्चा भक्त तो भ० उसका अंगीकार करता है।

9 अध्याय

27 श्लोक - हे कुन्ती पुत्र! तू जो कर्म करता है, जो खाता है, जो हवन करता है, जो दान देता है और जो तप करता है वह सब मेरे अर्पण कर।

भगवान - वो कहता है खाना भी मेरे को अर्पण कर। घर में सारा दिन यज्ञ ही तो होता है। इसने पकाया या इसने पकाया, इसने खाया या उसने खाया - सब यज्ञ ही होता है। खाना जठराग्नि को देते हैं। वो खुद निराहारी हैं पर इसको अर्पण करते हैं हवन करते हैं।

अलौकिक शक्ति आत्मा मे है। ज्ञानी की शक्ति है ज्ञानी की हर क्रिया परिच्छा से होती है। यह भी बोलते हैं कि भूख और प्यास प्राणों का धर्म है तो इसको देना पड़ता है।

= वो तो सन्यासी होगा जो भ० को सब अर्पण कर के खुद खाली हो जाएगा। सन्यास ये है जो भी उससे खाली कर्म होगा वो भ० के निमित्त करेगा।

9 अध्याय

28 श्लोक - इस प्रकार मेरे अर्पण करने से जिनसे कर्मबन्धन होता है ऐसे शुभ और अशुभ सब कर्मों के फल से तू मुक्त हो जाएगा। ऐसे (सन्यास योग युक्त) अपने सहित सब कुछ मेरे अर्पण करने वाला और सब से मुक्त हुआ तू मेरे को प्राप्त हो जाएगा।

भगवान - वो तो सन्यासी होगा जो सब भ० के अर्पण कर के खुद खाली हो जाएगा। सन्यास यह है जो भी उससे अच्छा कर्म होगा वह भ० के निमित्त करेगा, अपने निमित्त नहीं। इसमें खास साव-धानी है तो बन के करेगा तो फल इसको मिलेगा। पर जो कर्म सामने आया हो गया - ईश्वर इच्छा से हो गया - वो सन्यासी हुआ। हम घर में रह कर भी सब कर्मों के फल का नाश करते हैं - यह है सन्यास।

कितना भी कुछ दें अपनी possession भी, अपना घर भी दान करें sign कर के देदें पर इसको याद न रहे कि मैंने घर दे दिया - यह सच्चा सन्यास है। तुम पहले सन्यास चाहते थे तो मैं सन्यास लेते तो अच्छा - अभी घर में इतना सन्यास होता है - जो किसी में आँख नहीं जाती है।

९ अध्याय – २९,३०

२९ श्लोक – मैं सम्पूर्ण प्राणियों में समान हूँ। उन प्राणियों में न तो कोई मेरा द्वेषी है और न कोई प्रिय है। परन्तु जो भक्तिपूर्वक मेरा भजन करते हैं वो मेरे में और मैं उनमें हूँ।

३० श्लोक – अगर कोई दुराचारी से दुराचारी भी अनन्य भाव से मेरा भजन करता है तो उसको साधु ही मानना चाहिए। कारण कि उसने निश्चय बहुत अच्छी तरह से कर लिया है।

भगवान – समान दृष्टि – सम भावना। ज्ञानी आत्मा में रहता है, देह में नहीं आता। भ० का भजन करना अच्छा है या माया इकट्ठी करनी है? दुनिया के धन से गरीब है। भ० के धन से साहुकार है पर ऐसा नहीं समझते हैं क्योंकि उनको हालत हालत लगती है, दुःख सुख लगता है – तुम जगत के आदमी हैं। बेअन्त का अन्त पाना – भ० बेअन्त है उसे पाना है। अभी हाज़िर नाज़िर भ० दिखता है घट२ वासी। सब पूछते हैं इनको भ० क्यों बोलते हैं? पर भ० ही तो है। हम हैं कहाँ? जभी देह का मौत होता है तो भ० प्रकट होता है। कोई भी सच्ची बात नहीं बोलता है – शास्त्र पढ़ के बोलता है पर मैं अपनी बात करता हूँ। तू भी जभी नि० खुद है तो तुम्हारी वाणी भी ऐसी निकलेगी जैसे कुंए से पानी। तुम अपनी प्रतीति कराएगा। अपनी प्रतीति – भ० है मैं नहीं। जिसके अन्दर विश्वास प्रभु आया तत्वबोध तिस मन प्रगटाया। अपने में प्रभु पने का विश्वास – मेरे में नहीं। बाहर देखेगा तो चम दृष्टि में आएगा। अलग भ० देखा तो भ्रम में आएगा। सुबह से रात तक ऐसा बोलो भ० ही है मैं हूँ कहाँ। तो कौन पकड़ेगा? अज्ञान के शब्द बोलेगा तो पकड़ा जाएगा। सत की वाणी में कोई नहीं पकड़ेगा। सब को सत्संग सुन कर खुशी होती है। सत्संग की महिमा बड़ी है। कोई भी यज्ञ करो, हौं मैं का रोग नहीं जाता पर इस ज्ञान यज्ञ से हौं मैं का रोग चला जाता है। सम दृष्टि रखो चोर भी साधु हो जाता है। भ० नज़र आएगा – कुत्ते की बुद्धि नहीं। जिसके Possession में ज्ञान है तो चोर कौन सा आएगा?

अद्वैत की वाणी चलाने से सब तृप्त होंगे। हमारे से

९ अध्याय

३१ श्लोक - वह शीघ्र ही धर्मात्मा हो जाता है और सदा रहने वाली परम शान्ति को प्राप्त होता है। हे अर्जुन! तू निश्चयपूर्वक सत्य जान कि मेरा भक्त नष्ट नहीं होता।

भगवान - जिसका मन भगवान में है और वो भक्त है तो वो नष्ट कैसे होगा? जो टोटल वृत्ति भ० में होगी, लगातार मन भ० में होगा तो वह नष्ट कैसे होगा? अपने को देखो भगत होने के लायक हूँ? कहने से नहीं पर रहनी, करनी, सहनी सब भगवान के निमित्त है या किस के निमित्त है? अपने से पूछें भगत है या नहीं।

9 अदयाय - 32

32 श्लोक - हे अर्जुन ! स्त्री, वैश्य, शूद्र तथा पाप योनि जो कोई भी हों, वे भी मेरी शरण हो कर परम गति को ही प्राप्त होते हैं।

प्रेमी - भ० स्त्री को नीच योनि क्यों कहा है?
भगवान - स्त्री को नीच योनि कहते हैं क्योंकि किसी न किसी आधार में रहती है। वो ऐसी मेरी शरण लेवे जो आदमी का आदमी हो जावे। तुम अभी तक स्त्री है मर्द का मर्द कब होगा? मेरे को भी इनाम देने दो कि तू मर्द का मर्द है। तुम कितना भी शुद्र होवे पर त्याग भावना अगर नहीं है तो उसे कैसे दिखाए की स्त्री मर्द का मर्द है। मर्द कमाता भी नहीं है तो भी order करता है। मार देता है स्त्री को कि खाना खिलाओ। तो उम्र भर बेचारी खिलाती रहेगी और वो मर्द सोता रहता है। हम लोग सारी उम्र किसको भी पापी देखेंगे तो हम ही अपना कर्म बनाएंगे, भावी बनाएंगे। हम उन पर taunt करेंगे तो हमारी भावी बनेगी। सारा दिन संत वैश्या देखता है और वैश्या सारा दिन संत को देखती थी। यह ज्ञान अधूरा है।

जो इस जन्म में पुरुष स्त्री पर राज्य करेगा तो वो अगले जन्म में चाहे जानवर बने या मनुष्य स्त्री पुरुष बन कर तुम्हारे ऊपर राज्य करेगी। इसीलिए तुम इसी जन्म में अपना पाप मिटाओ। स्त्री को बोलो हाथ जोड़ कर तू स्त्री नहीं है परमात्मा है। तुम स्त्री की कमजोरी का फायदा लेते हैं। सब संतो को भी पैसा दे कर मर्द लोग दिखाते हैं कि तुम स्त्री को सिखाओ सीता बने। पर खुद राम नहीं बनते हैं। सपने में भी पर-स्त्री नहीं देखें, अगर सीता चली जाए तो ?

9 अध्याय

34 श्लोक – मुझ में मन वाला हो, मेरा भक्त बन, मेरा पूजन करने वाला हो, मुझको प्रणाम कर। इस प्रकार आत्मा को मुझ में नियुक्त कर के मेरे परायण हो कर तू मुझ को ही प्राप्त होगा।

भगवान – जैसे पानी के गिलास को दूसरे पानी के गिलास में डालो तो उसमें नियुक्त हो जाएगा। ऐसे भगवान को अपने में मिला देना है तभी उसका ख्याल, मेरी will मिल के एक हो जाती है। will दोनो एक हो गए।